डाक पंजीयन नं. 99/2021–23

E-mail:-aadhuniksamachar2014@gmail.com website:www.aadhuniksamachar.com

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

PG,5

आधुनिक समाचार

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

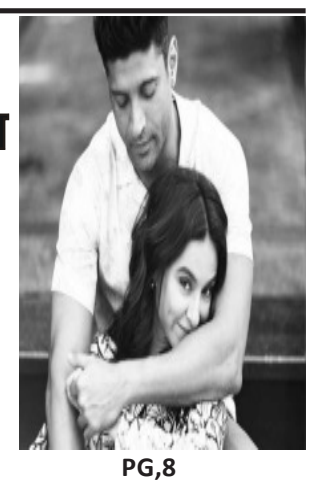

PG,8

सिनेमाःशिवानी दांडेकर जो बनने जा रही हैं जावेद अख्तर की बहू

वर्ष -07 अंक -344 | प्रयागराज, शनिवार 19 फरवरी, 2022 | पृष्ठ- 8 | मूल्य : 2.00 रूपये

संक्षिप्त समाचार

कोरोना के मामलों में 4800 से ज्यादा की गिरावट, 492 लोगों की मौत, 66254 हुए रिकवर

नई दिल्ली। देश में कोरोना संक्रमण की स्थिति को लेकर स्वास्थ्य मंत्रालय ने अपडेट जारी किया है। मंत्रालय की रिपोर्ट के मुताबिक, देश में आज कोरोना के 25,920 नए मामले सामने आए हैं। इसके अलावा बीते 24 घंटे में कोरोना से 492 लोगों की मौत भी हुई है। वहीं, 66,254 मरीज रिकवर हुए हैं देश में कल यानी गुरुवार के मुकाबले आज कोरोना के मामलों में कमी देखी गई है। गुरुवार को देश में कोरोना के 30,757 नए मरीज मिले थे जबकि आज 4837 कम मामले सामने आए हैं। देश में अब तक कोरोना के कारण 5,10,905 लोगों की जान जा चुकी है। एक्टिव मामले घटकर 2,92,092 हो गए हैं जबकि डेली पाजिटिविटी दर भी घटकर 2.07 हो गई है। कुल 4,19,77,238 कोरोना से रिकवर हो चुके हैं।

युवा उद्यमी समस्याओं का समाधान निकालने के साथ ही किसानों को बना रहे सशक्त

मूल रूप से पटना के निवासी अनुपम (बीटेक) ने इंडियन स्कूल आफ बिजनेस, हैदराबाद से एमबीए किया है। वहीं से कैंपस प्लेसमेंट के जरिये उनकी नियुक्ति आइसीआइसीआइ लोंबार्ड में हो गई। कुछ वर्ष अहम जिम्मेदारियां निभाने के बाद वह बजाज एलायंज में चले गए। लेकिन इन वर्षों में देश के दक्षिणी एवं मध्य हिस्सों में किसानों व ग्रामीण समुदाय के साथ काम करने के पश्चात उन्हें लगा कि जिस तरह की बीमा सुरक्षा ग्रामीणों को मिलनी चाहिए, वैसी उन्हें नहीं मिल पा रही है। विश्वास और जागरूकता दोनों स्तरों पर एक कमी थी। बताते हैं अनुपम, 'हमने पाया कि शहरी इलाकों में तो ब्रोकर्स की बड़ी संख्या थी, जबकि गांवों में ऐसा नहीं था। इससे लोग इंश्योरेंस प्रोडक्ट पर जल्द विश्वास नहीं कर पाते थे। इस तरह नवंबर 2020 में हमने 'डिजिसेफ' कंपनी की परिकल्पना की। उसे रजिस्टर करवाया और अक्टूबर 2021 में उसका बाकायदा आपरेशन शुरू हो सका।

प्रधानमंत्री आज दो नई रेल लाइनें देश को करेंगे समर्पित, कल्याण से सीएसटी तक यात्रा होगी आसान

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी शुक्रवार को वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिए महाराष्ट्र के ठाणे और दिवा को जोड़ने वाली दो अतिरिक्त रेलवे लाइन को राष्ट्र को समर्पित करेंगे। प्रधानमंत्री कार्यालय ने यह जानकारी गुरुवार को ही दे दी। इसके अनुसार प्रधानमंत्री मोदी मुंबई उपनगरीय रेलवे की दो उपनगरीय ट्रेनों को भी झंडी दिखाकर रवाना करेंगे। इसके बाद इस अवसर पर उनका संबोधन भी होगा। बयान में कहा गया कि मोदी 18 फरवरी को शाम साढ़े चार बजे ठाणे और दिवा को जोड़ने वाली दो अतिरिक्त रेलवे लाइन को वीडियो कांफ्रेंस के माध्यम से राष्ट्र को समर्पित करेंगे। जारी किए गए बयान के अनुसार, कल्याण मध्य रेलवे का मुख्य जंक्शन है। देश के उत्तरी और दक्षिणी भाग से आने वाला यातायात कल्याण में जुड़ता है और छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस (सीएसटीएम) की ओर चला जाता

है। कल्याण और सीएसटीएम के बीच चार रेल मार्गों में से दो ट्रैक धीमी लोकल ट्रेनों के लिए और दो ट्रैक फास्ट लोकल, मेल एक्सप्रेस और मालगाडियों के लिए इस्तेमाल किए गए थे। उपनगरीय और लंबी दूरी की ट्रेनों को अलग करने के लिए दो अतिरिक्त लाइन की योजना बनाई गई थी। उल्लेखनीय है कि ठाणे और दिवा को जोड़ने वाली दो अतिरिक्त रेल लाइन लगभग 620 करोड़ रुपये की लागत से बनाई गई है और इसमें 1.4 किलोमीटर लंबा रेल फ्लाईओवर, तीन प्रमुख पुल, 21 छोटे पुल शामिल हैं। ये लाइन मुंबई में उपनगरीय रेलगाडियों के यातायात के साथ लंबी दूरी की रेलगाडियों के यातायात में रुकावट को काफी हद तक दूर कर देंगी। इससे शहर में 36 नयी उपनगरीय ट्रेनें भी चलाई जा सकेंगी।

हिजाब विवाद को जानबूझकर हवा दे रही कांग्रेस, नकवी ने कांग्रेस पर बोला तीखा हमला

नई दिल्ली। हिजाब विवाद पर केंद्रीय मंत्री मुख्तार अब्बास नकवी ने गुरुवार को कांग्रेस पार्टी

पर तीखा हमला बोला है। नकवी ने आरोप लगाते हुए कहा कि कांग्रेस ने हिजाब मामले पर विवाद को जानबूझकर हवा देने का काम किया है और गलत सूचना फैलाने के लिए एक अभियान भी शुरू किया है। उन्होंने आरोप लगाया कि कांग्रेस हिजाब के सांप्रदायिक हथियार से भारत की संस्कृति और संविधान पर हमला कर रही है। नकवी ने कहा कि हिजाब विवाद को हवा देने का काम करने वाली कांग्रेस पार्टी ने 'वर्दी' पर गलत सूचना फैलाने का अभियान शुरू किया है। उन्होंने आगे कहा कि संगठनों को अपने शासित राज्यों में प्रदर्शन करने की अनुमति दी जा रही है। उन्होंने कांग्रेस से सवाल पूछते हुए कहा कि क्या देश में हिजाब बैन है। उन्होंने कहा कि लोग सड़क पर हिजाब पहनकर घूमते हैं, हिजाब पहनकर बाजार में घूमते हैं और हिजाब पहनकर कहीं भी जा सकते हैं, फिर भी हंगामा मचाया जा रहा है। भारत उन देशों की तरह नहीं है जहां हिजाब पर पूरी तरह प्रतिबंध है। नकवी ने जोर देकर कहा कि ऐसे संस्थान हैं, जिनका अपना ड्रेस कोड और मर्यादा है। यदि आपके पास संवैधानिक अधिकार हैं, तो कुछ संवैधानिक कर्तव्य भी हैं।

ट्रूडो ने कहा-प्रदर्शन समाप्त होना चाहिए, ट्रक चालक कार्रवाई को तैयार

ओटावा। कनाडा के ओटावा में गुरुवार को बड़ी संख्या में पुलिस बल को तैनात कर दिया गया। इसके बाद देश में कोविड पाबंदियों के खिलाफ करीब तीन सप्ताह से सड़कों पर विरोध प्रदर्शन कर रहे ट्रक चालकों को अपने खिलाफ बल प्रयोग की आशंका सताने लगी है। राजधानी में कर्मचारी गुरुवार को लगातार दूसरे दिन संसद के बाहर बाड़ लगाते दिखे। अधिकारियों ने प्रदर्शनकारियों को वहां से हटने की चेतावनी भी दी। प्रभावित क्षेत्र में बसों में भर-भर कर पुलिसकर्मियों को लाया जा रहा है। संसद में प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो ने कहा कि अब समय आ गया है कि ऐसी गैरकानूनी और खतरनाक गतिविधियों पर रोक लगाई जाए। बताते चलें कि संसद से कुछ ही दूरी पर 300 से ज्यादा ट्रक खड़े हैं। ट्रूडो ने कहा, वे हमारी अर्थव्यवस्था और हमारे व्यापार साझेदारों के लिए खतरा हैं। वे सार्वजनिक सुरक्षा के लिए खतरा हैं। इस बीच, 'फ्रीडम कान्वाय' में शामिल प्रदर्शनकारियों में से कई ने इस चेतावनी पर तिरस्कार भरी प्रतिक्रिया दी है। उनके नेताओं में से एक पैट किंग ने कहा, मैं यहां जमकर बैठने के लिए तैयार हूं। मैं देखूंगा कि वे कैसे मेरे ऊपर पेपर स्प्रे छिड़क रहे है। प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो ने पहले भी सभी प्रदर्शनकारियों से घर वापस लौटने का आग्रह किया था और कहा था कि इस गैरकानूनी गतिविधि को समाप्त होना चाहिए और यह समाप्त होकर रहेगा। हमें उम्मीद है कि ये लोग घर जाने का फैसला करेंगे नहीं तो पुलिस इसमें हस्तक्षेप करेगी। बता दें कि पिछले कई दिनों से कनाडा में कोविड वैक्सीन को अनिवार्य बनाए जाने और लाकडाउन लगाए जाने को लेकर प्रदर्शन जारी है। सोमवार को प्रधानमंत्री ट्रूडो ने कनाडा के इतिहास में पहली बार आपातकाल घोषित किया है। ओटावा में सबसे बड़े विरोध प्रदर्शन के अलावा, मैनिटोबा में दो सप्ताह से प्रदर्शन चल रहा है।

कर्नाटक विधानसभा में ही कांग्रेस विधायकों ने लगाया बिस्तर, ईश्वरप्पा के इस्तीफे की हो रही मांग

बेंगलुरू। कर्नाटक विधानसभा में कांग्रेस के विधायकों ने गुरुवार देर रात तक काफी विरोध किया और राज्य मंत्री केएस ईश्वरप्पा के भगवा ध्वज वाले बयान को लेकर इस्तीफा देने की मांग की।

कर्नाटक के ग्रामीण विकास एवं पंचायत राज मंत्री केएस ईश्वरप्पा को बर्खास्त करने और उन पर देशद्रोह का मामला दर्ज करने की मांग करने वाले कांग्रेस विधायक आज रात विधानसभा में ही गुजारेंगे। इसके लिए विधायकों ने अपने बिस्तर भी विधानसभा की जमीन पर लगा लिया और लेट गए। कांग्रेस के विरोध प्रदर्शन का आज दूसरा दिन है। कांग्रेस पार्टी के सदस्यों सदन में ही जमे रहे। उनका हंगामा और विरोध प्रदर्शन जारी रहा। इस बीच विधानसभा अध्यक्ष विश्वेश्वर हेगड़े कागेरी और पूर्व मुख्यमंत्री बीएस येदियुरप्पा ने विधानसभा परिसर में नेता प्रतिपक्ष सिद्धारमैया से मुलाकात की। हाल में ही ईश्वरप्पा ने दावा किया था कि भविष्य में भगवा ध्वज ही राष्ट्रीय ध्वज बन सकता है। विपक्षी पार्टी के विधायकों के हंगामे के कारण गुरुवार दिनभर विधानसभा स्थगित रही। कांग्रेस विधायक सदन में ही रुके रहे। विधायकों के हंगामे के कारण दूसरे दिन भी दोनों सदनों की कार्यवाही ठप रही। मुख्यमंत्री बसवराज बोम्मई, विधानसभा अध्यक्ष विश्वेश्वर हेगड़े कागेरी और पूर्व मुख्यमंत्री बीएस येदियुरप्पा ने बाद में विधानसभा परिसर में नेता प्रतिपक्ष और कांग्रेस विधायक दल के नेता सिद्धारमैया से मुलाकात कर बातचीत की लेकिन कोई सफलता नहीं मिली। येदियुरप्पा ने कहा, 'हमने करीब दो घंटे तक विपक्षी पार्टी के नेताओं को समझाने की कोशिश की।

सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल ब्रह्मोस ने पश्चिमी समुद्र तट पर दिखाया दमखम

विशाखापत्तनम। सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल ब्रह्मोस का आज एक बार फिर सफल परीक्षण किया गया है। भारतीय नौसेना के युद्धपोत विशाखापत्तनम ने पश्चिमी समुद्र तट से ब्रह्मोस क्रूज

मिसाइल का परीक्षण किया है। गौरतलब है कि 21 फरवरी को राष्ट्रपति की फ्लीट रिव्यू में हिस्सा लेने के लिए युद्धपोत को विशाखापत्तनम लाया गया है। भारतीय नौसेना के युद्धपोत विशाखापत्तनम ने पश्चिमी समुद्र तट से ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज़ मिसाइल का परीक्षण किया। 21 फरवरी को राष्ट्रपति की फ्लीट रिव्यू में हिस्सा लेने के लिए युद्धपोत को विशाखापत्तनम लाया गया है। बता दें कि 21 फरवरी को विशाखापत्तनम में नौसेना द्वारा आयोजित की जाने वाली राष्ट्रपति की फ्लीट रिव्यू में भारत की स्वतंत्रता के 75वें वर्ष के उपलक्ष्य में कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा और इसके बाद द्विवार्षिक बहुपक्षीय नौसैन्य अभ्यास 'मिलन' होगा। गौरतलब है कि भारत द्वारा आयोजित मिलन कार्यक्रम की शुरुआत 1995 में अंडमान के निकोबार द्वीप समूह में चार तटवर्ती नौसेनाओं की भागीदारी के साथ की गई थी। मिलन 2022 इस आयोजन का 11वां संस्करण है और इसमें 45 से अधिक देशों को भाग लेने के लिए निमंत्रण दिया गया है और बड़ी संख्या में मित्र देशों के प्रतिनिधिमंडलों और युद्धपोतों के भाग लेने की उम्मीद जताई जा रही है। जानकारी के मुताबिक इस मिसाइल में 400 किमी. तक लक्ष्य भेद करने की क्षमता है।

छह अफ्रीकी देशों में शुरू होगा वैक्सीन का प्रोडक्शन

जेनेवा। विश्व स्वास्थ्य संगठन के डायरेक्टर जनरल डा. टेड्रोस अधनम घेब्रेसस ने गुरुवार को एलान किया कि मिस्र केन्या

नाइजीरिया सेनेगल दक्षिण अफ्रीका और ट्यूनिशिया में वैक्सीन का उत्पादन शुरू होगा। यह एलान यूरोपीयन काउंसिल, फ्रांस, दक्षिण अफ्रीका की मेजबानी में आयोजित एक सेरेमनी में किया गया। इस दौरान फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों, दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति सिरिल रामाफोसा और यूरोपीयन काउंसिल के अध्यक्ष चार्ल्स मिशेल भी मौजूद थे। यूरोपीय परिषद के अध्यक्ष ने ऐसे माहौल के निर्माण की जरूरत पर जोर दिया जहां एक ही काम के लिए हर वैज्ञानिक, हेल्थ वर्कर और सरकार एक साथ मिलकर काम करे। प्रमुख ने कहा, 'कोरोना महामारी के दौरान यह पता चला कि वैश्विक सप्लाई के लिए कुछ कंपनियों पर आश्रित होना सीमित हो रहा है और यह खतरनाक है। यह एक पहल है जिससे हमें अपने वैक्सीन बनाने की राह खुलेगी। हाल में ही दक्षिण अफ्रीका के वैक्सीन निर्माण करने वाली संस्थाओं का जायजा के डायरेक्टर जनरल टेड्रोस अधनम घेब्रेसस व मुख्य वैज्ञानिक सौम्या स्वामीनाथन ने लिया है। इस दौरान स्वामीनाथन अफ्रीका में धीमी गति से हो रही कोरोना वैक्सीनेशन को लेकर चिंता जताई और कहा कि हमें ध्यान रखना होगा कि अफ्रीकी देशों की 85 फीसद आबादी को अभी भी कोरोना वैक?सीन का एक भी डोज नहीं लगा है और यही कोरोना के नए वैरिएंट के फैलने में जिम्मेदार साबित हो सकता है। उन्होंने आगे कहा, 'कोरोना वायरस की उत्पत्ति व इसके कई म्यूटेशन यानि रूप को बदलते हुए हम सबने देखा है इसलिए हम इससे अच्छी तरह अवगत है कि अभी खतरा टला नहीं है बल्कि नए वैरिएंट आने बाकी है। स्वामीनाथन ने यह भी कहा कि महामारी खत्म होने की अफवाहों पर भरोसा करके सतर्क रहना न छोड़ें। कोरोना वायरस का नया वैरिएंट कभी भी, कहीं भी पैदा हो सकता है और हम एक फिर से उसी स्थिति में लौट सकते है।

अमेरिका की संवेदनशील रक्षा सूचना में रूसी जासूसों की सेंध, सुरक्षा एजेंसियों का दावा छह महीनों से अधिक सक्रिय हैं हैकर

सैन फ्रांसिस्को । अमेरिकी सुरक्षा एजेंसियों ने दावा किया है कि कम से कम दो वर्षो से रूस समर्थित हैकर रक्षा ठेकेदारों को

निशाना बना रहे हैं। उन्होंने हथियार, विमान डिजाइन व युद्ध संचार प्रणाली से जुड़ी संवेदनशील सूचनाएं हासिल कर ली हैं। साइबर सुरक्षा एवं बुनियादी ढांचा एजेंसी (सीआइएसए), संघीय जांच ब्यूरो (एफबीआइ) व राष्ट्रीय सुरक्षा एजेंसी (एनएसए) के अनुसार, रूसी हैकरों ने बड़े और छोटे दोनों तरह के अनुमति प्राप्त रक्षा ठेकेदारों (सीडीसी) तथा सह ठेकेदारों को साइबर सुरक्षा प्रोटोकाल व संसाधनों के अनुरूप निशाना बनाया है। एजेंसियों ने बुधवार की देर रात जारी एक बयान में कहा है कि ये सीडीसी अमेरिकी रक्षा विभाग के ठेकों में मदद करते हैं। सीआइएसए के अनुसार, 'रूस प्रायोजित हैकर अमेरिकी सीडीसी को जनवरी 2020 से मौजूदा माह तक निशाना बनाते रहे हैं। ये हैकर सीडीसी नेटवर्क में सेंध लगाकर अमेरिका के रक्षा एवं खुफिया कार्यक्रमों तथा क्षमताओं के बारे में जानकारी हासिल कर रहे हैं।' जिन प्रतिष्ठानों की सूचनाओं में सेंधमारी की गई है, उनमें सीडीसी की समर्थन वाली अमेरिकी सेना, वायुसेना, नौसेना, अंतरिक्ष बल, रक्षा विभाग व खुफिया कार्यक्रम शामिल हैं। इस घुसपैठ के जरिये हैकरों ने सीडीसी के स्वामित्व वाले गैर वर्गीकृत आंकड़े और निर्यात से संबंधित सूचनाएं हासिल कर ली हैं। एजेंसियों ने चेताया है कि रूसी हैकरों ने सेंधमारी के जरिये हथियार विकसित करने वाले अमेरिकी प्लेटफार्म व उनकी तैनाती संबंधी टाइमलाइन, संचार ढांचों से संबंधित योजनाओं व अमेरिकी सरकार तथा सेना द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली विशेष प्रौद्योगिकी के बारे में जानकारी हासिल कर ली है। हालांकि, कुछ ठेकों से जुड़ी जानकारियां सार्वजनिक पटल पर उपलब्ध हैं, इसके बावजूद उनके विकास कार्यक्रम व आंतरिक संवाद संवेदनशील होते हैं। ऐसे कई उदाहरण सामने आए हैं, जिनसे प्रमाणित होता है कि रूसी हैकर पिछले कम से कम छह महीने से अधिक सक्रिय हैं।

यूक्रेन में रूस के हमले की अमेरिका ने की निंदा, बताया मिंस्क समझौते का उल्लंघन

कीव। कीव में अमेरिकी दूतावास ने रूस द्वारा किए गए गोलाबारी की निंदा की और इसे मिंस्क समझौते का उल्लंघन बताया। दूतावास के अनुसार यूक्रेन नियंत्रित डोनबास के इलाके में स्थित स्टैनित्सिया लुहान्सका में

रूस द्वारा किए गए हमले में एक किंडरगार्टन क्षतिग्रस्त हो गया और दो टीचर जख्मी हो गए। वहां का पावर सप्लाई भी प्रभावित हुआ है। यूक्रेन की सेना व रूसी समर्थक विद्रोहियों के बीच संघर्ष को खत्म करने के मकसद से साल 2014 और 2015 में बेलारूस की राजधानी मिंस्क में समझौता हुआ। 2014 की डील को मिंस्क समझौताए और 2015 की डील को मिंस्क समझौता कहा गया। बता दें कि ये दोनों समझौते कभी भी पूरी तरह लागू नहीं हुए लेकिन यूरोपीय देश इसे बहाल करने की पूरी कोशिश में जुटे रहे ताकि शांति बरकरार रहे। 2014 में यूक्रेन से रूस के समर्थक राष्ट्रपति विक्टर यानुकोविच को विरोध के बाद देश छोड़ना पड़ा और इसके बाद रूसी समर्थक विद्रोहियों ने यूक्रेन पर हमला बोल दिया और 18 मार्च 2014 को इसने क्रीमिया को अपने देश में मिला लिया। इसके बाद भी दोनों देशों के बीच जंग जारी रही जिसमें बीच बचाव के लिए यूरोपीय देश आए और 2014 के सितंबर में 12 मुद्दों पर सहमति के साथ मिंस्क में समझौता हुआ जिसमें कैदियों की रिहाई और हथियारों की वापसी भी शामिल थी। दोनों देश इस समझौते के साथ अधिक दिन तक नहीं रहे और इसका उल्लंघन कर दिया। साल 2015 की फरवरी में 13 मुद्दों वाले समझौते पर हस्ताक्षर किए गए। इनमें युद्ध विराम, हथियारों की वापसी, यूक्रेन के कानून के अनुसार डोनेत्सक व लुहंस्क में अंतरिम सरकार का गठन होगा। लड़ाकों को माफी मिलेगी, बंधकों व कैदियों का आदान प्रदान होगा, दोनों देश एकदूसरे की मानवीय सहायता करेंगे, सामाजिक आर्थिक संबंधों को बहाल किया जाएगा, विदेशी सैनिकों व हथियारों की वापसी होगी, सुधारा जाएगा यूक्रेन का संविधान, साथ मिलकर काम करेंगे दोनों देश और ओएससीइ के प्रतिनिधि। लेकिन ये सब अब तक लागू नहीं हो पाया है।

इफको फूलपुर ठेका मजदूर संघ के नवनिर्वाचित पदाधिकारियों ने ली पद और गोपनीयता की शपथ

भाजपा को हराने के लिए मजदूर अधिकार बचाने के लि अभियान चलाने का निर्णय

(आधुनिक समाचार सेवा)
सरफराज अहमद

फुलपुर। शांतिपूर्ण लोकतांत्रिक तरीके से सरकार द्वारा तय कोविड दिशा निर्देश व चुनाव आचार संहिता का पालन करते हुए बीरकजी, फूलपुर स्थित कार्यालय पर इफको फूलपुर ठेका मजदूर संघ सम्बद्ध ऐक्टू के नवनिर्वाचित पदाधिकारीयो व कार्यकरणी सदस्यों को इफको फूलपुर ठेका मजदूर संघ के संस्थापक सदस्य कॉम अशफ़ाक अहमद ने पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई शपथ ग्रहण समारोह को सम्बोधित करते हुए ऐक्टू राष्ट्रीय सचिव डॉ कमल उसरी ने कहा कि आज से 22 वर्ष पहले जब ठेका मजदूरों ने अपने हक़ हकूक के लिए इफको फूलपुर ठेका मजदूर संघ का गठन किया था, तब से अब तक तमाम उतार चढ़ाव देखा है, संगठन हमेशा मजदूरों के हित में संघर्ष करता रहा है और करता रहेगा, आज की सरकारें वषी के संघर्ष और शहादत के बाद प्राप्त श्रमिक अधिकारों को छीन ले रही है, श्रमिक हितकारी 44 श्रमिक कानूनों को ख़त्म करके 4 श्रमिक कोड बनाकर पुनः मजदूरों को गुलामी की तरफ़ ठेला जाया जा रहा है, इसलिए मजदूर विरोधी वर्तमान

तानाशाही भाजपा सरकार के खिलाफ मजदूर सामुहिक रूप से चुनाव में हराने के लिए और मजदूरों के अधिकार बचाने के लिए अभियान चलाएंग इफको फूलपुर ठेका मजदूर संघ के अध्यक्ष कॉम जय प्रकाश प्रजापति व महामंत्री कॉम त्रिलोकी नाथ पटेल ने संयुक्त रूप से कहा कि हम लोग किसानों के संघर्ष की जीत से सीखते हुए गांव -गांव मजदूरों के बीच जाकर इस मजदूर विरोधी वर्तमान सरकार को उखाड़ फेकने के अभियान को मजबूत करेंगे क्योंकि वर्तमान सरकार ने ही सबसे ज्यादा नुकसान मेहनतकशो का ही किया है, इसलिए मजदूरों कर्मचारियों ने तय किया है कि इस भाजपाई सरकार को सत्ता से बाहर कर देना होग शपथ ग्रहण समारोह में मुख्य रूप से डॉ कमल उसरी, जय प्रकाश प्रजापति, त्रिभुवन नाथ यादव, त्रिलोकी नाथ पटेल, फूलचंद प्रजापति, मनोज़ कुमार, राजनाथ भारतीय सेकेंड, अमर सिंह, जगदीश कुमार, नान्हूदास, रामचंद्र सेकेंड, बंशीलाल, राजितराम, श्याम नरायन छोटू यादव, अशफ़ाक अहमद, संतलाल भगत, द्वारिका प्रसाद पटेल, वीरेन्द्र मिश्रा इत्यादि लोग उपस्थित रहे,

स्वर्गीय बाला सिंह की पुण्यतिथि में पर हुआ इनामी विराट कुश्ती दंगल

(आधुनिक समाचार सेवा)
शुभम मोदनवाल

सैदपुर। भीमापार स्थित भटकेश्वरनाथ महादेव मंदिर परिसर में बुधवार को बाला सिंह स्मारक

राज्य स्तरीय कुश्ती दंगल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।कई बड़ी कुश्तियां बराबरी पर छूटी। कुश्ती दंगल में दिल्ली, राजस्थान, नेपाल समेत देश के कोने-कोने से पहलवान आए हुए थे। सभी कुश्तियों पर दर्शक तालियां बजाकर पहलवानों का उत्साहवर्धन कर रहे थे। मौके पर विधायक सुबास पासी ने पहलवानों का हाथ मिलाकर व स्व बाला सिंह के चित्र पर पुष्प अर्पित कर किया। उन्होंने कहा कि कुश्ती हमारी संस्कृति से जुड़ा है। आयोजक प्रिंस सिंह ने बताया कि विराट दंगल बहुत ही पुराना होता हुआ चला आ रहा है इस दंगल का पूर्वांचल समय प्रदेश में चर्चा हमेशा होती रहती है

चारा काटने की मशीन से बच्चे का हाथ कटा

(आधुनिक समाचार सेवा)
सरफराज अहमद

फूलपुर। कोतवाली के रसूलपुर मैलहन गांव निवासी सज्जू प्रजापति के पुत्र मंजीत उम्र 8 वर्ष जो सायं बच्चों के साथ खेलते खेलते चारा काटने की मशीन पर जा पहुंचा। अचानक उसका एक हाथ फरसे (गढ़ासे) के मध्य आ गया। जिसके कारण कोहनी के पास से हाथ कटकर अलग हो गया। परिजन आनन-फानन अस्पताल ले गए। जहां हाथ जोड़ा नहीं जा सका। परंतु इलाज पट्टी करके मंजीत को वापस घर भेज दिया गया।

सीएचसी फूलपुर नई बिल्डिंग में रहता है अंधेरा

(आधुनिक समाचार सेवा)
सरफराज अहमद

.फूलपुर। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र फूलपुर की नई बिल्डिंग जो कोविड-19 के मरीजों तथा पीकू हेतु सुरक्षित की गई थी। अब उसमें पूर्व की भांति पुनः ओपीडी शुरू हो गई है। परंतु बृहस्पतिवार दोपहर महिला चिकित्सक कक्ष में घोर अंधेरा छाया रहा। गलियारे में मरीज भी अंधेरे में धक्का मुक्की करते रहे। अंधेरे का कारण ज्ञात नहीं हो सका पर इतना जरूर पता चला। कि विद्युत आपूर्ति नहीं है। तेल बचाने हेतु जरनेटर भी ठप है। कई घंटों तक घुप अंधेरे में मरीज देखने का क्या औचित्य है। अस्पताल स्टाफ नहीं बता पाए।

फ्लाई ओवर की मरम्मत का काम अधूरा छोड़कर भागी कार्यदाई संस्था

(आधुनिक समाचार सेवा)
सरफराज अहमद

फूलपुर । बीते सप्ताह भर से अधिक फ्लाई ओवर पर बारामती करने का कार्य ब्रिज कारपोरेशन

द्वारा कराया जा रहा था जिसमें बगल की जाली का कार्य अभी चल रहा है जबकि सड़क का पैचिंग कार्य आधा अधूरा करके कार्यदाई संस्था चलती बनी। फूलपुर नगर पंचायत के बुद्धिजीवी एवं नेतागण आंख मूंदे बैठे हैं तहसील साइड से चढ़ाई पर दो गड्ढे तथा शुक्ला नाढाल की ओर दो गड्ढे बीच में जगह जगह ठोकरो की लेवलिंग नहीं की गई कौन है जिम्मेदार लोक निर्माण खंड 3 या ब्रिज कारपोरेशन। बगल में तहसील जहां एसडीएम वह तहसीलदार बैठा करते है परंतु संज्ञान में नहीं लेते।

कोटे में चने की थैली में नमक मिलने पर काटा हंगामा

बारा (प्रयागराज) । तहसील मुख्यालय बारा खास में कोटेदार द्वारा दी गयी चने की थैली में नमक मिलने पर ग्रामीणों ने हंगामा कर दिया। शासन द्वारा निःशुल्क अनाज के साथ चना, रिफाइंड एवम नमक कोटेदार के माध्यम से ग्रामीणों को वितरित किया जा रहा है। जिसके तहत बारा खास में गुरुवार को मदरहा मजरे के ग्रामीण कोटे से गल्ला एवम चना लेने गए थे। ग्रामीणों ने आरोप लगाया कि कोटेदार द्वारा खुले थैली में चने के साथ सौ ग्राम नमक मिलाकर दिया जा रहा है एवम अनाज में भी घटतौली की जा रही है। उक्त घटना को लेकर ग्रामीण नायब तहसीलदार के कार्यालय में जाकर हंगामा करने लगे। हंगामा बढ़ता देख सम्बन्धित अधिकारी के कार्यवाई के आश्वासन पर ग्रामीण शांत हुए। इस मौके पर मदरहा के दर्जनों महिला व पुरुष उपस्थित रहे।

प्रयागराज मेजा -- समाजसेवी एस के मिश्रा के पिताजी के एकादशाह सरगबीरखोज में जूते समाज के लोग भारी जन सैलाब के साथ बड़े हर्षोल्लास से यस के मिश्रा ने महापात्र को विदाई में दिया हाथी घोड़ा गाय बैल गाड़ी सोना चांदी से मालामाल कर दिया महापात्र को महापात्र के लोगों में बड़ा उत्साह देखा गया एकादशाह सरगबीरखोज के कार्यक्रम के साथ में एस के मिश्रा ने पत्रकार बंधुओं को आमंत्रित कर समाज में संदेश दिया कि माता-पिता के मन की शांति के लिए कोई भी चीज दान करने में नहीं छूटनी चाहिए अपने सामर्थ्य के अनुसार बढ़ चढ़के महापात्र को खुश करके विदा करना चाहिए साथ में मीडिया के प्रेस वार्ता में यह भी कहा कि समाज के कार्य में बढ़-चढ़कर हिस्सेदारी रहेगी हमारे मेजा 84 महोत्सव के कार्यक्रम में मैं अपने आप को अहम सदस्य मानते हुए उपस्थित रहुगा

माघ मेला पुलिस का एक और सराहनीय कार्य

प्रयागराज। माघ मेला के संगम तट पर अपने परिवार के संग सनन करने आयी श्रीमती अन्नू मिश्रा पत्नी अतुल मिश्रा निवासी वरी सिरसा प्रयागराज की निवासी है। दिनांक 15.02.2022 को अन्नू मिश्रा का पैसों व कागजात से भरा पर्स जगदीश रैम्प थाना महावीर के आस पास कहीं गिर गया। काफी खोजबीन के बाद नहीं मिला, निराश होकर मिश्रा द्वारा थाना महावीर जी में अपना पर्स खो जाने की सूचना दी गई। महावीर थाना प्रभारी द्वारा ड्यूटी पर तैनात सभी कर्मचारीगणों व मेला कण्ट्रोल रूम को सूचित किया गया कि श्रीमती अन्नू मिश्रा का 05 हजार रुपये व पर्स कही खो गया है सूचना मिलने पर तत्काल सूचित करें। ड्यूटी के दौरान तैनात ट्रैफिक पुलिस के आरक्षी अजय कुमार को एक लावारिस पर्स जगदीश रैम्प पर मिला। मौके से थाना प्रभारी महावीर को ट्रैफिक आरक्षी द्वारा सूचित किया गया, आरक्षी द्वारा सूचना मिलने पर थाना प्रभारी द्वारा पर्स में पहचान पत्र के माध्यम से सम्बन्धित को सूचना दी गयी कि आपका पर्स रिजर्व पुलिस लाइन्स माघ मेला कार्यालय में रखा है आप आकर अपना पर्स ले जायें। श्रीमती अन्नू मिश्रा रिजर्व पुलिस लाइन्स पहुंचकर ट्रैफिक पुलिस के सिपाही अजय कुमार द्वारा 05 हजार रूपये व कागजात से भरा पर्स सम्बन्धित को पहचान कराकर वापस किया गया। मौके पर पैसा व पर्स पाकर श्रीमती अन्नू मिश्रा ने पुलिस के मानवीय कार्य की प्रसंशा की और आभार व्यक्त किया। पुलिस अधीक्षक माघ मेला डा0 राजीव नारायण मिश्र द्वारा पुलिस के इस सराहनीय कार्य की प्रसंशा की और आरक्षी अजय कुमार को प्रशस्ति पत्र प्रदान किया।

वैकल्पिक बारह दस्तावेज होंगे मतदान करने के आधार

(आधुनिक समाचार सेवा)
डॉ0रणजीत सिंह

प्रतापगढ़। उप जिला निर्वाचन अधिकारी सुनील कुमार शुक्ल ने बताया कि विधानसभा समान्य निर्वाचन-2022 के लिये सभी निर्वाचक 12 प्रकार के दस्तावेजों में से किसी एक को दिखा कर मतदान कर सकते हैं। जिन निर्वाचकों को फोटो पहचान पत्र जारी किये गये है,मतदान स्थल पर अपना मत डालने से पहले अपनी पहचान सुनिश्चित करने हेतु अपना निर्वाचक फोटो पहचान पत्र दिखायेगें।वे निर्वाचक जो अपना निर्वाचक फोटो पहचान पत्र प्रस्तुत नहीं कर पाते है उन्हें अपनी पहचान स्थापित करने के लिये निर्वाचन आयोग द्वारा 12 वैकल्पिक फोटो पहचान दस्तावेजों में से कोई एक प्रस्तुत करके मतदान कर सकते हैं। उन्होनें12 वैकल्पिक दस्तावेजों के सम्बन्ध में बताया है कि आधार कार्ड, मनरेगा जॉब कार्ड, बैंकों/ डाकघरों द्वारा जारी किये गये फोटोयुक्त पासबुक, श्रम मंत्रालय की योजना के अन्तर्गत जारी स्वास्थ्य बीमा स्मार्ट कार्ड, ड्राइविंक लाइसेन्स, पैन कार्ड, एनपीआर के अन्तर्गत आर जी आई द्वारा जारी किये गये स्मार्ट कार्ड,भारतीय पासपोर्ट,फोटोयुक्त पेंशन दस्तावेज, केन्द्र/राज्य सरकार/लोक उपक्रम/ पब्लिक लिमिटेड कम्पनियों द्वारा अपने कर्मचारियों को जारी किये गये फोटोयुक्त सेवा पहचान पत्र, सांसदों/विधायकों/विधान परिषद सदस्यों द्वारा जारी किये गये सरकारी पहचान पत्र, यूनिक डिसएबिलिटी आईडी (यूडी आईडी) कार्ड सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय भारत सरकार है।

नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र, प्रयागराज

भारत सरकार की कौशल विकास योजना में अगस्त 2021 से प्रारम्भ हो रहे सत्र के लिए निम्नलिखित ट्रेडों में दाखिले के लिए आवेदन पत्र आमंत्रित ट्रेड प्रवेश योग्यता तथा प्रस्तुत विभिन्न पाठ्यक्रमों की अवधि इस प्रकार है-

क0सं0	ट्रेड का नाम	ट्रेड की अवधि	योग्यता
1.	कोपा	1 वर्ष	12वीं पास
2.	फिटर	2 वर्ष	10वीं पास
3.	बेसिक कम्प्युटिंग	6 माह	साक्षर
4.	डाटा इंट्री ऑपरेटर	6 माह	10वीं पास
5.	फायर प्रिवेन्शन एण्ड इंडस्ट्रियल सेफ्टी	6 माह	8वीं पास
6.	सेक्योरिटी सर्विस	6 माह	8वीं पास
7.	कम्प्यूटर हार्डवेयर एण्ड एसेम्बली	1 वर्ष	10वीं पास
8.	सर्टिफिकेट इन कम्प्युटर एप्लीकेशन	1 वर्ष	10वीं पास
9.	इलेक्ट्रिकल टेक्निशियन्स	1 वर्ष	8वीं पास
10.	रेफरिजरेटर एण्ड एयर कन्डिसनिंग	1 वर्ष	8वीं पास
11.	योगा असिस्टेन्ट	1 वर्ष	10वीं पास
12.	वेल्डिंग टेक्नोलॉजी	1 वर्ष	8वीं पास
13.	कम्प्यूटर टीचर ट्रेनिंग कोर्स	1 वर्ष	10वीं पास

1.प्रमाण पत्रः- सफल प्रशिक्षणार्थियों को भारत सरकार द्वारा प्रमाणपत्र दिए जाते है, जो केंन्द्रीय सरकार एवं राज्य सरकार के अधीनस्थ पद एवं सेवा में भर्ती के लिए मान्य है। **2.चयन की प्रक्रियाः-** इस वर्ष कोविड-19 महामारी के चलते सभी सीटों पर दाखिले पहले आओ-पहले पाओ के आधार पर किये जायेंगे। **3.आयु सीमाः-** उम्मीदवारों की आयु 1 अगस्त 2021 को न्यूनतम 14 वर्ष से अधिक होनी चाहिए। **4.आवेदन कैसे करेः-** आवेदन फॉर्म संस्थान की वेबसाइट पर जाकर ऑनलाइन भरे जा सकते है तथा संस्थान के कार्यालय से निःशुल्क भी प्राप्त किया जा सकता है। **5.**आवेदन फॉर्म भरते समय पंजीकरण शुल्क रूपये 2665/- का भी देय होगा। **6.कक्षायें/उपस्थितिः-** छात्रों की उपस्थिति में दो भाग शामिल है- थ्योरी क्लास और ट्रेनिंग इस वर्ष कोविड-19 स्थिति के कारण सभी छात्र संस्थान द्वारा आयोजित ऑनलाइन कक्षाओं में भाग लेंगे तथा उसके लिए संस्थान में छात्रों की भौतिक उपस्थिती की अनिवार्यता नहीं है, जब तक कोविड-19 की वर्तमान स्थिति समाप्त नहीं हो जाती है। प्रशिक्षण के लिए छात्रो को प्रधानाचार्य की अनूमति के साथ, अपने सम्बंधित मूल स्थानों पर प्रशिक्षण पूरा करने की अनुमति है। परीक्षा के समय छात्रों की उपस्थिति अनिवार्य होगी। **7.छात्रवृत्तिः-** दाखिले के उपरांत शुल्क प्रतिपूर्ति के लिए सभी ट्रेडों में आरक्षित श्रेणी के अभ्यर्थी, जिनके पास आय प्रमाण पत्र एवं सम्बन्धित दस्तावेज मौजूद हो वे सभी भारत सरकार की छात्रवृत्ति योजनाओं में आवेदन कर सकते है। **8.** अधिक जानकारी के लिए संस्थान की वेबसाइटः- **www.nainiiti.com** देखें। **9.दाखिले की अंतिम तिथिः-** 28 फरवरी 2022

सम्पर्क सूत्र :- 0532-2695959, 9415608710,
9807278552, 9415608790

स्वयंसेवकों को प्रशस्ति प्रमाण पत्र देकर किया गया सम्मानित

आधुनिक समाचार सेवा)
सर्वेश कुमार

सेवापुरी (वाराणसी)। शीतकालीन शिविर में मनोरंजक गतिविधियों के माध्यम से नौनिहालों के साथ शिक्षण कार्य करने वाले स्वयंसेवकों को बीआरसी सेवापुरी में बीएसए वाराणसी राकेश सिंह एवं बीईओ संजय यादव ने प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया। तीन अन्य केंद्र जिसमें कम्पोजिट स्कूल देहलीविनायक में एआरपी संजय कुमार गिरी जी, प्राथमिक विद्यालय ठठरा प्रथम में एआरपी डॉ. आलोक त्रिपाठी जी एवं प्राथमिक विद्यालय बेसहुपुर में संकुल प्रभारी अजय कुमार मिश्रा ने स्वयंसेवकों को सम्मानित किया बच्चों के सीखने को नियमित रखने के लिए शिक्षा विभाग एवं स्वयंसेवी संस्था लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन के समेकित प्रयास से एवं बीएसए के मार्गदर्शन में संस्था ने 111 प्राथमिक विद्यालयों के लिए स्वयसेवकों का चयन किया गया। जो विद्यालयो के बंद होने के दौरान बच्चों को भाषा व गणित सीखने में सहयोग कर रहे थे। अब विद्यालय खुल गए है तो इस स्थिति में अपनी कक्षा में पिछड़ रहे बच्चों को विद्यालय अवधि के बाद स्वयंसेवक सहयोग करेंगे, इसके लिए सेवापुरी में पूर्व की भाँति चार केंद्रों पर बदली हुई भूमिका के लिए स्वयसेवकों का उन्मुखीकरण भी किया गया एवं एलएलएफ द्वारा बच्चों के लिए शिक्षण सामग्री का वितरण भी किया गया। उन्मुखीकरण का आयोजन एल एल एफ के ब्लॉक समन्वयक भोलानाथ यादव, सुनील कुमार पटेल ,अंकेश वर्मा एवं वैभव द्विवेदी द्वारा दिया गया उन्मुखीकरण सत्र के दौरान ही शीतकालीन शिविर में महती भूमिका निभाने के लिए स्वयसेवकों को प्रमाणपत्र वितरित किया गया। बीएसए ने अपने संबोधन में स्वयसेवकों द्वारा बच्चों के सीखने में किए गए सहयोग के लिए उनकी सराहना करते हुए अपने बचपन के अनुभव को साझा किया।

पिता का दर्द और भावनाओं को समझती हैं बेटियां-अंजली तोमर शिक्षिका

बलिया(यूपी)। एक पिता,जो अपनी भावनाओं को अपने ही अंदर समेटकर अपनी ताकत को अपनी बेटी में देखकर जहां मन ही मन खुश होता है। पिता अपनी बेटी के दर्द पर बेचैन भी होता है ,जिसकी छांव में बेटियां अपने आप को दुनिया से बचने और लड़ने की ताकत रखती हैं। एक पिता जो अपनी बेटी की जिंदगी के वास्तविक चलचित्र का हीरो होता है, वो पिता कभी अपनी बेटी के लिए नकारा नहीं हो सकता । एक बेटी मां के गर्भ से बाहर आने के बाद भावनात्मक रूप से अपने पिता से ज्यादा जुड़ाव महसूस करती है । बचपन में जितना खुश वह अपने पिता की गोद या बाहों में होती है। उतना कहीं और नहीं।सारे जहान की खुशियां उसे पिता से ही मिलती हैं।बेटियां कभी नहीं भूलती कि पिता से ही उनका जीवन है।बचपन के बाद भी पिता की बातें उसके लिए संजीवनी का काम करती रहती हैं। पिता वह वृक्ष होता है। जिसकी छांव तले बेटियां अपना घरौदा बनाती हैं । एक पिता का प्यार और उसकी नाराजगी भी बेटे से ज्यादा बेटियां ही समझ सकती हैं और समझती भी हैं।जब कोई पिता किसी करणवश कभी अपनी बेटी से थोड़ा नाराज भी होता है तो उस बेटी पर क्या गुजरती है,वह कोई दूसरा नहीं समझ सकता । क्योंकि बेटियां ही हैं जो पिता की भावनाओं को शुरू से समझा होता है। कहा जाता है कि वो किस्मत वाले होते हैं जिनके घर - आंगन में बेटी पैदा होती है। मनोविश्लेषक कहते हैं कि बाप बेटी के बीच की बॉन्डिंग का असर पिता के पूरे व्यक्तित्व पर पड़ता है।यही रिश्ता आगे चलकर बेटी के भविष्य निर्माण में भी सहायक होता है । यानी एक तरह से यही रिश्ता बेटी के भविष्य भी नींव को भी पुख्ता करता है। रिसर्च के नतीजे बताते है जिन बेटियों को अपने बचपन में पिता का प्यार - दुलार खूब मिलता है , उनका स्वास्थ्य उन लड़कियों से बेहतर होता है , जिनको यह दुलार किसी न किसी कारण से नसीब नहीं होता । बाप-बेटी के रिश्तों की मजबूती आगे चलकर बेटियों को भावनात्मक रूप से मजबूत बनाने में भी सहायक होती है । खासकर तब जब लड़कियां अपनी उम्र के उस पड़ाव पर होती है जहां उनके डगमगाने के खतरे ज्यादा रहते है । पिता का साथ मिलने से बेटियां आत्मविश्वास से लवरेज होती हैं । यह भी कम आश्चर्य की बात नहीं कि बाप बेटी के रिश्ते का असर बेटी के अन्य रिश्तों पर भी पड़ता है । पिता के घर से विदा होने के बाद भी बेटियां जीवन भर पिता के दिल में रहती हैं । बहुत बदनसीब होती हैं वो बेटियां जो पिता के जीते जी किसी कारणवश या गलत-फहमी का शिकार बन पिता का प्यार पाने से वंचित रह जाती है।अंग्रेज लेखक , कवि व नाटककार जोसेफ एडिसन कहते हैं कि यह तय है कि एक पिता के लिए बेटी का प्यार शब्दों से परे होता है । हम अपनी पतनें से प्यार करते हैं अपनी इच्छाओं के लिए , बेटे से प्यार करते हैं अपनी महत्वाकांक्षाओं के लिए , यानी जो हम नहीं हो सके या बन सके वह बेटा बनकर या होकर दिखाएगा , लेकिन बेटी हमारा प्यार वो है जिसे हम कभी बता नहीं सकते।ये कुछ और ही है।

भाजपा प्रत्याशी हर्षवर्धन बाजपेई के जनसंपर्क के दौरान जनता का मिल रहा भरपूर समर्थन

(आधुनिक समाचार सेवा)
दिलीप जी

प्रयागराज । भारतीय जनता पार्टी शहर उत्तरी प्रत्याशी हर्षवर्धन बाजपेई क्षेत्र में लगातार जनसंपर्क कर रहे है जनसंपर्क के दौरान जनता का भरपूर समर्थन और सहयोग मिल रहा है हर्षवर्धन बाजपेई द्वारा कोरोना काल मे किए गए कार्यों राशन वितरण मास्क वितरण और लोगों की ऑक्सीजन की भरपूर मदद करने के लिए यहां प्रयागराज की जनता में ऑक्सीजन मैन के नाम से जाने जाने वाले हर्षवर्धन बाजपेई द्वारा क्षेत्र में कराए गए विकास कार्यों के कारण जनता का भरपूर सहयोग और समर्थन मिल रहा है।

उड़नदस्ता टीम ने वाहन चेकिंग में जब्त किए लगभग दो लाख रूपये

(आधुनिक समाचार सेवा)
डॉ0रणजीत सिंह

प्रतापगढ़। विधानसभा चुनाव के मद्देनजर उड़नदस्ते द्वारा की गई वाहन चेकिंग में लगभग दो लाख रूपये बरामद कर उन्हें जब्त कर लिया गया। सामान्य निर्वाचन-2022 को सही ढंग से सम्पन्न कराने के उदेदश्य से जिलाधिकारी/जिला निर्वाचन अधिकारी डा0 नितिन बंसल द्वारा पूर्व में उड़नदस्ता टीम के अधिकारियों/कर्मचारियों के साथ बैठक के दौरान कड़े निर्देश दिये गये गये थे।विधानसभा क्षेत्रों में आने-जाने वाले वाहनों की सघन तलाशी करायी जाये और इसमें किसी भी स्तर पर लापरवाही एवं शिथिलता न बरती जाये। जिलाधिकारी के कड़े तेवर के दृष्टिगत आज विधानसभा क्षेत्र कुण्डा में उड़नदस्ता प्रथम के मजिस्ट्रेट विजय सिंह द्वारा लेहदरी पुल थाना नवाबगंज के पास वाहन जांच के दौरान रंजीत पटेल निवासी पट्टी के पास से 77500 रूपये, नौसाद आलम निवासी कुण्डा के पास से रूपये 60000 एवं मुकेश मौर्या निवासी सलोन रायबरेली के पास 59700 रूपये बरामद किये गये। सम्बन्धित व्यक्तियों के पास कोई कागजात न होने व चुनाव में दुरूप्रयोग के दृष्टिगत उसे जब्त कर सम्बन्धित मजिस्ट्रेट द्वारा कोषागार कार्यालय के डबल लॉक में जमा करा दिया गया। जिलाधिकारी ने समस्त उड़नदस्ता टीमों को निर्देशित किया है कि विधानसभावार क्षेत्रों में वाहनों के चेकिंग बहुत ही गम्भीरता के साथ की जाय।

आनियंत्रित ट्रक घुसी दुकान में, हड़कंप

(आधुनिक समाचा सेवा)
सरफराज अहमद

फूलपुर। बीती आधी रात को फूलपुर से प्रतापपुर की ओर जा रही तेज रफ्तार अनियंत्रित ट्रक कस्बे के लोचन गंज मोहल्ले में सड़क किनारे स्थित शिफा कट पीस सेंटर में घुस गई। जोरदार आवाज के साथ घटी घटना से हड़कंप मच गया। लोग बाग घरों से निकल भागे। कट पीस सेंटर मालिक गुड्डू ने बताया। कि उसका पूरा मकान हलस गया है। कट पीस सेंटर बिल्कुल बर्बाद हो गया। किसी तरह शुक्रवार को ट्रक बाहर निकाली गई। मामले की सूचना कोतवाली में दी गई। फिलहाल घर मोहल्ले के लोग बाल-बाल बच गए।

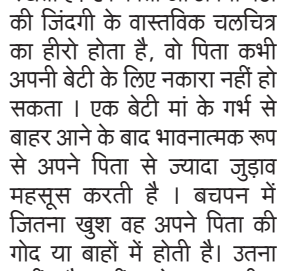

प्रयागराज शहर दक्षिणी के सपा प्रत्याशी संघर्षशील एवं समाजसेवी रहीश शुकला के जनसंपर्क के दौरान जनता का मिल रहा भरपूर समर्थन

(आधुनिक समाचार सेवा)
दिलीप जी

प्रयागराज । समाजवादी पार्टी शहर दक्षिणी से संघर्षशील प्रत्याशी हरीश शुकला क्षेत्र में लगातार जनसंपर्क कर रहे हैं जनसंपर्क के दौरान जनता का भरपूर समर्थन और सहयोग मिल रहा है रहीश शुकला द्वारा कोरोना काल मे किए गए कार्यों राशन वितरण मास्क आदि वितरण से शहर दक्षिणी की जनता में समाज सेवी के नाम से जाने जाने वाले रहीश शुकला द्वारा क्षेत्र में कराए गए विकास कार्यों के कारण जनता का भरपूर सहयोग और समर्थन मिल रहा है।

विधानसभा मेजा में भारतीय जनता पार्टी प्रत्याशी श्रीमती नीलम करवरिया को मिल रहा अपार जनसमर्थन

(आधुनिक समाचार सेवा)
दिलीप जी

मेजा प्रयागराज । विधानसभा मेजा में भारतीय जनता पार्टी प्रत्याशी श्रीमती नीलम करवरिया को दुबारा विधायक के रूप में देखना चाहती है इसीलिए क्षेत्र में मुलाकात करने के टाइम जनता का अपार जनसमर्थन मिल रहा है इससे मेजा विधानसभा में नीलम करवरिया के प्रति विधानसभा में उत्साह देखा जा रहा है कठोली गांव सभा में जनसंपर्क के दौरान जनता के द्वारा अपने भावी विधायक का सम्मान करते हुए कठोली गांव सभा में वोट मांगते हुए मेजा विधानसभा प्रत्याशी श्रीमती नीलम करवरिया के साथ क्षेत्र के जनता जनार्दन जी वोट मांग रहे हैं गांव-गांव जाकर।

डीएम ने किया प्रशिक्षण स्थल एवं फैसिलिटेशन सेन्टर का निरीक्षण

(आधुनिक समाचार सेवा)
डॉ0रणजीत सिंह

प्रतापगढ़। जिलाधिकारी जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ0नितिन बंसल ने अनुपस्थित सभी मतदान कार्मिक को सूचित किया है कि वे 19 फरवरी को प्रशिक्षण अवश्य प्राप्त करें अन्यथा उनके विरुद्ध सुसंगत धाराओं में प्राथमिकी दर्ज करवाई जाएगी। उन्होंने मतदान को सकुशल सम्पन्न कराने हेतु सभी मतदान कार्मिकों को प्रशिक्षण को पूरे मनोयोग एवं गहनता से प्राप्त करने को कहा है। इस दौरान फैसिलिटेशन सेन्टर पर 1333 मतदान कार्मिकों ने पोस्टल बैलेट के माध्यम से अपना मतदान किया। प्रतापगढ़। विधानसभा सामान्य निर्वाचन-2022 को सकुशल, निष्पक्ष, शान्तिपूर्ण, पारदर्शी ढंग से सम्पन्न कराने के उद्देश्य से जिलाधिकारी/जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ0 नितिन बंसल ने सेन्ट एन्थोनी इण्टर कालेज में बनाये गये मतदान कार्मिकों के प्रशिक्षण स्थल एवं मतदान हेतु बनाये गये फैसिलिटेशन सेन्टर का निरीक्षण किया।सेन्ट एन्थोनी इण्टर कालेज में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे मतदान कार्मिकों से जिलाधिकारी ने दिये गये प्रशिक्षण के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त की और कहा कि निर्वाचन प्रक्रिया को यदि सफलतापूर्वक सम्पन्न कराना है तो निर्वाचन सम्बन्धी प्रशिक्षण की जानकारी विधिवत होनी चाहिये जिससे मतदान प्रक्रिया के दौरान कोई समस्या न उत्पन्न हो। प्रशिक्षण को पूरे मनोयोग एवं गहनता से प्राप्त करें यदि कहीं भी कोई समस्या आ रही है तो मास्टर ट्रेनर से उसके सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करें, मन में किसी भी प्रकार की शंका न रखें, उसका त्वरित समाधान करायें। जिलाधिकारी ने फैसिलिटेशन सेन्टर पर मतदान कार्मिकों द्वारा किये जा रहे मतदान प्रक्रिया का अवलोकन किया और कहा कि सावधानी पूर्वक सभी मतदान कार्मिक अपना मतदान करें, किसी भी प्रकार की जल्द बाजी न करें, पंक्तिबद्ध रूप से सभी कार्मिक अपने मताधिकार का प्रयोग करें। मतदान कार्मिकों के अनुपस्थिति के सम्बन्ध में जिला निर्वाचन अधिकारी ने कड़ा रूख अपनाते हुये निर्देशित किया है कि दिनांक 15 फरवरी से अब तक प्रशिक्षण में जो भी मतदान कार्मिक अनुपस्थित रहे उन्हें एक और अन्तिम अवसर दिया जा रहा है कि वह दिनांक 19 फरवरी को द्वितीय पाली में राजकीय इण्टर कालेज में उपस्थित होकर प्रशिक्षण प्राप्त कर लें अन्यथा की स्थिति में लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम की सुसंगत धाराओं में प्राथमिकी दर्ज कराने की कार्यवाही की जायेगी और उनके विभागाध्यक्ष को विभागीय कार्यवाही हेतु पत्र प्रेषित किया जायेगा। फैसिलिटेशन सेन्टर पर मतदान कार्मिकों द्वारा पोस्टल बैलेट के माध्यम से आज कुल 1333 वोट पड़े जिनमें विधानसभा रामपुरखास 154, बाबागंज 94, कुण्डा 113, विश्वनाथगंज 228, प्रतापगढ़ 254, पट्टी 309 व रानीगंज 181 मतदान सम्मिलित है। मतदान का समय पूर्वान्ह 10 बजे से अपरान्ह 5 बजे तक निर्धारित था।

सामान्य प्रेक्षक ने मतदान केन्द्रों व ईवीएम मशीनों की तैयारियों का किया निरीक्षण

(आधुनिक समाचार सेवा)
डॉ0रणजीत सिंह

प्रतापगढ़। विधानसभा सामान्य निर्वाचन-2022 को सकुशल, निष्पक्ष,शान्तिपूर्ण, निर्विघन, पारदर्शी ढंग से सम्पन्न कराने के उद्देश्य से भारत निर्वाचन आयोग द्वारा नामित सामान्य प्रेक्षक एस0ए0रमन द्वारा आज महुली मण्डी में ईवीएम मशीनों की तैयारियों का निरीक्षण किया। उन्होंने सुरक्षा सबन्धी आवश्यक निर्देश दिये। इसके अतिरिक्त सामान्य प्रेक्षक ने क्रिटिकल मतदान केन्द्र 82-प्राथमिक विद्यालय कोल बजरडीह,48-प्राथमिक विद्यालय कमालुद्दीनपुर, 89-प्राथमिक विद्यालय मिश्ररौली90-संविलियन विद्यालय अन्तू, 91-प्राथमिक विद्यालय टाउन एरिया अन्तू बाजार, 118-प्राथमिक विद्यालय आमामऊ, 127-प्राथमिक विद्यालय शुकुलपुर, 138 प्राथमिक विद्यालय गड़वारा, 130-पंचायत भवन गौरवारी का निरीक्षण किया और मतदान केन्द्रों पर सुविधाओं का जायजा लिया और पायी गयी कमियों को ठीक कराने के निर्देश रिटर्निंग आफिसर को दिये। उन्होंने निर्देशित किया कि निर्वाचन प्रक्रिया में किसी भी प्रकार की लापरवाही एवं शिथिलता कदापि न बरत जाये और निर्वाचन को सकुशल सम्पन्न कराया जाये। निरीक्षण के समय लायजन आफिसर चन्द्रवीर उपस्थित रहे।

जनसंपर्क के दौरान विधायक बारा डॉक्टर अजय कुमार बसपा प्रत्याशी २६४ विधानसभा बारा में सम्मानित

(आधुनिक समाचार सेवा)
संवादाता राकेश मिश्रा

बारा (प्रयागराज)। क्षेत्रवासी पाल, यादव , कुशवाहा क्षत्रिय पटेल और ब्राह्मणों का भरपूर जनसैलाब के साथ समर्थन प्राप्त हो रहा है । बारा विधानसभा के सम्मानित साथियों के साथ ग्राम सभा लोहगरा नीवीं सेहुड़ा बारा बाजार , बारा तहसील सरसेड़ी उमापुर पाण्डर जसरा बाजार कुमारी मायावती सतीश मिश्रा के जयकारे लगाये , इस भावुक निर्मल मन को क्षेत्र की जनता आपकी भावुकता समझने लगी है। वास्तव में आपके अंदर जो सामाजिक राजनैतिक गुण है,अभी तक किसी उम्मीदवार में देखने को नहीं मिला। जनसंपर्क के दौरान विधानसभा के बाह्मणों की संख्या , एवं अन्य समुदाय के लोगों का जनसैलाब था। विधायक बारा ने लोगों को आपका मिलनसार व्यक्तित्व का स्वभाव है वास्तव में अभी तक किसी प्रत्याशी में यह देखने को नहीं मिला। ब्राह्मण क्षत्रिय एवं अन्य समुदाय के लोग जनसंपर्क में मौजूद रहे आपके सरल स्वभाव को देखते हुए अब संकल्प ले रहे है कि आपको तीसरी बार बारा का विधायक बना कर विधानसभा भेजने का काम बारा विधानसभा की जनता करेगी । तहसील बारा में जनसंपर्क के दौरान कुमार एक अधिवक्ता भी है इसलिए बारा तहसील में अधिवक्ताओं का भरपूर समर्थन मिल रहा है। क्षेत्र इसी क्रम में लोहगरा बाजार में प्रबंधक भोलेनाथ द्विवेदी के द्वारा विधायक बारा को टीका लगाकर आर्शीवाद दिया और इसी क्रम में उमापुर में शुशील कुमार मिश्र घर पर बारा विधायक का जोरदार स्वागत किया गया और लोगों ने कहा कि बहुत से उम्मीदवार है। और आए और गए, लेकिन आपके अलग ही अंदाज है यह जो कहते है वह करते भी है। इनका गंभीर स्वभाव ही इनका परिचय है इनके पास बहुत कुछ होते हुए भी व्यक्तिगत व्यक्तित्व के धनी और सरल स्वभाव के है इस बार भी चुनाव जीतकर हैट्रिक लगायेंगे । जनसंपर्क मे मुख्य रूप से समाज सेवी हरी राम त्रिपाठी ,पूर्व प्रधान वीरेन्द्र शास्त्री विधायक प्रतिनिधि शिवयश पाण्डेय एड्वोकेट, विधायक प्रतिनिधि अभिषेक त्रिपाठी, प्रबंधक सुरेश त्रिपाठी विधायक प्रतिनिधि मोहन यादव, प्रवक्ता रामानन्द त्रिपाठी , प्रधान विनोद त्रिपाठी,एडवोकेट गया त्रिपाठी, पूर्व अध्यक्ष श्यामा मिश्र, समाज सेवी राम सुफल ओझा, पूर्व बीडीसी पिन्टू तिवारी समाज सेवी महिला संगीता राय, पुष्पा देवी, गुड़िया, रामरती , पूर्व विधायक प्रत्याशी भोला नाथ चौधरी, डा.गुलाब विजय राज सिंह दिनेश तिवारी बल्लू मिश्रा, नन्हू द्विवेदी सहित तमाम कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

अमरेहा बुंदावा गौहनियां में जोरदार स्वागत किया गया। विधायक बारा डा.अजय कुमार सरल ईमानदार व्यक्तित्व के धनी माने जाने वाले बसपा प्रत्याशी डा.अजय कुमार को स्थानीय लोगों ने बहुजन समाज पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन भरोसा दिलाने हुए कहा कि हम आपके साथ है आपके भरोसे पर चुनाव लड़ा हूँ। क्षेत्र का कोई ऐसा वोटर नहीं होगा जो डा.अजय कुमार से डायरेक्ट न मिलता हो । सबसे सरल मधुर स्वभाव के माने जाने वाले बहुत निराले है लेकिन जो वरिष्ठ अधिवक्ता अयोध्या प्रसाद पाठक ने कहा कि अधिवक्ताओं के लिए जो बारा विधायक डा.अजय कुमार ने करके दिखा दिया वह कोई विधायक नहीं कर सकता है। हम सभी अधिवक्ता लोग आपके साथ साथ है विधायक बारा डा.अजय

जेसीबी ने जल निगम की पाइप लाइन तोड़ा

(आधुनिक समाचा सेवा)
सरफराज अहमद

फूलपुर। हर ग्राम सभा में नल से जल हेतु नई पानी की टंकी बनाई जा रही है। जिस हेतु गांव-बिछा रहे हैं। परंतु विडंबना यह है। कि पूर्व में ढकपूरा जल निगम से वाटर सप्लाई हेतु बिछाई गई पुरानी लाइन जेसीबी ने कई जगह तोड़ दी है। जिसे ठेकेदार बनवाने हेतु राजी नहीं है। जिसके कारण 2 दिनों से ढकपूरा पंप हाउस से वाटर सप्लाई बंद है। ग्रामीणों के समक्ष पेयजल संकट उत्पन्न है। विभाग के लोग आंख मूंदे बैठे हैं। जेई संदीप मौर्य से समस्या बताई गई। तो उन्होंने कहा जब तक कपसा आलेमऊ में काम हो रहा है। तब तक ढकपूरा से उधर की सप्लाई बंद कराया जाएगा।

गांव जेसीबी द्वारा ठेकेदार नई लाइने

दिव्यांग और अति वृद्ध मतदाता घर पर करेगें मतदान

(आधुनिक समाचार सेवा)
डॉ0रणजीत सिंह

प्रतापगढ़। जिलाधिकारी/जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ0नितिन बंसल ने बताया कि विधानसभा सामान्य निर्वाचन-2022 में दिव्यांग और 80 वर्ष से ऊपर के मतदाता 19 फरवरी को ही अपने घर पर मतदान करेंगे। निर्वाचन आयोग द्वारा दी गयी व्यवस्था के क्रम में एवीएससी एवं एवीपीडी मतदाताओं को डाक मतपत्र के माध्यम से घर पर ही मतदान कराया जायेगा।उन्होंने बताया है कि जो दिव्यांग एवं 80 वर्ष के अधिक के मतदाता मतदान केन्द्र पर आने में असमर्थ है जिन्होंने फार्म 12डी भर कर आवेदन किया है।ऐसे मतदाताओं को दिनांक 19 फरवरी को 129 दिव्यांग/80 वर्ष के अधिक के वृद्ध का मतदान विधानसभा क्षेत्र अन्तर्गत घर पर ही करवाया जायेगा।उन्हों ने बताया कि विधानसभा क्षेत्र प्रतापगढ़ के 11, रामपुरखास के 17, बाबागंज (अ0जा0) के 10, पट्टी के 08, कुण्डा के 43, विश्वनाथगंज के 5 व रानीगंज विधानसभा क्षेत्र के 35 दिव्यांग/80 वर्ष से अधिक मतदाताओं का मतदान घर पर कराया जायेगा। जिलाधिकारी ने मतदान को सकुशल एवं निष्पक्ष रूप से कराने हेतु सम्पन्न कराने हेतु विधानसभावार नामित पीठासीन अधिकारियों, मतदान अधिकारी प्रथम, माइक्रो आब्जर्वर को निर्देशित किया है कि विधानसभा क्षेत्रों के निर्धारित स्थलों पर वाहन से मतदाता के घर पर जाकर उनके मतदान को स्वतंत्र,बिना भय, निष्पक्षतापूर्वक एवं शान्तिपूर्ण ढंग से सम्पन्न करायेगें। इसमें किसी भी स्तर पर लापरवाही एवं शिथिलता कदापि न बरती जाय।मतदान के दौरान वीडियोग्राफी भी करायी जाय।

अनियंत्रित बोलेरो पलटने से नौ बाराती घायल, दो रिफर

दुद्धी (सोनभद्र) । कोतवाली क्षेत्र के बघाडू गांव में शुक्रवार की शाम एक अनियंत्रित बोलेरो पलटने से उसमे सवार सभी बाराती घायल हो गए। आसपास के लोगों ने एंबुलेंस की मदद से सभी घायलों को अस्पताल भेजवाया। इसमें से दो की हालत गंभीर स्थिति को देखते हुए उन्हें जिला अस्पताल के लिए रेफर किया गया है। बभनी क्षेत्र के धनखोर गांव से एक बरात अमवार आई थी। वैवाहिक कार्यक्रम संपन्न होने के बाद अमवार निवासी बोलेरो चालक पुष्पराज धनखोर गांव निवासी बरातियों को उनके गांव लेकर जा रहा था। इस बीच बघाडू गांव के बोलताकरम टोले के पास अचानक तेज रफ्तार वाहन एक मोड़ पर अनियंत्रित होकर पलट गया। इस हादसे में बराती पार्वती (54) पत्नी उदय, कैलाशपति (50) पत्नी माता शरण, फूलमती (14) पुत्री उदयनारायण, खुरमन (50) पत्नी रामबरन, शांति देवी (26) पत्नी परमेश्वर, परमेश्वर (30) के साथ चालक पुष्पराज घायल हो गए। सभी को उपचार के लिए दुद्धी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया है। जबकि गंभीर रूप से घायल जगपतिया (55) पत्नी अमृत, हरदेव (45) पुत्र रामवृक्ष की गंभीर हालत को देखते हुए जिला अस्पताल रिफर किया गया है।

मतगणना स्थल व स्ट्रांग रूम का प्रेक्षक ने किया निरीक्षण

मीरजापुर । विधानसभा सामान्य निर्वाचन 2022 को शांतिपूर्ण, सकुशल संपन्न कराने के लिए विधानसभा मीरजापुर के प्रेक्षक एम वल्लालर, छानबे प्रेक्षक अनुसुआ दत्ता बरूआ ने मतगणना स्थल व स्ट्रांग रूम का निरीक्षण शुक्रवार को किया। जिला निर्वाचन अधिकारी प्रवीण कुमार लक्षकार ने बताया कि राजकीय पालीटेकिन्क के 10 कक्षों में मतगणना होगी। प्रत्येक कक्ष में 07 टेबल मतगणना के लिए लगाए जाएंगे। सुरक्षा के लिए मतगणना कक्ष में पूरी बैरीकेडिग एवं जाली लगवाया जाएगा। जाली के बाहर मतगणना अभिकर्ताओं के बैठने की व्यवस्था की गई है। उप पुलिस महानिरीक्षक अजय कुमार सिंह के द्वारा पालीटेकिन्क के गेट से लेकर मतगणना स्थल, स्ट्रांग रूम सहित पूरे परिसर में सुरक्षा व्यवस्था के लिए तैनात होने वाले पुलिस बल, पीएसी आदि के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उप जिला निर्वाचन अधिकारी शिव प्रताप शुक्ल, अधिशाषी अभियंता लोक निर्माण विभाग मिथिलेश कुमार के द्वारा मतगणना स्थल व स्ट्रांग रूम एवं पूरे परिसर का बैरिकेडिंग एवं सुरक्षा व्यवस्था के लिए बनाए गए ले आउट चार्ट (नक्शा) के माध्यम से प्रेक्षक को विस्तृत जानकारी दी।

नामांकन पत्रों की जांच में 10 पर्चे खारिज

सोनभद्र । विधानसभा चुनाव के तहत गुरुवार को नामांकन की प्रक्रिया खत्म होने के बाद शुक्रवार को नामांकन पत्रों की जांच हुई। चारो विधानसभा सीटों के लिए कुल 54 प्रत्याशियों ने नामांकन किया था। शुक्रवार को जांच में 10 नामांकन पत्र खारिज हो गए। मूल निवासी अधिकारी पार्टी ने घोरावल, राबर्ट्सगंज व ओबरा सीट से प्रत्याशी का नामांकन कराया था लेकिन तीनों जगहों के प्रत्याशियों का नामांकन खारिज हो गया। जिला निर्वाचन अधिकारी टीके शिबु ने बताया कि शुक्रवार को नामांकन पत्रों की जांच जुई। इसमें घोरावल से 15 प्रत्याशियों ने 24 सेटों में नामांकन पत्र दाखिल किया था। इसमें से दो प्रत्याशियों के नामांकन पत्र खारिज कर दिए गए। यहां से सुभासपा से दूर विजय व मूल निवासी अधिकार पार्टी से रमेश का नामांकन रद्द हुआ। जबकि अनिल कुमार मौर्या भाजपा, मोहन सिंह कुशवाहा बसपा, रमेश चंद्र दुबे सपा, विदेश्वरी सिंह राठौर कांग्रेस, रमाशंकर(आप), सुरजीत सिंह अपना दल(कमेरावादी), राम चरन (राष्ट्रवादी पार्टी आफ इंडिया), अनिता जनता दल (यूनाइटेड), रानी सिंह जन अधिकार पार्टी, सुरेश (भाकपा माले), सरिता सिंह, राजेश कुमार, बीरबल का नामांकन पत्र सही पाया गया। दूर विजय (सुभासपा), रमेश (मूल निवासी अधिकार पार्टी) में नामांकन निर्धारित अवधि में नोटिस दिए जाने के बाद भी सही प्रपत्र के उपलब्ध न कराए जाने के कारण रद्द किया गया। राबर्ट्सगंज में सपा के अविनाश कुशवाहा, बसपा अविनाश शुक्ल, कांग्रेस कमलेश कुमार, भाजपा

भूपेश चौबे, सीपीआइ विजय शंकर यादव, जनता दल युनाइटेड अतुल पटेल, पीस पार्टी अतहर, जन अधिकार पार्टी किरन देवी, आम आदमी पार्टी कुलदीप अग्रवाल, राष्ट्रवादी पार्टी ऑफ इण्डिया हरेन्द्र मिश्र, विकासशील इंसान पार्टी के रोशन लाल यादव व निर्दलीय प्रत्याशी ओम प्रकाश तथा आदित्य नारायण का नामांकन पत्र वैध पाया गया। इसके अलावा निर्दलीय सच्चिदानंद तिवारी, अयोध्या, सूरज, वकील, आजाद समाजवादी पार्टी (कांशीराम) के राजाराम, सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी के सुरेंद्र कुमार व मूल निवासी अधिकार पार्टी के पप्पू का नामांकन-पत्र खारिज किया गया। डीएम ने बताया कि ओबरा में 9 प्रत्याशियों में से एक का नामांकन खारिज हुआ। इसमें भाजपा संजीव कुमार, सपा अरविन्द कुमार, बसपा सुभाष खरवार, कांग्रेस रामराज, सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी राकेश कुमार गौंड़, निर्दलीय ओम प्रकाश, विकासशील इंसान पार्टी उमाशंकर व आम आदमी पार्टी के रमाकांत का नामांकन सही मिला जबकि मूल निवासी अधिकार पार्टी के रामकृष्ण का नामांकन पत्र अस्वीकृत किया गया। दुद्धी विधानसभा सीट के लिए सभी नामांकन पत्र वैध पाए गए। यहां से कांग्रेस की बसंती पनिका, भाजपा के रामदुलार, सपा विजय सिंह, बसपा हरिराम, जन अधिकार पार्टी अशोक कुमार, ऑल इंडिया पीपुल्स फ्रंड रेडिकल कृपा शंकर, आम आदमी पार्टी पुष्पा देवी, निर्दलीय हृदय कुमार, मिश्री लाल व रामलाल का नामांकन पत्र सही मिला। सकते है नामांकन पत्र जिला निर्वाचन अधिकारी टीके शिबु ने बताया कि नामांकन पत्रों की जांच की प्रक्रिया पूर्ण कर ली गई है। कुल 54 प्रत्याशियों में से 10 प्रत्याशियों के पर्चे खारिज हुए हैं। 21 फरवरी को नामांकन पत्रों की वापसी होनी है। कोई भी प्रत्याशी दोपहर 3 बजे तक नामांकन कक्ष में ही नामांकन पत्र वापस ले सकते हैं। सभी को स्वयं या प्रस्तावक को आने के लिए नियत स्थान और समय पर अवश्य उपस्थित होने के लिए निर्देशित किया गया है।

दुल्हन की कार में लगी आग, मासूम झुलसा

दुद्धी (सोनभद्र) । कोतवाली क्षेत्र के अमवार इंडियन बैंक शाखा के ठीक सामने शुक्रवार की शाम संदिग्ध परिस्थितियों में खड़ी एक लग्जरी कार में आग लग गई। इससे कार शोला में तब्दील हो गई। हादसे के वक्त कार में ढाई साल का मासूम बैठा हुआ था। वह गंभीर रूप से झुलस गया। उसे सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया। गंभीर स्थिति देखते तत्काल चिकित्सक ने उसे जिला अस्पताल के लिए रेफर कर दिया। इस बाबत कार चालक शिवलोचन ने बताया कि क्षेत्र के निमियाडीह गांव निवासी कार मालिक अनिल अग्रहरि अपने सहयोगियों के साथ लौवा नदी तट पर स्थित शिव मंदिर में आयोजित मांगलिक समारोह में आए हुए थे। वहां से वह दुल्हन को मेकअप कराने के लिए अमवार रोड पर स्थित ब्यूटीपार्लर में आया था। दुल्हन के साथ उसके झारखंड निवासी रिश्तेदार चंदन कुमार का ढाई वर्षीय पुत्र भी आया था, जिसे कार में छोड़कर वह पास के एक दुकान में चाय पी रहा था। अचानक कार से धुंआ निकलते देख वह दौड़ते हुए मौके पर पहुंचा। जब तक बालक को बाहर निकालने का

प्रयास शुरू करता, तब तक आग विकराल रूप ले चुकी थी। गंभीर रूप से झुलसे बालक को किसी तरह शोला में तब्दील हुई कार से निकालकर लोग अस्पताल ले जाकर भर्ती कराए। अस्पताल में तैनात डा. संजीव के मुताबिक मासूम करीब 35 फीसदी झुलस गया है। उसे जिला अस्पताल के बर्न यूनिट में बेहतर इलाज के लिए भेजा जा रहा है। उधर आसपास के लोगों ने बाल्टी से पानी फेककर कार की आग बुझाया।

दो दिनों से खदानो की ओटीपी बंद, खनन कार्य भी बंद

डाला(सोनभद्र)। ई- टेंडरिग समेत कुछ और पत्थर खदानों की दो दिनों से ओटीपी बंद होने से आनलाइन परमिट की निकासी बंद हो गई है। इससे बिल्ली मारकुंडी के बाड़ी क्षेत्र में स्थि पत्थर खदानों में खनन कार्य पूर्णतया बंद रहा। देने के साथ ही प्रदेश सरकार के राजस्व वृद्धि में अहम भूमिका निभाता है। इसके संचालन से जनपद ही नहीं प्रदेश के विभिनन जिलों में गिट्टी-भस्सी की आपूर्ति होती है, जो सरकार के निर्माण संबंधित विकास कायों की अहम

परमिट दो गुने से भी अधिक महंगे दामो पर बिक रहा है। खनन कार्य में लगे टीपर-कंप्रेसर मशीनें आदि जहां-तहां खड़ी पड़ी हैं। वहीं दैनिक मजदूर दो दिनो से बेकार होकर बैठे हैं। इससे उत्तर प्रदेश शासन को करोड़ो रूपये का राजस्व प्रभावित हो रहा है। क्षेत्र का पत्थर खनन उद्योग हजारों लोगों को रोजगार कड़ी से जुड़ा है। विकास को गति प्रदान करने वाला खनन उद्योग पर आए दिन संकट के बादल मंडराते रहते है। इसके कारण खनन उद्योग प्रभावित होता रहता है। खदान संचालकों से मिली जानकारी के अनुसार बिल्ली मारकुंडी खनन क्षेत्र के बाड़ी में स्थित ई-टेंडरिग समेत कुछ अन्य पत्थर खदानो का अचानक ओटीपी दो दिनो से बंद होने से आनलाइन परमिट की निकासी भी बंद हो गई। इसके कारण खनन कार्य पूरी तरह बंद होने से खदानों में सननटा पसरा हुआ है। ओटीपी बंद होने से परमिट के दाम दो गुने से भी अधिक दामों में बिक रहा है। कुछ ट्रक चालकों ने बताया कि परमिट पहले साढ़े तीन सौ रूपये प्रतिघन मीटर के दर से मिल जाया करता था, लेकिन अब छह सौ रूपये से भी अधिक दामों में मनमाने तौर पर परमिट बिक रहा है। खदानों के खनन कार्य में लगने वाली कंप्रेशर मशीन, टीपर आदि खामोश पड़ा है, वही सैकड़ों की संख्या में लगे दैनिक मजदूर बेकार हो गये हैं। बगैर सूचना दिए ही अचानक ओटीपी के बंद हो जाने से खनन कार्य व परमिट की निकासी पर अनिश्चितता के बादल छा गया है। इसको लेकर खदान संचालक भी संशय में पड़े हैं। ओटीपी बंद होने का कारण भी स्पष्ट नहीं हो सका है। बुधवार की शाम से ही खदानों में अधिकारियों की टीम आने की सूचना से खनन कार्य को बंद कर दिया गया है। खनन निरीक्षक विकास परमार ने कहा कि जल्द ही व्यवस्था को पूर्ण रूप से बहाल कर दिया जाएगा।

नामाकंन फार्मों की जांच, 21 उम्मीदवारों का पर्चा खारिज

मीरजापुर । विधानसभा सामान्य निर्वाचन 2022 के लिए नामांकन के बाद पत्रों की जांच शुक्रवार को की गई। इस दौरान 21 उम्मीदवारों का पर्चा निरस्त कर दिया गया, 61 उम्मीदवारों के फार्म वैध मिले। कलेक्ट्रेट परिसर में सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए थे। जनपद के पांच विधानसभाओं में विभिन्न उम्मीदवारों के द्वारा दाखिल नामाकंन प्रपत्रों की संबंधित रिटर्निंग आफिसर के द्वारा जांच की गई। विधानसभा छानबे में कुल 14 उम्मीदवारों के द्वारा नामाकंन किया गया था, जिसमें मुनन लाल, कन्हई, राधिका देवी, राजकुमार तथा अर्जुन सहित कुल 05 का नामाकंन प्रपत्र में कमियों के कारण निरस्त किया गया। मीरजापुर विधानसभा में कुल 17 उम्मीदवारों के द्वारा नामाकंन किया गया था, जिसमें विजय कुमार, सुरेश चंद्र तथा चंद्र विजय सहित तीन का नामाकंन प्रपत्र निरस्त किया गया। मझवा विधानसभा में कुल 19 उम्मीदवारों के द्वारा नामाकंन किया गया था, जिसमें दामोदर मौर्य, सोहन लाल, श्याम लाल, सुनील तथा श्याम कुल पांच नामाकंन प्रपत्र निरस्त किया गया।

स्कूटी से जा रहे छात्र को सीआइएसएफ जवान ने लाठी से पीटा

शक्तिनगर (सोनभद्र)। एनटीपीसी शक्तिनगर में शुक्रवार दोपहर स्कूटी से एनटीपीसी आवासीय परिसर में जा रहे स्कूल के बच्चों को सीआइएसफ जवान द्वारा लाठी से मारने का मामला थाने जा पहुंचा। सूचना मिलने पर पहुंचे अभिभावक के साथ स्थानीय लोगों ने ऊर्जा द्वार पर जमकर हंगामा किया। चोट लगे एक विद्यार्थी का निजी चिकित्सालय में प्राथमिक उपचार भी कराया गया। ग्राम प्रधान चिल्काडाड़ हीरालाल ने शक्तिनगर थाना प्रभारी को दिए पत्र में बताया कि आबाद परियोजना एनटीपीसी के आसपास की जनता मार्केट, अस्पताल, बैंक, शॉपिग सेंटर अन्य जरुरी कार्य से आते जाते हैं, लेकिन एनटीपीसी ऊर्जा गेट व शक्तिनायक द्वार पर खड़े कर्मचारियों द्वारा आए दिन किसी न किसी बहाना से उन्हें रोककर प्रताड़ित किया जाता है। बताया कि सीआईएसएफ के एक कर्मी द्वारा बच्चों को रोककर बेवजह एक विद्यार्थी को लाठी डंडे से मारा भी गया जिसे गंभीर चोट आई है। इससे पूर्व भी अन्य लोगों के साथ जवानों द्वारा दुर्व्यवहार का आरोप लगाया गया। सूचना मिलने पर हंगामा कर रहे स्थानीय लोगों को सीआइसीएफ जवान प्रबंधन व पुलिस ने समझा-बुझाकर थानाध्यक्ष को उस घटना के बारे में जानकारी देते हुए आए दिन इस प्रकार की घटनाओं को लेकर रोक लगाने की मांग की। वहीं क्षेत्र पंचायत सदस्य रंजीत कुशवाहा ने इस प्रकार सीआइएसफ जवानों द्वारा आम नागरिकों के साथ दुर्व्यवहार किए जाने को लेकर घोर निंदा की। इस मौके पर पूर्व ग्राम प्रधान चिल्काडाड़ नंदलाल व रविदर यादव सहित सैकड़ों लोग उपस्थित रहे।

सड़क हादसों में तीन की गई जान, तीन गंभीर

मीरजापुर । जनपद के विभिन्न स्थानों पर सड़क हादसों में तीन लोगों की मौत हो गई, जबकि तीन लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। लोगों की मदद से घायलों को पास के अस्पताल में भर्ती कराया गया। यहां चिकित्सकों ने हालत गंभीर देख दो घायलों को वाराणसी ट्रामा सेंटर तो एक को मंडलीय अस्पताल रेफर कर दिया। पुलिस ने तीनों शव पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। पड़री वाराणसी जनपद के बड़ागांव थाना क्षेत्र के चौकी हरहुआ के ग्राम गढ़वा निवासी कल्लू प्रजापति (55) व बच्चा श्रीवास्तव (50) शादी समारोह में शामिल होने के बाद शुक्रवार को बाइक से वापस घर की तरफ जा रहे थे। राष्ट्रीय राजमार्ग वाराणसी-मीरजापुर के गुरुखुली चौराहे के पास पहुंचे ही थे कि बोलेरो के धक्के से दोनों गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गए। ग्रामीणों की मदद से घायलों को पीएचसी पड़री ले जाया गया। यहां चिकित्सकों ने कल्लू प्रजापति को मृत घोषित करने के साथ ही घायल बच्चा श्रीवास्तव को ट्रामा सेंटर वाराणसी रेफर कर दिया। मृतक कल्लू प्रजापति पड़री क्षेत्र के हिनौती गांव में अपने भांजे विजय प्रजापति की पुत्री की शादी में शामिल होने के लिए आए थे। मौके पर पहुंची पुलिस ने चालक को हिरासत में लेने के साथ ही बोलेरो को कब्जे में ले लिया। राजगढ़ चुनार के सक्तेशगढ़ चौकी क्षेत्र के समुदवा गांव निवासी रामबरन (28) व सागर (24) एक ही बाइक पर सवार होकर दरबान इंदिरा नगर गांव जा रहे थे। मड़िहान क्षेत्र के सेमरी गांव के पास सामने से आ रहे वाहन से बचने के चक्कर में अनियंत्रित होकर सड़क किनारे लगे बिजली के खंभे में टकरा गए। इससे रामबरन की मौत हो गई।

मतदान करने को दिलाई शपथ, किया जागरूक

सोनभद्र । राबर्ट्सगंज नगर में स्थित भारतीय स्टेट बैंक में शुक्रवार को आगामी होने वाले विधानसभा के चुनाव में शत प्रतिशत मतदान के लिए कर्मचारियों को

शपथ दिलाई गई। यहां जागरूकता गोष्ठी भी हुई। शाखा के मुख्य प्रबंधक संतोष कुमार चतुर्वेदी ने संबंधित स्टाफ को शपथ दिलाई। उन्होंने कहा कि अपने वोट का प्रयोग सोच समझकर करें। भारत एक लोकतांत्रिक देश है। यह देश लोगों की ओर से चुनी गई सरकार से चलता है। देश में केंद्र सरकार हो या किसी भी राज्य की, इसे लोग ही अपने वोट का इस्तेमाल करके ही बनाते हैं। वोट का अधिकार हमें बहुत ही संघर्ष के बाद मिला है। इसलिए देश के हर एक नागरिक का वोट डालना दायित्व बनता है। प्रत्येक मतदाता को अपने वोट का इस्तेमाल हर हालत में करना चाहिए। लेकिन वोट का इस्तेमाल भी सोच समझकर ही करना चाहिए। ऐसे प्रत्याशी को ही वोट किया जाना चाहिए, जो कि अपने हलके के विकास के लिए काम करे। लोगों के सुख दुख में शामिल हो। उनकी दिक्कतों को दूर कर सके। कभी भी मतदान का इस्तेमाल किसी के अंडर प्रैशर होकर या यारी दोस्ती के नाते नहीं करना चाहिए। यह चुनाव पांच साल के बाद ही आते हैं। गलत वोट का प्रयोग करके गलत प्रत्याशी का ही चयन होता है। जिसके लिए बाद में पांच साल तक पछताना पड़ता है। सूझ-बूझ के साथ ही वोट का प्रयोग करें। इस मौके पर आदर्श, अरविद, प्रियंका सिंह, दीपा कुमारी, अर्चना, श्वेता, मनीषा कुमारी, तुहिन दत्त, प्रमोद कुमार, संतोष, विष्णु कांत शुक्ला, सुशील रावत, संदीप शर्मा, मधु, सुनील कुमार, अंकित, कृष्ण, मनीष कुमार समेत अन्य स्टाफ मौजूद रहे।

कोन ब्लाक की तीन ग्राम पंचायतों में बंद मिला पंचायत भवन का निर्माण

सोनभद्र । जिला पंचायत राज अधिकारी विशाल सिंह ने कोन ब्लाक में निर्माणाधीन पंचायत भवन व सामुदायिक शौचालय का निरीक्षण किया। इस दौरान तीन ग्राम पंचायतों में पंचायत भवन का

निर्माण बंद पाया गया। इस पर डीपीआरओ ने कड़ी नाराजगी जाहिर की। उन्होंने ग्राम प्रधान व पंचायत सचिव को 15 दिन के अंदर कार्य पूर्ण कराने का निर्देश दिया। उन्होंने बरवाखाड़, खेतकटवा, मिश्री, चेरवाडीह, मझिगवां ग्राम पंचायतों में पंचायत भवन निर्माण व पंचायत सचिवालय स्थापना का औचक निरीक्षण किया। डीपीआरओ ने बताया कि खेतकटवा में आरजीएसए योजना के तहत पंचायत भवन निर्मित हो रहा है। छत पड़ गया है, लेकिन मौके पर कार्य बंद पाया गया। इसके लिए सचिव व प्रधान को पंचायत भवन को एक पक्ष में पूर्ण कराते हुये पंचायत सचिवालय की स्थापना कराने का निर्देश दिया। ग्राम पंचायत में निर्मित सामुदायिक शौचालय का भी निरीक्षण किया गया, जिसमें पाया गया कि सामुदायिक शौचालय अत्यधिक गंदगी थी। शौचालय प्रयोग योग्य नही था। संबंधित प्रधान एवं सचिव को निर्देशित किया गया कि सामुदायिक शौचालय साफ कराकर प्रतिदिन संचालित कराना सुनिश्चित करें। मिश्री ग्राम पंचायत में वित्त आयोग, मनरेगा कंवर्जेस से पंचायत भवन निर्मित हो रहा है। छत पड़ गया है, लेकिन मौके पर कार्य बंद पाया गया। यहां के ग्राम प्रधान व सचिव को भी 15 दिन में कार्य पूर्ण कराने का निर्देश दिया गया। चेरवाडीह में आरजीएसए योजना के तहत पंचायत भवन निर्मित हो रहा है। यहां छत पड़ गया है, लेकिन मौके पर कार्य बंद पाया गया। इसके लिए सचिव एवं प्रधान को पंचायत भवन को एक पक्ष में पूर्ण कराते हुये पंचायत सचिवालय की स्थापना हेतु निर्देशित किया गया। ग्राम पंचायत-मझिगवां में पंचायत भवन निर्माणाधीन है, छत पड़ गया है तथा मौके पर प्लास्टर का कार्य प्रारंभ किया जा रहा था। ग्राम पंचायत-मझिगवां में निर्मित सामुदायिक शौचालय का भी निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के समय सामुदायिक शौचालय पर पेंटिग का कार्य होता हुआ पाया गया। यहां का भी कार्य 15 दिन में पूर्ण कराने का निर्देश दिया गया। डीपीआरओ ने बताया कि बरवाखाड़ में पंचायत सचिवालय संचालित पाया गया। निरीक्षण के दौरान पंचायत सचिव, ग्राम प्रधान और सहायक विकास अधिकारी पंचायत मौके पर उपस्थित रहे।

मिलीभगत से रात हो या दिन चल रहा है खनन बैरियर का नया खेल

(आधुनिक समाचार सेवा)
अनिल कुमार अग्रहरी

डाला,सोनभद्र। जिलाधिकारी के निर्देशानुसार ओवरलोड को लेकर खनिज बैरियर फिर चालू किया गया ताकि अवैध खनन व ओवरलोड परिवहन पर अंकुश लगाया जा सके

लेकिन वही ड्यूटी में लगे अधिकारियों का नया खेल चालू हो गया।हम आपको वो तस्वीर दिखा रहे हैं जहाँ ओवरलोड बालू लदे वाहनों के खिलाफ बुधवार/ से शुक्रवार की पूरी रात चेकिंग अभियान चलता रहा और सुविधा शुल्क के साथ गाड़ियाँ अधिकारी के चेक पोस्ट मौजूदगी के दौरान निकलती रही दिन हो या रात चौकी क्षेत्र के बाडी मैं बने दो नंबर खनिज बैरियर पर जहाँ ओवरलोड गाड़ियों के आवागमन पर रोक लगाने को लेकर पुलिस ने सैकड़ो ओवरलोड बालू लदे वाहनों को पकड़ा। वही बुधवार / बृहस्पतिवार शुक्रवार को खनन विभाग व राजस्व विभाग के जिम्मेदार के नेतृत्व में ओवरलोड बालू की गाड़िया बैरियर की सेटिंग के दौरान बिना रोकटोक जाती रही। आपको बता दें कि गाडी पास कराने को लेकर एक सप्ताह पूर्व 6 नामजद और दश अज्ञात के खिलाफ मुकदमे भी किये गए थे लेकिन बैरियर बैठे जिम्मेदार लोगों खेल शुरू हो गया सुविधा शुल्क लेकर स्विफ्ट बाई स्विफ्ट किस कदर ओवरलोड परिवहनों को छोड़ा जा रहा यह खनन विभाग के लगे अधिकारियों पर सवालिया निशान खड़ा करता है।

चिकित्सक की लापरवाही से श्रमिक की मौत, स्वजनों का हंगामा

जिगना (मीरजापुर) । विध्याचल क्षेत्र के सेमरी गांव के समीप मीरजापुर-प्रयागराज मार्ग पर स्थित एक निजी अस्पताल में इलाज के दौरान श्रमिक की शुक्रवार को मौत के बाद स्वजन ने जमकर हंगामा किया। मौके पर पहुंची पुलिस ने उन्हें समझाने के बाद शव पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। मृतक के पुत्र ने इलाज में लापरवाही का आरोप लगाते हुए संबंधित चिकित्सक व स्वास्थ्यकर्मियों सहित अस्पताल संचालक के खिलाफ मुकदमा दर्ज करने को थाने में तहरीर दी है। क्षेत्र के गैपुरा चौकी अंतर्गत कोलाही गांव निवासी रमाशंकर विश्वकर्मा (47) के हाथ में दर्द होने पर उनका बेटा मुकेश शुक्रवार को उन्हें सेमरी गांव स्थित एक निजी अस्पताल में दिखाने ले गया था। वहां चिकित्सक द्वारा भर्ती कर लिया गया। पुत्र का आरोप है कि इलाज के दौरान इंजेक्शन लगाते ही हालत बिगड़ गई और कुछ ही देर में उनकी मौत हो गई। हालांकि स्वजन मंडलीय अस्पताल ले गए, जहां पर चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। मृतक को एक पुत्री व दो पुत्र मुकेश कुमार व रूपेश कुमार है।

जिले में 113 केंद्रों पर होगी माध्यमिक शिक्षा परिषद की परीक्षाएं

मीरजापुर । जिले में 113 केंद्रों पर माध्यमिक शिक्षा परिषद की परीक्षाएं होंगी। माध्यमिक शिक्षा परिषद ने वर्ष 2022 के लिए परीक्षा केंद्रों की सूची जारी किया है। इस वर्ष जनपद में 110 पुराने परीक्षा केंद्र तो तीन परीक्षा केंद्र नए बने है। इस वर्ष विष्णु चरण आदर्श इंटर कालेज कोटवां पहाड़ी, जनता जनार्दन इंटर कालेज तिलांव लालगंज और मदर टेरेसा इंटर कालेज हलिया को नया परीक्षा केंद्र बनाया गया है। परीक्षा के लिए आनलाइन निर्धारित किया गया है। इस वर्ष परीक्षा में 66097 छात्र-छात्राएं परीक्षा में शामिल होंगे।माध्यमिक शिक्षा परिषद की परीक्षा में कुल 66097 परीक्षार्थी शामिल हो रहे हैं। संस्थागत में 63,860 परीक्षार्थी है, इसमें 32,088 बालक और 31,772 बालिकाएं है, जबकि हाईस्कूल में 121 और इंटरमीडिएट में 2116 सहित 2237 व्यक्तिगत परीक्षार्थी भी परीक्षा देंगे। कोविड-19 के चलते वर्ष 2022 की परीक्षा में 6179 परीक्षार्थी कम हुए हैं। माध्यमिक शिक्षा परिषद की परीक्षा वर्ष 2022 में कक्षा 10 में 18206 बालक और 17246 बालिका सहित 35452 परीक्षार्थी पंजीकृत हैं।

भारत-वेस्टइंडीज के बीच दूसरा टी20 आज, जानिए कब और कहां देखें लाइव स्ट्रीमिंग

नई दिल्ली। भारतीय टीम वनडे सीरीज में वेस्टइंडीज का क्लीन स्वीप करने के बाद अब टी20 में भी जीत दर्ज करने के इरादे से उतरेगी। पहला मैच जीतने के बाद अब टीम इंडिया दूसरा मुकाबला अपने नाम कर सीरीज पर कब्जा करना चाहेगी। कोलकाता के ईडन गार्डन्स को तीनों ही टी20 मुकाबले की मेजबानी का जिम्मा दिया गया

है। पहला मैच भारत ने 6 विकेट से जीतकर 1-0 की बढ़त हासिस की थी। रोहित शर्मा की कप्तानी में टीम लगातार तीसरे क्लीन स्वीप पर नजर बनाए हुए है। न्यूजीलैंड के खिलाफ घर पर खेली टी20 सीरीज में टीम ने यह कमाल किया था। इसके बाद वनडे में वेस्टइंडीज का सूपड़ा साफ किया अब टी20 सीरीज में भी टीम का इरादा ऐसे ही नतीजे हासिल करने का है। इस मैच के शुरू होने से पहले जान लीजिए इससे जुड़ी अहम बातें। कब खेला जाएगा भारत और वेस्टइंडीज के बीच दूसरा टी20 मैच भारत और वेस्टइंडीज के बीच सीरीज का दूसरा टी20 मुकाबला 18 फरवरी शुक्रवार को खेला जाएगा। कहां खेला जाएगा भारत और वेस्टइंडीज के बीच दूसरा टी20 मैच भारत और वेस्टइंडीज के बीच दूसरा टी20 मुकाबला कोलकाता के इडेन गार्डन्स स्टेडियम में खेला जाएगा। कितने बजे खेला जाएगा भारत और वेस्टइंडीज के बीच दूसरा टी20 मैच ?भारत और वेस्टइंडीज के बीच दूसरे टी20 भारतीय समय के मुताबिक शाम 7.00 बजे शुरू होगा। कितने बजे होगा भारत और वेस्टइंडीज के बीच दूसरे टी20 मैच में टास भारत और वेस्टइंडीज के बीच मुकाबले में टास मैच से आधे घंटे 6.30 बजे किया जाएगा। कहां देखा जा सकेगा भारत और वेस्टइंडीज के बीच दूसरे टी20 का सीधा प्रसारण भारत और वेस्टइंडीज के बीच होने वाले दूसरे टी20 का सीधा प्रसारण स्टार नेटवर्क के स्पोर्ट्स चैनल पर देखा जा सकेगा। स्टार स्पोर्ट्स, स्टार स्पोर्ट्स एचडी, स्टार स्पोर्ट्स 1 और स्टार स्पोर्ट्स 1 एचडी पर देखा जा सकेगा। मैच की लाइव स्ट्रीमिंग हाट स्टार पर देख सकते हैं। इसके अलावा मैच से जुड़ी पल पल की खबर के लिए दैनिक जागरण वेबसाइट पर जा सकते हैं।

शतक ठोक अजिंक्य रहाणे ने दिया आलोचकों को जवाब, टेस्ट टीम में चयन का रास्ता साफ

नई दिल्ली। भारतीय टेस्ट टीम से खराब प्रदर्शन की वजह से बाहर होने की कगार पर पहुंचे अजिंक्य रहाणे ने धमाकेदार पारी खेली है। रणजी ट्राफी के नए

सीजन के पहले ही मुकाबले में उन्होंने दमदार शतक जमाया। साउथ अफ्रीका में खेली गई सीरीज में लचर प्रदर्शन के बाद उनके उपर टीम से बाहर होने की तलवार लटक रही थी। रणजी ट्राफी में सौराष्ट्र के खिलाफ पहला मैच खेलने उतरे मुंबई के इस बल्लेबाज ने मुश्किल में शानदार शतक जमाया। आस्ट्रेलिया में भारतीय टीम के टेस्ट सीरीज के नायक रहे अजिंक्य की उप कप्तानी साउथ अफ्रीका सीरीज से पहले छीन ली गई। उनको खराब प्रदर्शन की वजह से बाहर करने पर विचार किया जा रहा है। ऐसे में रणजी के पहले मुकाबले में शतकीय पारी खेलकर इस बल्लेबाज ने अगले महीने श्रीलंका के खिलाफ होने वाली घरेलू टेस्ट सीरीज के लिए दावेदारी मजबूत कर ली है। रहाणे ने शानदार बल्लेबाजी करते हुए मुंबई की टीम को शुरुआती लगे झटकों से उबारा। तीन शुरुआती विकेट गिरने के बाद रहाणे ने सरफराज के साथ मिलकर विकेट संभाला और स्कोर भी आगे बढ़ाया। 103 गेंद पर 10 चौके की मदद से रहाणे ने अपने 50 रन पूरे किए। इसके बाद पारी को आगे बढ़ाया और संयम से शतक जमाया।

अनसोल्ड रहने पर अरोन फिंच को नहीं हुआ आश्चर्य, बताया क्यों नहीं खरीदे गए

मेलबर्न। आस्ट्रेलिया के लिमिटेड ओवर क्रिकेट में कप्तान आरोन फिंच ने कहा कि वह आइपीएल में खेलना चाहते थे। गौरतलब है कि मेगा आक्शन में किसी भी फ्रेंचाइजी ने उन्हें नहीं चुना। हालांकि, उन्होंने यह भी कहा कि वे अनसोल्ड रहने से आश्चर्य

में नहीं हैं। 85 आइपीएल मैचों में आठ फ्रेंचाइजियों का प्रतिनिधित्व करते हुए फिंच ने 25.71 की औसत से 2005 रन बनाए हैं, जिसमें 14 अर्धशतक शामिल हैं। फिंच आखिरी बार टूर्नामेंट के 2020 संस्करण में रायल चैलेंजर्स बैंगलोर के लिए खेले थे और सीजन समाप्त होने के बाद फ्रेंचाइज़ी ने रिलीज कर दिया था। आइपीएल 2021 से पहले नीलामी में वह अनसोल्ड रह गए थे। हालांकि, पिछले साल उनकी कप्तानी में कंगारू टीम साल 2021 में आइसीसी टी-20 वर्ल्ड कप जीती थी। आइपीएल में अनसोल्ड रहने पर फिंच ने सेन ड्वेन वर्ल्ड शो में कहा, 'इसमें कोई शक नहीं कि मुझे खेलना अच्छा लगता लेकिन जहां तक भारतीय फ्रेंचाइजियों की बात है तो वहां बहुत सारे शीर्ष क्रम के खिलाड़ी हैं जो वास्तव में अच्छा कर सकते हैं। घरेलू या अंतरराष्ट्रीय स्तर दुनियाभर की टीमों को नंबर पांच, छह और सात (वास्तविक पावर हिटर) की कमी खल रही है। मुझे आश्चर्य नहीं हुआ। मैं वहां रहना पसंद करता, लेकिन मैंने वहां 10 साल दिए है, जिसके लिए मै आभारी हूं। फिंच ने आगे महसूस किया कि पांच, छह और सातवें नंबर पर बल्लेबाजों की मांग ऐसी थी कि उन्होंने 2022 सीजन से पहले किसी भी आइपीएल टीम ने साइन नहीं किया। उन्होंने कहा कि इनकी शायद पहले की तुलना में थोड़ी अधिक मांग रही है क्योंकि टीमों को पावर हिटिंग के महत्व को समझना शुरू कर रही है। टी 20 में अंत में सिर्फ बाउंड्री हिटिंग विकल्प होता है। बता दें कि आस्ट्रेलियाई टीम इस समय श्रीलंका से टी-20 सीरीज खेल रही है। फिंच की अगुवाई वाली टीम 3-0 की अजेय बढ़त बना ली है।

तीसरे वनडे मैच में स्मृति मंधाना और हरमनप्रीत कौर पर रहेगी निगाह

क्वींसटाउन। एक और सीरीज हारने की कगार पर पहुंची भारतीय महिला क्रिकेट टीम का बल्लेबाजी क्रम शुक्रवार को न्यूजीलैंड के खिलाफ तीसरे वनडे में स्टार सलामी बल्लेबाज स्मृति मंधाना की वापसी से मजबूत होगा। आइसीसी की साल की सर्वश्रेष्ठ महिला

खिलाड़ी मंधाना अनिवार्य क्वारंटाइन से गुजरने के बाद दूसरे वनडे से पहले टीम के साथ जुड़ गई थीं, लेकिन मैच के लिए तैयार होने के लिए उन्हें कुछ दिन के समय की जरूरत थी। क्वारंटाइन पूरा करने के बाद रेनुका सिंह और मेघना सिंह की तेज गेंदबाजी जोड़ी भी चयन के लिए उपलब्ध होगी। गर्दन में जकड़न के कारण दूसरे मैच से बाहर रही अनुभवी तेज गेंदबाज झूलन गोस्वामी के शुक्रवार को खेलने की उम्मीद है। मंधाना की वापसी से बल्लेबाजी क्रम मजबूत होगा, लेकिन भारत ने दूसरा वनडे बल्लेबाजी नहीं बल्कि गेंदबाजी के कारण गंवाया था। गेंदबाजों ने काफी निराश किया था क्योंकि वे 271 रन के मजबूत लक्ष्य का बचाव करने में नाकाम रहीं थी। टी-20 कप्तान हरमनप्रीत कौर 2017 विश्व कप से वनडे मैचों में सिर्फ दो बार 50 से अधिक रन बना पाई है और टीम को उनसे बड़ी पारी की उम्मीद है। पूर्व भारतीय कप्तान डाइना इडुल्जी का कहना है कि हरनमप्रीत कौर 2017 विश्व कप में खेली 171 रन की पारी की बदौलत टीम में बनी नहीं रह सकती और समय आ गया है कि उन्हें न्यूजीलैंड के खिलाफ तीसरे वनडे मुकाबले से बाहर कर दिया जाए। इडुल्जी ने कहा, 'जेमीमा रोड्रिग्ज को बाहर करने के लिए जिस मापदंड का इस्तेमाल किया गया, वही मापदंड हरमनप्रीत पर भी लागू होना चाहिए। मैं उससे काफी निराश हूं। वह मेरी पसंदीदा खिलाड़ी थीं, लेकिन आप सिर्फ एक पारी के आधार पर टीम में बने नहीं रह सकते। वह बड़ा स्कोर बनाने से सिर्फ एक पारी दूर है, लेकिन प्रयास दिखने चाहिए।'

यश ढुल के अलावा इस बल्लेबाज ने लगाया डेब्यू पर शतक, किशन सिंघा ने ली सत्र की पहली हैट्रिक

गुवाहाटी। भारत के अंडर-19 विश्व कप विजेता कप्तान यश ढुल ने सीनियर क्रिकेट में पदार्पण करते हुए तमिलनाडु के खिलाफ रणजी ट्राफी ग्रुप-एच मैच के पहले दिन शतक जमाया, जिसकी मदद से दिल्ली ने सात विकेट पर 291 रन बनाए।अपने पहले प्रथम श्रेणी मैच में पारी की शुरुआत करते हुए ढुल ने 150 गेंद में 18 चौकों की मदद से 113 रन बनाए। उन्होंने दिल्ली की पारी को संभाला क्योंकि संदीप वारियर ने ध्रुव शौरी (1) और युवा हिम्मत सिंह (0) को जल्दी आउट कर दिया था। ढुल ने आइपीएल विशेषज्ञ नीतीश राणा (25) के साथ 60 रन की साझेदारी की और फिर भारत के पूर्व अंडर-19 कप्तान जोंटी सिद्धू (71) के साथ चौथे विकेट के लिए 119 रन जोड़े। ढुल को 97 के स्कोर पर जीवनदान भी मिला, जब एम मुहम्मद ने शार्ट मिडविकेट पर उन्हें कैच लपकवाया लेकिन रिप्ले से पता चला कि वह नोबाल थी। ढुल को मुहम्मद ने ही एलबीडब्लयू आउट किया, जिसके बाद सिद्धू भी नहीं टिक सके। दिल्ली ने सात विकेट 253 रन पर गंवा दिए। ललित यादव 45 और सिमरजीत सिंह 16 रन बनाकर खेल रहे हैं। कोलकाता रणजी ट्राफी के इस सत्र की पहली हैट्रिक मणिपुर के बायें हाथ के स्पिनर एल किशन सिंघा ने लगाई। प्लेट के मैच में पहले ही दिन यहां सिंघा ने अरुणाचल प्रदेश के खिलाफ हैट्रिक लगाकर चमक बिखेरी। प्रथम श्रेणी क्रिकेट में पदार्पण कर रहे सिंघा ने 11 ओवर में 11 रन देकर चार विकेट चटकाए। इसमें छह मेडन ओवर भी शामिल थे। सिंघा ने मैच के 49वें ओवर की अंतिम दो गेंदों पर अरुणाचल के कमशा यंगफो और अखिलेश साहनी को बोल्ड किया और फिर अपने अगले ओवर की पहली गेंद पर सूरज तयाम का विकेट लेकर हैट्रिक पूरी की। सिंघा के प्रदर्शन के आगे अरुणाचल की पहली पारी

119 रनों पर सिमट गई। मणिपुर ने पहले दिन का खेल खत्म होने तक एक विकेट पर 95 रन बना लिए थे।रोहतक, अपने पदार्पण मैच में नाबाद 165 रन बनाने वाले सलामी बल्लेबाज पवन शाह की पारी के दम पर महाराष्ट्र ने रणजी ट्राफी एलीट के मैच के पहले दिन गुरुवार को असम के खिलाफ पांच विकेट पर 278 रन बनाए। उन्होंने अपनी 275 गेंद की पारी में 15 चौके और एक छक्का लगाया बीसीसीआइ सचिव जय शाह ने कहा, 'इस दिन का बेसब्री से इंतजार था, भारतीय क्रिकेट के शीर्ष घरेलू टूर्नामेंट रणजी ट्राफी ने वापसी की है। हमारे प्रथम श्रेणी क्रिकेट को वापस पटरी पर लाने के लिए पर्दे के पीछे काफी प्रयास किए गए और अब समय आ गया है कि लाल गेंद का क्रिकेट आकर्षण बने। सभी को शुभकामनाएं।' उत्तर प्रदेश ने रोहतक में ग्रुप-जी के मैच में विदर्भ के खिलाफ सात विकेट पर 268 रन बनाए। अक्षदीप नाथ ने 91 और रिंकू सिंह ने 65 रन की पारी खेली। विदर्भ के लिये उमेश यादव और आदित्य ठाकरे ने दो-दो विकेट लिए। पारस डोगरा के शतक से पुडुचेरी ने चेनन्ई में गरुप-सी के मैच में जम्मू-कश्मीर के खिलाफ छह विकेट पर 309 रन बनाए। जम्मू-कश्मीर के होनहार तेज गेंदबाज उमरान मलिक ने 79 रन देकर तीन विकेट लिए। झारखंड की टीम गुवाहाटी में गरुप-एच के मैच में छत्तीसगढ़ के खिलाफ 169 रन पर आउट हो गई। छत्तीसगढ़ के अजय मंडल ने 47 रन देकर चार विकेट लिए। जवाब में छत्तीसगढ़ ने चार विकेट पर 135 रन बना लिए। बाबुल कुमार (नाबाद 123) और एस गनी (नाबाद 136) के शतकों की बदौलत बिहार ने कोलकाता में प्लेट गरुप के मैच में मिजोरम के खिलाफ पहले दिन का खेल खत्म होने तक तीन विकेट खोकर 325 रन बना लिए है। दोनों के बीच तीसरे विकेट के लिए नाबाद 254 रनों की साझेदारी हो चुकी है। इशान पोरेल के चार विकेट की मदद से बंगाल के तेज गेंदबाजों ने कटक में गरुप-बी के मैच के पहले दिन बड़ौदा को 181 रन पर समेट दिया। जवाब में बंगाल ने एक विकेट पर 24 रन बना लिए थे।चंडीगढ़ के खिलाफ कटक में गरुप-बी के मैच में हैदराबाद ने सात विकेट पर 270 रन बनाए। हनुमा विहारी ने 59 और प्रतीक रेड्डी ने 36 रन का योगदान दिया। चंडीगढ़ के लिए जगजीत सिंह ने तीन विकेट लिए। शुभम शर्मा के 92 रन की बदौलत मध्य प्रदेश ने राजकोट में गरुप-ए के मैच के पहले दिन गुजरात के खिलाफ सात विकेट पर 235 रन बनाए। हिमाचल प्रदेश ने कप्तान अंकित कल्सी (88) आकाश वशिष्ठ (नाबाद 78) और राघव धवन (73) के अर्धशतकों से खराब शुरुआत से उबरते हुए गुरुवार को दिल्ली में पंजाब के खिलाफ एलीट गरुप-एफ के मैच के पहले दिन छह विकेट पर 324 रन बनाएहरियाणा ने यशु शर्मा (नाबाद 101) के शतक से दिल्ली में गरुप-एफ के मैच में त्रिपुरा के खिलाफ चार विकेट पर 327 रन बनाकर अपना पलड़ा भारी रखा।

अपने बेटे का मैच नहीं देखना चाहते सचिन तेंदुलकर, बताई क्या है इसकी वजह

मुंबई। इंटरनेशनल क्रिकेट के महानतम बल्लेबाजों में शुमार सचिन तेंदुलकर अपने बेटे अर्जुन के क्रिकेट के बेहतर होते देखना चाहते हैं लेकिन उनके मुकाबलों को नहीं

देखते। मास्टर ब्लास्टर ने इस बात को साझा किया है कि उनका बेटा जब किसी मैच में खेलने उतरता है तो वह उसे नहीं देखते। इस साल आइपीएल के 15वें सीजन के लिए की गई मेगा आक्शन में अर्जुन को मुंबई इंडियंस ने खरीदा। भारतीय टीम के पूर्व बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर ने अपने बेटे अर्जुन तेंदुलकर का मैच नहीं देखने के सवाल पर कहा कि वह चाहते हैं कि अर्जुन को इस खेल से प्यार करने की आजादी मिले। अर्जुन फिलहाल मुंबई की रणजी टीम का हिस्सा हैं और उन्हें आइपीएल की मेगा नीलामी में मुंबई इंडियंस ने 30 लाख रूपये में खरीदा था।सचिन ने कहा, माता-पिता जब अपने बच्चे को खेलते हुए देखते हैं तो इससे उन पर दबाव बढ़ता है, इसलिए मैं अर्जुन को खेलते हुए नहीं देखता। मैं चाहता हूं कि उसे क्रिकेट से प्यार करने की आजादी मिले और अर्जुन उस चीज पर ध्यान केंद्रित करे जो वह करना चाहता है। उसे अपने खेल पर ध्यान लगाना है। जैसे कि मैं नहीं चाहता था कि कोई मुझे देखे। अगर मैं उसका खेल देखने जाऊंगा भी तो कहीं छिप जाऊंगा। अर्जुन को पता नहीं चलेगा कि मैं वहां हूं। उन्होंने कहा, हम लोगों में से किसी ने अर्जुन को क्रिकेट खेलने के लिए बाध्य नहीं किया। वह फुटबाल खेलता था और फिर उसे शतरंज खेलना पसंद आया। क्रिकेट उसके जीवन में बाद में आया। गौलतलब है कि सचिन बेटे की गेंदबाजी में बेहतर प्रशिक्षण के लिए उनको इंग्लैंड ले गए थे। अर्जुन ने इंग्लैंड क्रिकेट टीम के बल्लेबाजों को नेट्स में काफी गेंदबाजी भी है। तेज रफ्तार गेंद पर एक बार इंग्लैंड के विकेटकीपर बल्लेबाज जोस बटलर चोटिल भी हुए थे।

रेलवेज के खिलाफ मनीष पांडे की तूफानी बल्लेबाजी, 83 गेंदों पर 9 चौकों और 4 छक्कों की मदद से जड़ा शतक

नई दिल्ली। कर्नाटक के कप्तान मनीष पांडे ने रेलवेज के खिलाफ रणजी ट्राफी 2022 के इलीट गरुप सी मैच में शानदार शतकीय पारी खेली। महज 83 गेंदों पर नौ चौकों और चार छक्कों की मदद से अपने फर्स्ट क्लास शतक जमाया है। दोनों को बीच 267 रनों की साझेदारी हुई। 110 रन पर तीन विकेट गिरने के बाद मैदान पर उतरे मनीष ने शुरुआत ने रेलवेज के गेंदबाजों की जमकर खबर ली और खूब चौके-छक्के बरसाए और तूफानी शतक जमाया।

करियर का 20वां शतक जड़ने वाले इस बल्लेबाज ने 121 गेंदों पर 156 रनों की पारी खेली। इस दौरान उन्होंने 12 चौके और 10 छक्के लगाए। कृष्णमूर्ति सिद्धार्थ से उन्हें अच्छा साथ मिला। सिद्धार्थ ने भी रेलवेज ने टास जीतकर कर्नाटक को पहले बैटिंग का न्योता दिया। मनीष पांडे की अगुवाई वाली टीम की ओर से मयंक अग्रवाल और देवदत्त पड्डीकल ओपनिंग करने उतरे। टीम को पहला झटका मयंक के तौर पर लगा। वह 16 रन बनाकर रन आउट हुए। तब टीम का स्कोर 27 रन था। इसके बाद दूसरा झटका पड्डीकल के तौर पर 50 रन पर लगा। वह 21 रन बनाकर तेज गेंदबाज युवराज सिंह की गेंद पर आउट हुए। टीम का स्कोर जब 110 रन था तब रविकुमार समर्थ 47 रन बनाकर पवेलियन लौट गए। उन्हें अविनाश यादव ने आउट किया इसके बाद कर्नाटक के कप्तान मनीष पांडे मैदान पर उतरे और सिद्धार्थ के मिलकर टीम को संभाला। वह शुरुआत से ही गेंदबाजों पर हावी दिखे। दाएं हाथ के 32 वर्षीय इस बल्लेबाज ने महज 46 गेंदों पर चार छक्कों की मदद से अर्धशतक जमा दिया था। वहीं एक अन्य के पूर्व उपकप्तान अजिंक्य रहाणे ने शानादार शतक जड़ा। उनका बल्ला काफी समय से खामोश चल रहा था। ऐसे में सौराष्ट्र के खिलाफ मैच में मुंबई के इस बल्लेबाज ने शतक जड़कर आलोचकों को करारा जवाब दिया। वहीं अंडर-19 वर्ल्ड कप विजेता टीम के कप्तान यश ढुल ने अपने रणजी ट्राफी डेब्यू मैच में शतक जड़ा।

कीरोन पोलार्ड ने टी-20 इंटरनेशनल में रचा इतिहास

नई दिल्ली। वेस्टइंडीज के कप्तान कीरोन पोलार्ड शुक्रवार को कोलकाता के ईडन गार्डेस में भारत के खिलाफ दूसरे टी 20 इंटरनेशल

मैच में टास के लिए आने के साथ ही 100 टी 20 खेलने वाले देश के पहले खिलाड़ी बन गए। वह विश्व क्रिकेट में यह उपलब्धि हासिल करने वाले 9वें खिलाड़ी हैं। पाकिस्तान के शोएब मलिक 124 मैचों के साथ सूची में शीर्ष पर हैं, जबकि टीम इंडिया के कप्तान रोहित शर्मा दूसरे नंबर पर हैं। वह पाकिस्तान के खिलाड़ी से सिर्फ 3 मैच पीछे हैं। वेस्टइंडीज क्रिकेट टीम की बात करें तो कीरोन पोलार्ड के बाद सबसे ज्यादा टी-20 मैच बाएं हाथ के बल्लेबाज डैरेन ब्रावो ने खेला है। उन्होंने 91 मैचों में टीम का प्रतिनिधित्व किया है। वहीं इस फार्मेट के सबसे महान बल्लेबाजों में एक क्रिस गेल ने केवल 79 टी 20 मैच खेले हैं। पोलार्ड ने अबतक अपने टी-20 करियर में 1561 रन बनाए हैं और 42 विकेट लिए हैं। यह रिकार्ड इस बात के गवाह हैं कि वह क्रिकेट के सबसे छोटे प्रारूप में बेहतरीन आलराउंडरों में से एक है। भारत और वेस्टइंडीज के बीच दूसरे टी 20 से पहले कीरोन पोलार्ड को टीम ने सम्मानित किया। इस दौरान जेसन होल्डर ने अपने कप्तान को 100वें टी 20 इंटरनेशनल से पहले कैप दी और निकोलस पूरन ने उन्हें जर्सी सौंपी। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड ने वेस्टइंडीज के कप्तान को सोशल मीडिया पर बधाई दी।

राशिफल

मेष-: आज कोई लेन-देन सोच-समझकर करें। एक तरफा प्यार आपको निराश कर सकता है। नई योजनाएं आकर्षक होंगी और अच्छी आमदनी का जरिया साबित होंगी।

वृष-: आज भाग्य आपका साथ देगा। दांपत्य जीवन सुखमय रहेगा। कार्यक्षेत्र में आज आपको दो गुना लाभ मिलने की संभावना है। निवेश करने से पहले अच्छी तरह सोच-विचार कर लें तो बेहतर होगा।

मिथुन-: जीवनसाथी के मामले में बेवजह की टांगें लगाने से बचें. बेहतर होगा कि आप अपना खुद का व्यवसाय रखें। हस्तक्षेप कम से कम करें, अन्यथा यह निर्भरता का कारण बन सकता है।

कर्क-: आज के दिन किसी काम की तैयारी और शुरुआत करने से पहले तर्क की परीक्षा को गंभीरता से लेना सही रहेगा. संतान पक्ष से सहयोग की कमी रहेगी।

सिंह-: आज आपके परिवार में खुशियों की वृद्धि होगी. संतान की शिक्षा में उन्नति संभव है। माता-पिता का स्वास्थ्य आज बहुत अच्छा रहेगा। उनसे भी आपको पूरा सहयोग मिलने की उम्मीद है

कन्या-: आज का दिन विशेष है, क्योंकि अच्छा स्वास्थ्य आपको कुछ असाधारण कार्य करने की क्षमता देगा. आज आप ऊर्जा से भरे रहेंगे और यह संभव है कि अचानक आपको अनदेखा लाभ प्राप्त होगा।

तुला-: आज आपको शैक्षणिक कार्यों में सफलता मिलेगी. आज का दिन मौज-मस्ती और आनंद से भरा रहेगा क्योंकि आप जीवन को पूरी तरह से जीएंगे।

वृश्चिक-: छात्रों को सफलता के लिए थोड़ी अधिक मेहनत करनी पड़ेगी. आपकी मेहनत भी रंग लाएगी। घर में सुख-सुविधाओं से जुड़ा कुछ नया सामान खरीदने की भी संभावना है।

धनु-: घृणा को दूर करने के लिए संवेदनशीलता का स्वभाव अपनाएं, क्योंकि घृणा की आग बहुत शक्तिशाली होती है और शरीर के साथ-साथ मन को भी प्रभावित करती है

मकर-: आज आप अपने कार्य संबंधी यात्रा की तैयारी करेंगे. यह यात्रा आपको सफलता दिलाएगी। आज आप नई योजनाएँ बनाएंगे। धन प्राप्ति संभव है।

कुंभ-: आज का दिन अच्छा रहेगा. आज किसी नए प्रोजेक्ट में अपनी ऊर्जा लगाएं, आपको दोगुना लाभ होगा। यदि आप सरकारी अधिकारी हैं तो आपके तबादले का योग बन रहा है।

मीन-: आज आप जीवन का आनंद लेने के लिए खुद को सहज और सही मूड में पाएंगे। दिन के दूसरे भाग में आर्थिक लाभ होगा। अपनी गोपनीय जानकारी अपने जीवनसाथी के साथ साझा करने से पहले अच्छी तरह सोच लें।

सम्पादकीय

दुनिया में वही समाज आगे बढ़ता है, जो समय के साथ प्रतिगामी प्रथाओं का परित्याग करता है

कर्नाटक के उडुपी शहर के एक सरकारी स्कूल से उभरे हिजाब विवाद को इस रूप में पेश करने के लिए अतिरिक्त मेहनत और शरारत की जा रही है कि भारत में मुस्लिम अल्पसंख्यकों पर आफत आ गई है। जिन दिनों यह विवाद सुलग रहा था, उन्हीं दिनों यानी इसी 4 फरवरी को सुप्रीम कोर्ट की ओर से दिए गए एक फैसले का संज्ञान लेना इसलिए आवश्यक है, क्योंकि एक तो वह देश के सबसे लघु या कहें कि सूक्ष्म अल्पसंख्यक वर्ग-पारसी समुदाय से जुड़ा है और दूसरे इसलिए भी कि उससे यह पता चलता है कि परिपक्व एवंप्रगतिशील समाज किस तरह देश, काल और परिस्थितियों के हिसाब से अपनी पुरातन-प्रतिगामी परंपराओं में परिवर्तन करता है। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में पारसी समुदाय की आबादी करीब 57 हजार है। 1941 में उनकी आबादी 1.14 लाख थी। पारसियों की आबादी तेजी से बढ़े, इसके लिए भारत सरकार का अल्पसंख्यक मंत्रालय 'जियो पारसी' नाम से एक योजना चला रहा है। इस योजना के चलते 2020 में जब यह आंकड़ा सामने आया कि पारसी समुदाय में 61 बच्चों का जन्म हुआ तो इसे एक उपलब्धि माना गया, लेकिन आज विषय यह नहीं कि यह योजना कितनी प्रभावी है विषय यह है कि जब कोरोना से जान गंवाने वालों के अंतिम संस्कार को लेकर प्रोटोकाल जारी हुआ तो मुख्यतः महाराष्ट्र और गुजरात में सीमित पारसी समुदाय के सामने संकट खड़ा हो गया। इसलिए खड़ा हो गया, क्योंकि यह समुदाय अपने लोगों के शव को एक ऊंची मीनार की छत पर रख देता है ताकि कौए, गिद्ध आदि उसका भक्षण कर लें और जो अवशेष रहे, वह सूर्य की गर्मी से सूख जाए। इस तरह की मीनार को 'टावर आफ साइलेंस' कहते हैं। कोरोना काल में यह खतरा उभर आया कि अगर कोविड से मरे किसी पारसी के शव को पक्षी खाएंगे तो वे संक्रमण फैलाएंगे। इसलिए गुजरात प्रशासन ने इस पर रोक लगा दी। पारसी समाज के लोग गुजरात हाईकोर्ट गए। वहां से उन्हें राहत नहीं मिली तो वे सुप्रीम कोर्ट आए, बिना यह शोर मचाए कि उन पर जुल्म हो रहा है या उनकी परंपराओं को खत्म करने की साजिश हो रही है। कोई पारसी न तो सड़कों पर उतरा, न किसी ने मुस्लिम नेताओं और मौलानाओं की तरह यह कहा कि हमारी परंपरा में हस्तक्षेप हुआ तो हम बर्दाश्त नहीं करेंगे और न ही यह जिद की कि फैसला हमारे धर्मग्रंथ के हिसाब से ही हो। सुप्रीम कोर्ट में मामले की सुनवाई के दौरान सालिसिटर जनरल को समस्या का कोई समाधान निकालने की जिम्मेदारी सौंपी गई। उन्होंने पारसी समुदाय के लोगों से बात की और फिर उनकी सहमति से यह तय किया कि यदि उनके समाज का कोई व्यक्ति कोरोना से मरता है तो उसका शव टावर आफ साइलेंस पर तो रखा जाएगा, लेकिन टावर की ऊपरी सतह पर लोहे की एक जाली लगा दी जाएगी, ताकि पक्षी शव तक न पहुंच सकें। कायदे से देखें तो समस्या समाधान का यह उपाय पारसी समुदाय की सदियों पुरानी परंपरा में परिवर्तन का वाहक बना, लेकिन इस समुदाय ने हालात को समझते हुए इस बदलाव को स्वीकार कर लिया। सुप्रीम कोर्ट ने पारसी समुदाय की सराहना करते हुए मामले का निस्तारण कर दिया। देश इस सबसे इसलिए अनभिज्ञ सा रहा, क्योंकि न तो इंटरनेट मीडिया पर पारसी समुदाय के लोगों ने कोई अभियान छेड़ा और न ही एकाध लोगों को छोड़कर किसी ने यह कहा कि उनके संविधान प्रदत्त अधिकारों का हनन हो रहा है। दुनिया का कोई समाज ऐसा नहीं, जो प्रतिगामी या आज के युग की प्रतिकूल परंपराओं से न बंधा हो, लेकिन ज्यादातर समुदाय ऐसी परंपराओं को छोड़ रहे हैं। हिंदू समाज घूंघट प्रथा से करीब-करीब मुक्त हो रहा है। अभी चंद दिनों पहले राजस्थान के मुख्यमंत्री के सलाहकार एवं विधायक संयम लोढ़ा ने घोषणा की कि उनकी विधानसभा की जिस ग्राम पंचायत में एक भी महिला घूंघट नहीं करेगी, उसे 25 लाख का पुरस्कार दिया जाएगा। यह बात और है कि राहुल और प्रियंका ने हिजाब की पैरवी करना पंसद किया। शायद उन्होंने शाहबानो मामले में अपने पिता की गलती से कोई सबक नहीं सीखा। उनकी मर्जी। बात पारसी समुदाय की हो रही थी। पारसियों में यह प्रथा भी है कि यदि कोई पारसी लड़की अन्य समुदाय के किसी व्यक्ति से विवाह कर ले तो वह समाज का हिस्सा नहीं रह जाती। वास्तव में पारसियों की आबादी में कमी का एक कारण यह परंपरा भी है। समुदाय से बाहर विवाह करने वाली पारसी लड़कियों को अपने माता पिता के अंतिम संस्कार में शामिल होने की भी अनुमति नहीं दी जाती।

हिजाब की आड़ में सुनियोजित साजिश इसका सुबूत है कि मोदी विरोधी उनके खिलाफ किसी भी हद तक जा सकते हैं

कर्नाटक के उडुपी से उठा हिजाब विवाद एक तरह से अंतरराष्ट्रीय रूप ले चुका है। जो दुनिया इससे पहले हिजाब से मुस्लिम महिलाओं को मुक्ति दिलाने का अभियान चला रही थी, उसे अचानक याद आया कि अरे हिजाब तो इस्लाम का अनिवार्य हिस्सा है। हिजाब इस्लाम का अनिवार्य हिस्सा हो या न हो, लेकिन मोदी सरकार को अस्थिर करने के षड्यंत्र का हिस्सा तो है ही। पिछले ढाई साल में यह तीसरी कोशिश है। मोदी देश में तो अपने राजनीतिक विरोधियों की आंखों की किरकिरी बने ही हुए हैं, अंतरराष्ट्रीय समुदाय के एक हिस्से को भी वह रास नहीं आ रहे हैं। ये दोनों मोदी विरोधी ताकतें मिल गई हैं। दोनों का लक्ष्य एक ही है कि या तो मोदी कमजोर हों और उनके अनुसार चलें या फिर सत्ता से बाहर हो जाएं। चूंकि मोदी के खिलाफ कोई प्रभावी मुद्दा मिल नहीं रहा, इसलिए भारतीय जनतंत्र को एक अंधेरी गली में धकेलने का प्रयास हो रहा है, जहां अराजकता का बोलबाला हो। मोदी को पता था कि पहली कोशिश सैन्य ताकत के जरिये होगी यानी सीमा पर दबाव बनाकर। इसलिए प्रधानमंत्री बनने के बाद से ही वह युद्धस्तर पर सेना को सुसज्जित करने और रक्षा उत्पादन के मामले में भारत को आत्मनिर्भर बनाने के अभियान में जुट गए। इसके बाद मोदी विरोधियों की ओर से दूसरा रास्ता अपनाया गया-अराजकता और सांप्रदायिकता का। अराजकता के लिए पहला मुद्दा चुना गया नागरिकता संशोधन कानून यानी सीएए के विरोध का। मोदी विरोधी ताकतों की ओर से

अयोध्या मामले में सुप्रीम कोर्ट के फैसले और जम्मू-कश्मीर में अनुच्छेद 370 को निष्प्रभावी करने पर भी विचार हुआ, लेकिन शायद लगा कि इन दोनों मुद्दों पर कामयाबी कठिन होगी। दोनों ही मुद्दे दशकों से लोगों के मानसपटल पर थे और भाजपा के मूल मुद्दे रहे हैं। इसलिए सीएए का मुद्दा चुना गया। पूरी तैयारी करके दिल्ली में पहले अराजकता पैदा की गई, फिर दंगा कराया गया। इसके बाद कथित किसान आंदोलन के बहाने एक और कोशिश हुई। गणतंत्र दिवस पर लाल किले पर जो कुछ हुआ, वह सिर्फ और सिर्फ केंद्र सरकार के संयम के कारण भयानक त्रासदी में नहीं बदला। प्रधानमंत्री ने अपनी छवि पर धक्का लगने का जोखिम उठाकर भी उसे निपटा दिया। अफसोस की बात यह रही कि दोनों मुद्दों पर देश की सर्वोच्च अदालत अराजक तत्वों से सहमी हुई नजर आई। अब तीसरा वार हिजाब के नाम पर हो रहा है। इसके पीछे वही मानसिकता है, जिसने अकबर को सहिष्णु और शिवाजी को असहिष्णु बना दिया। हिजाब के बहाने हिंदुओं को असहिष्णु और मुसलमानों को पीड़ित बताया जा रहा है। जो तत्व यह सब कर रहे हैं, वे देश को जोड़ने की हर कोशिश के प्रति संदेह का माहौल बनाते हैं और तोड़ने वाले हर काम को कभी पंथनिरपेक्षता और कभी अल्पसंख्यकों के अधिकारों की चिंता के रूप में पेश करते हैं। याद कीजिए, किसान हित के नाम पर करीब एक साल तक दिल्ली की सीमा पर जो लोग सड़कों पर कब्जा करके बैठे रहे, उनके पक्ष में देश और विदेश में क्या-क्या नहीं लिखा गया? मोदी सरकार को हृदयहीन, किसान विरोधी, जनतंत्र विरोधी आदि करार दिया गया।जिन्होंने यह सब किया और जो कथित तौर पर मौलिक अधिकारों की चिंता में दुबले होते रहते हैं, उनके मुंह से कनाडा के ट्रक ड्राइवरों के समर्थन में एक शब्द नहीं निकला। कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो को कोई जनतंत्र विरोधी और फासिस्ट नहीं कह रहा। जस्टिन ट्रूडो किसान आंदोलन के समय भारत को जितना उपदेश दे रहे थे, वह सब हवा हो गया। कहावत है, पर उपदेश कुशल बहुतेरे, जे आचरहिं ते नर न घनेरे। जस्टिन ट्रूडो को अब समझ आ रहा होगा कि मोदी उनसे कितने बड़े और दूरदर्शी नेता हैं। दरअसल हिजाब, किसान और सीएए सब बहाना हैं। यह 2024 की तैयारी है। जो लोग 2014 और 2019 में मुंह के बल गिरे, वे मोदी सरकार के खिलाफ किसी भी हद तक जाने को तैयार हैं। इसके लिए वे मुसलमानों का इस्तेमाल कर रहे हैं। उन्हें पता है कि मुसलमान 'इस्लाम खतरे में है' के नाम पर तुरंत मैदान में उतर आता है। दुनिया भर में फैले भारतीय मूल के तमाम लेखकों, समाजशास्त्रियों और पत्रकारों का एक वर्ग यह बताने में लगा हुआ है कि जाति के आधार पर भारतीय समाज में कितना शोषण होता है। मोदी को इसका अंदाजा था। इसलिए जातीय चेतना को मद्धिम करने के लिए उन्होंने राष्ट्रवाद को सशक्त करने और लाभार्थी वर्ग बनाने का रास्ता चुना। एक और तरीका है, जिसे उन्होंने गुजरात में आजमाया था। वह है शहरीकरण की रफ्तार बढ़ाना। हाईवे, एक्सप्रेसवे, एयरपोर्ट, रेलवे लाइन, बंदरगाह, जल परिवहन, मेट्रो और नगरीय रेल नेटवर्क का विस्तार जैसे तमाम काम आने वाले समय में शहरीकरण की रफ्तार को तेज करेंगे। शहरी जीवन में आकर व्यक्ति अपने जातीय आग्रह की जकड़न से निकलने लगता है। यह कोई सामान्य बात नहीं है कि कर्नाटक के एक जिले में उपजे हिजाब विवाद पर आर्गेनाइजेशन आफ इस्लामिक कोआपरेशन भी कूद पड़ा। भारत सरकार ने सख्ती से इसका जवाब दिया है। आपको सीएए, किसान आंदोलन और अब हिजाब मुद्दे के तार जुड़े हुए नजर आएंगे। जैसे-जैसे लोकसभा चुनाव का समय नजदीक आता जाएगा, यह षड्यंत्र तेज होता जाएगा, क्योंकि इन अंतरराष्ट्रीय ताकतों को एक बात समझ में आ गई है कि भारत को कमजोर करना है तो मोदी को कमजोर करना पड़ेगा। मोदी इन ताकतों की भारत की डेमोग्राफी बदलने के रास्ते का भी बड़ा रोड़ा बन गए हैं। कोविड महामारी के बाद विश्व व्यवस्था में बदलाव आ रहा है। मोदी के नेतृत्व में भारत की भूमिका और बड़ी होने वाली है। भारत के उभार को रोकना अब कठिन है। अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारत की निरंतर बुलंद होती आवाज से बहुत सी ताकतों के पेट में दर्द हो रहा है। बाहर के दुश्मन से लड़ना अपेक्षाकृत हमेशा आसान होता है, बजाय अंदर के। इसलिए मोदी के सामने चुनौती बड़ी भी है और कठिन भी। इसलिए वक्त की जरूरत है कि देश भितरघातियों से सावधान रहे। भीतर का दुश्मन हमेशा दोस्त का चोला पहनकर आता है। जब तक आपको समझ में आता है, देर हो चुकी होती है।

5जी संचार तकनीक को आम जन तक पहुंचाने के लिए कितनी पुख्ता हमारी तैयारी

भारत संचार निगम लिमिटेड ने हाल ही में कहा है कि 5जी तकनीक का देश में इसी वर्ष से प्रयोग आरंभ किया जाएगा। सरकार के कुछ कदमों से इसकी शुरुआत के आसार भी बने हैं। इससे कल्पनाओं की उड़ान शुरू हो गई है। लेकिन क्या वाकई साल 2024 तक भारत पूरी तरह से 5जी तकनीक से लैस हो सकेगा बेशक यह संचार के क्षेत्र में एक क्रांति होगी। इसलिए देशवासियों की उम्मीदें बढ़ गई हैं। अभी इंटरनेट की अधिकतम गति एक जीबी प्रति सेकंड है, 5जी की 10 से 20 जीबी प्रति सेकंड होगी। एक फिल्म डाउनलोड करने में छह मिनट के बजाय 20 सेकंड लगेंगे। सुदूर क्षेत्रों में कई बार 4जी कवरेज नहीं मिलता पर तब वहां भी तीव्र वीडियो स्ट्रीमिंग, सर्फिंग का अलग अनुभव मिलेगा। पर यह तेजी क्यों जरूरी है इसका जवाब मिल जाएगा यदि सुदूर और अलग-अलग जगह पर बैठे शल्य चिकित्सकों के द्वारा की जाने वाली रोबोटिक सर्जरी की कल्पना करें। सेकंडों की देरी गंभीर परिणाम ला सकती है। तेज रफ्तार आटोमेटिक कारों के नियंत्रण में भी यही बात सच है। इससे डिजिटल क्रांति को नया मुकाम मिलेगा। इंटरनेट आफ थिंग्स ही नहीं औद्योगिक आइओटी और रोबोटिक्स को भी अपेक्षित बढ़ावा मिलेगा। वर्चुअल रियलिटी, क्लाउड गेमिंग के लिए नए आयाम स्थापित होंगे। ई-गवर्नेंस का भी विस्तार होगा। 5जी के आने से सुदूर इलाकों में लगातार कनेक्टिविटी बनी रहेगी। वर्ष 2025 तक सभी गांवों तक फाइबर आप्टिक्स बिछाने का लक्ष्य पूरा हो जाना है। ऐसे में ई-मेडिसिन, टेली मेडिसिन बड़े शहरों तक सीमित नहीं रहेगी, बल्कि गांवों तक भी पहुंचेगी। शिक्षा और कृषि क्षेत्र को जबरदस्त फायदा होगा। छात्रों को घर बैठे अच्छी और सस्ती शिक्षा मिलेगी। रफ्तार के चलते आनलाइन कंटेंट के क्षेत्र में भी बड़ी क्रांति आएगी। स्मार्ट सिटी के परिवहन और यातायात प्रबंधन जैसे काम तेज हो जाएंगे, साथ ही वह इसके जरिये स्वच्छ और सुरक्षित रहेगी। सेवा क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मानवीय हस्तक्षेप वाले हाइब्रिड वर्क कल्चर का विस्तार होगा। रोजगार सृजन के नए अवसर तो खुलेंगे ही, कामकाजियों को ढर्रेवाले काम से राहत मिलेगी। घर, घरेलू उपकरण, तमाम चीजें इंटरनेटयुक्त हो आपस में जुड़कर आपसी संवाद कर सकेंगी, मशीनों और मनुष्यों के बीच संवाद के जिस जमाने की कल्पना हमने सुनी है, वह इस तेज रफ्तार इंटरनेट से ही संभव है। एक सरकारी पैनल के अनुसार 5जी से 2035 तक देश में एक लाख करोड़ डालर की आर्थिक गतिविधि बढ़ेगी। विदेशी कंपनी एरिक्सन के मुताबिक 5जी के आने से दो साल के भीतर 27 अरब डालर से अधिक का राजस्व जुटेगा, क्योंकि यहां 2026 तक इसके 35 करोड़ से

ज्यादा उपभोक्ता होंगे। सबब यह कि 5जी के आने के बाद देश में तमाम तरह के बदलाव आएंगे। कम से कम इसके संकेत मिलने लगेंगे जिसके आधार पर आसानी से यह महसूस किया जा सकता है कि वाकई में भारत बदल रहा है। भले देश में 2023 से 5जी की ओपन रेडियो एक्सेस नेटवर्क, डायनमिक स्पेक्ट्रम शेयरिंग और सस्ते 5जी हैंडसेट्स के साथ शुरुआत हो जाए, पर क्या सच में अगले वर्ष समूचा देश 5जी का उपभोग करने में सक्षम हो पाएगा यानी सभी तक इसकी आसान पहुंच हो पाएगी। फिलहाल ये सब दावे हैं। निस्संदेह इनका वैज्ञानिक आधार है और तर्क वितर्क पर भी ये खरे उतरते हैं, लेकिन व्यावहारिकता की जमीन पर इनके पांव अभी बहुत मजबूत नहीं दिख रहे हैं। देश की व्यवस्था और कार्यशैली एवं समस्याओं को सामने रखकर देखें तो इसकी डगर कठिन नजर आती है। 5जी तो 2025 तक बड़े शहरों, उसके आसपास के क्षेत्रों तक पहुंच जाएगा, लेकिन जिन अनुप्रयोगों की बात की जा रही है वे अभी दूर की कौड़ी हैं। 5जी के लिए जो मजबूत ईकोसिस्टम और डिजाइन-आधारित विनिर्माण चाहिए, वह बस अगले कुछ माह में तैयार हो जाएगा। स्मार्ट सिटी ही न होंगे तो 5जी वहां क्या करेगा? कुछ चुनिंदा टेलीकाम कंपनियों पर इसका सारा दारोमदार टिका है, पर इनकी कितनी तैयारी है सरकार ने अभी तक चीनी कंपनियों से उपकरण खरीदने या स्पेक्ट्रम की बोली लगाने की व्यवस्था को खत्म नहीं किया है, उनकी क्या स्थिति रहेगी यह कब तय होगा? दावे करने के लिए बयान दिए जा सकते हैं, पर कई बरसों में अभी तक भारत में लगभग एक तिहाई टावरों तक फाइबर आप्टिक्स नेटवर्क जुड़ सका है, कम से कम इतना ही सफर अभी और तय करना है। अगर क्षेत्र विशेष में यह सेवा देनी है तो संभव है, पर देशव्यापी स्तर पर अभी बरसों लगेंगे। महानगरों और बड़े शहरों की गली गली में भारी संख्या में बेस स्टेशन लगाना आसान है, मगर विरल आबादी में यह कैसे होगा क्योंकि लागत ज्यादा आएगी और उपभोक्ता कम होंगे तो उपकरणों और तकनीक पर भारी खर्चने वाली कंपनियां रुचि नहीं दिखाएंगी। इंटरनेट प्रदाता के लिए ही नहीं, उपभोक्ता के लिए भी इसका इस्तेमाल फिलहाल महंगा सौदा होगा। सामान्य भारतीय जीवनशैली को अभी इतने तेज इंटरनेट की आवश्यकता नहीं तो वह इसके उपकरणों और सेवा पर अतिरिक्त व्यय क्यों करेगा, जबकि 4जी तब भी मौजूद रहेगा। 5जी पर चलने वाले मोबाइल और अन्य उपकरणों को बेहतरीन प्रोसेसर की जरूरत होती है, जो इनकी लागत ज्यादा कर देती है। अभी एक बहुत बढ़िया मोबाइल के प्रोसेसर की ताकत सात से आठ जीबी प्रति सेकंड है, जबकि चाहिए 10 से 20 जीबीपीएस। कुछ विशेषज्ञ कहते हैं कि विदेशी तो तैयार हैं, मगर घरेलू टेलीकाम बाजार को 5जी सेवाओं की तैयारी के लिए कम से कम दो तीन साल चाहिए। बेशक डाटा की दर भी मौजूदा से कई गुना बढ़ सकती है। यह ठीक है कि इससे शिक्षा, स्वास्थ्य और कृषि व्यवस्था सुधरेगी, पर इस सुधार के लिए शिक्षा व्यवस्था, चिकित्सकों की संख्या और किसानों की स्थिति में भी तो पर्याप्त सुधार होने चाहिए। संभव है निकट भविष्य में हम 5जी का ट्रायल करने में पूरी तरह से सफल हो जाएं, लेकिन इसे सभी लोगों तक पहुंचाना फिलहाल आसान काम नहीं दिख रहा। (ईआरसी)

भारत की क्षेत्रीय अखंडता और अस्तित्व को लेकर राहुल गांधी के विचार खतरनाक

मध्यमार्गी राष्ट्रीय दल से कांग्रेस के अतिवादी वामपंथ की दिशा में विचलन को दो भाषणों से समझा जा सकता है। करीब 73 वर्षों की अवधि के ये भाषण कांग्रेस में आई गिरावट को दर्शाते हैं। इनमें पहला भाषण 1949 का और दूसरा 2022 का है। पहला भाषण संविधान सभा की बहस में के. सुब्बाराव का था और दूसरा केरल के वायनाड से लोकसभा सदस्य राहुल गांधी का, जो उन्होंने बजट सत्र में राष्ट्रपति के अभिभाषण पर बहस के दौरान दिया। स्वतंत्रता सेनानी और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सदस्य सुब्बाराव ने संविधान के अनुच्छेद एक से जुड़ी बहस में कहा था, 'भारत नाम ऋग्वेद में उल्लिखित है। साथ ही वायु पुराण में भी इन शब्दों में भारतीय सीमा का सीमांकन किया गया है-इदम् तु मध्यम चित्रम सुभाशुभ फलदायम, उत्तरम यत्समुद्रस्य हिम वन दक्षन्म चयत। अर्थात् हिमालय के दक्षिण और (दक्षिणी) महासागर के उत्तर में जो भूमि स्थित है, वह भारत है। इसलिए भारत नाम बहुत प्राचीन है।' कांग्रेसी सुब्बाराव 1949 में सार्वजनिक रूप से ऋग्वेद और वायु पुराण का उदाहरण देने के साथ ही अपने प्राचीन अतीत से भारत की सभ्यतागत विरासत एवं सांस्कृतिक कड़ियों को जोड़ रहे थे। यह भी उल्लेखनीय है कि 2022 में भारत की सीमाओं का वर्णन करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी वायु पुराण का वही उद्धरण दिया। दरअसल 1949 के दौर की कांग्रेस पार्टी सभी वर्गों को समाहित करने वाली थी और इसमें वे लोग भी शामिल थे, जो मानते थे कि स्वर्णिम अतीत से भारत का गहरा आध्यात्मिक जुड़ाव रहा। पार्टी की बड़ी छतरी के तले इन सभी विचारों का समागम देखने को मिलता था। उसकी तुलना में आज की मौजूदा कांग्रेस पार्टी हमारे सांस्कृतिक अतीत से जुड़ाव के किसी भी पहलू के प्रति तिरस्कार भाव रखती है। आज कांग्रेस के कई सदस्यों में देश के बहुलतावाद की झलक नहीं मिलती। इसकी पड़ताल के लिए हाल में राष्ट्रपति के अभिभाषण को लेकर राहुल गांधी के भाषण से इतर किसी और उदाहरण की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। विगत दो फरवरी को लोकसभा में राहुल गांधी ने कहा, 'यदि आप भारत का संविधान पढ़िए तो पाएंगे और मेरे तमाम साथियों ने अगर इसे नहीं पढ़ा है तो उन्हें यह पढा चाहिए कि भारत का उल्लेख 'राज्यों का संघ' के रूप में है।' इसमें कोई संदेह नहीं कि संविधान में भारत को 'राज्यों का संघ' कहा गया है। इस पद की सबसे बढिया व्याख्या स्वयं डा. भीमराव आंबेडकर ने की है। संविधान का प्रारूप तैयार करते हुए और संविधान सभा में हुई बहस के आधार पर डा. आंबेडकर और अन्य सदस्य ऐसे कई बिंदुओं-विचारों पर मंथन कर रहे थे कि संविधान के अनुच्छेद-एक को किस प्रकार स्वरूप दिया जाना चाहिए। अंतिम सहमति 'भारत अर्थात इंडिया राज्यों का संघ होगा' पर बनी।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुकूल मातृभाषा में चिंतन-वंदन का समय

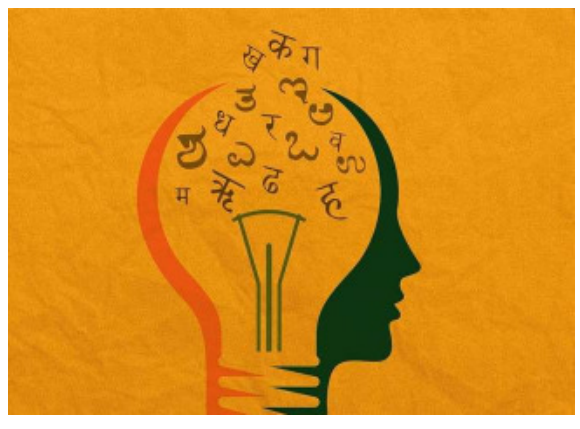

मातृभाषा का चिंतन-वंदन व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के आत्मबल की उननति करता है। यह दूसरे पर निर्भरता से मुक्ति और आत्मनिर्भरता की राह खोलने वाला है। मातृभाषा में व्यवहार और शिक्षा किसी के बहिष्कार से परे स्वयं के स्वीकार की दिशा में जाना है। मातृभाषा वह है जिसे बालक सबसे पहले अपनी मां से सीखता है और फिर परिजनों के साथ उसका विकास करता है। इसके लिए उसे किसी प्रकार का अनावश्यक प्रयास नहीं करना पड़ता। सीखने की यह प्रक्रिया प्रतिदिन चलती रहती है। इसी निज भाषा की ताकत को पहचानते हुए ही भारतेंदु हरिश्चंद्र ने हिंदी की उननति शीर्षक व्याख्यान में 1877 में कहा था- निज भाषा उननति अहै, सब उननति को मूल। यह वह समय था जब आधुनिकता के नाम पर कुछ लोगों में अंग्रेजी का आकर्षण पैदा हो रहा था। भारतेंदु द्वारा संकल्पित यह निज भाषा हिंदी एवं क्षेत्रीय भाषाएं ही थी, जिनकी उननति के बिना सुख-दुख, ज्ञान-विज्ञान, प्रेम-विवेक, मानसिक विकास, संवेदनात्मक विकास और व्यक्तित्व विकास संभव नहीं है। अनेकता में एकता के सूत्र, व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के विकास के द्वार निज भाषा की उननति से ही जुड़ते-खुलते हैं। मातृभाषा प्रत्येक व्यक्ति को उसके परिवार, समाज, प्रदेश और देश से जोड़ती है, उनके बीच समरसता स्थापित करती है। वर्ष 1918 में हिंदी साहित्य समिति

इंदौर के अधिवेशन में गांधी जी ने कहा था- आज अंग्रेजी सर्वव्यापक भाषा है, पर यदि अंग्रेज सर्वव्यापक न रहेंगे तो अंग्रेजी भी सर्वव्यापक न रहेगी। हमें अब अपनी मातृभाषा की उपेक्षा करके उसकी हत्या नहीं करनी चाहिए। भारतवर्ष सनातन ज्ञान परंपरा का केंद्र रहा है। विदेशी दासता के दौर में अनेक रूपों में ज्ञान की इस सनातन परंपरा को नष्ट करने के प्रयास होते रहे। ब्रिटिश दौर में मैकाले की शिक्षा नीतियों ने समूची भारतीय शिक्षा व्यवस्था को भिन्न -भिन्न रूपों में ध्वस्त किया। राष्ट्रीय भावना, राष्ट्रीय गौरव के प्रतीक, वीर परंपरा, संत परंपरा, त्याग, सेवा भाव एवं जीवन मूल्य जैसी विभिनन महत्वपूर्ण बातें शिक्षा से अलग हटा दी गई। स्वतंत्र भारत में भी शिक्षा नीतियों में हिंदी सहित भारतीय भाषाओं के स्थान पर अंग्रेजी का वर्चस्व बना रहा। अंग्रेजी अच्छे ज्ञान और अच्छी शिक्षा का पर्याय बनती चली गई। हमारी शिक्षा नीतियां बालक अथवा मनुष्य को एक संसाधन के रूप में देखती रही। वह उसे अच्छा व्यवसायी और बाजार के अनुरूप तो बनाती रही, किंतु मातृभाषा, परहित का भाव और भारत भाव से वह अधिकांशतः दूर होता चला गया। आज भारतवर्ष भिन्न -भिन्न रूपों में विकास के मार्ग पर अग्रसर है। नया भारत, समर्थ भारत और सशक्त भारत आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहा है। ऐसे में यह नितांत आवश्यक है कि मातृभाषा शिक्षा एवं संस्कार का माध्यम बने। युवा भारत मातृभाषा के चिंतन के साथ-साथ उसके वंदन के लिए भी दृढ़ संकल्पित हो। वर्ष 1886 में एक पत्र में विदेशी विद्वान फ्रेडरिक पिकाट ने लिखा है- मैं संपूर्ण रूप से जानता हूं कि जब तक किसी देश में निजभाषा अक्षर सरकारी और व्यवहार संबंधी कार्यों में नहीं प्रवृत्त होते हैं, तब तक उस देश का परम सौभाग्य हो नहीं सकता। क्या इस प्रकार के विभिन्न वक्तव्यों पर आज गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता नहीं है ध्यातव्य है कि भारतवर्ष जनसंख्या की दृष्टि से विश्व का दूसरा सबसे बड़ा देश है। आज भी विभिनन्प्रदेशों में साक्षरता के आंकड़े कम हैं। आज भी शिक्षा एवं साक्षरता की दृष्टि से महिलाओं और आर्थिक रूप से पिछड़े वर्गों की स्थिति चिंताजनक है। आज भी विद्यालय और महाविद्यालयों से कई बच्चे बीच में ही पढ़ाई छोड़ देते हैं, जिसका बड़ा कारण अंग्रेजी माध्यम की कठिनता है। विभिनन अध्ययन एवं शोध इस बात की पुष्टि करते हैं कि बालक अपनी मातृभाषा में अधिक सीखता है और सरलता से सीखता है। मातृभाषा में शिक्षा, मातृभाषा में काम और मातृभाषा का व्यवहार संपूर्ण साक्षरता की दिशा में भी कारगर सिद्ध हो सकता है। सकारात्मक यह है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा व्यवस्था में बहुभाषा और मातृभाषा पर केंद्रित है। यह जहां एक ओर भारत केंद्रित है, वहीं दूसरी ओर बालक केंद्रित भी है। यह सर्वविदित है कि छोटे बच्चे अपने घर की भाषा/ मातृभाषा में सार्थक अवधारणाओं को अधिक तेजी से सीखते हैं और समझ लेते हैं। घर की भाषा आमतौर पर मातृभाषा या स्थानीय समुदायों द्वारा बोली जाने वाली भाषा है। जहां तक संभव हो कम से कम ग्रेड पांच तक और उससे आगे भी शिक्षा का माध्यम घर की भाषा/ मातृभाषा/ स्थानीय भाषा/ क्षेत्रीय भाषा होगी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति एवं नए भारत की आवश्यकताओं के अनुरूप कुछ विश्वविद्यालयों ने मेडिकल एवं इंजीनियरिंग जैसे तकनीकी विषयों को भी हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में पढ़ाना शुरू किया है। पाठ्यक्रम की आवश्यकताओं के अनुरूप मातृभाषा अथवा स्थानीय भाषाओं में सामग्री उपलब्ध करवाना एक बड़ी चुनौती होगी, किंतु संकल्प से उसमें भी सफलता मिलेगी। मातृभाषा में वह शक्ति है जिसके सहारे बालक नैसर्गिक रूप से ज्ञानात्मक और विकासात्मक अवस्थाओं तक आसानी से पहुंच सकता है। विभिनन देशों में उनकी शिक्षा व्यवस्था, उनका व्यवहार उनकी अपनी भाषाओं में ही होता है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी यह प्रविधान किया गया है कि हम अपनी मातृभाषाओं के व्यवहार में सम्मान महसूस करें। देशी-विदेशी सभी भाषाओं में ज्ञान का भंडार है, उन्हें सीखने में कोई बुराई नहीं है। लेकिन पहला सम्मान अपनी मातृभूमि और अपनी मातृभाषा के लिए आवश्यक है। मातृभाषा में बालक की सहज प्रकृति का निर्माण करने की क्षमता है, यह समरसता का सेतु है।

संक्षिप्त समाचार

तेजस्वी यादव ने छूए भाजपा सांसद के पैर, विधायकों से बोले- जल्दी ही आप लोगों को दूंगा भोज

पटना। बिहार विधान मंडल परिसर में गुरुवार को बड़ा अनोखा और खुश करने वाला नजारा दिखा। बिहार विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव और भाजपा के सांसदों-विधायकों के बीच जो कुछ हुआ, उससे कल का आयोजन सफल होता दिखा। दरअसल, गुरुवार को बिहार विधान मंडल में विधायकों और विधान पार्षदों के लिए प्रबोधन कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। इसमें शामिल होने के लिए लोकसभा के स्पीकर ओम बिरला भी आए थे। इस दौरान तेजस्वी यादव और भाजपा नेताओं के बीच गपशप की बहुत शानदार तस्वीर सामने आई। कार्यक्रम के बाद जब तेजस्वी यादव बाहर निकले तो कई विधायकों ने उन्हें घेर लिया। इनमें भाजपा के विधायक भी शामिल थे। इस दौरान तेजस्वी यादव ने पूर्व केंद्रीय मंत्री और पटना साहिब के सांसद रविशंकर प्रसाद के पैर छूकर उनका आशीर्वाद लिया। भाजपा के विधायक संजय सरावगी ने बिहार विधानमंडल परिसर में तेजस्वी यादव को रोक कर उन्हें शादी के लिए बधाई दी और भोज वाली बात याद दिलाई। आपको बता दें कि तेजस्वी यादव ने दिसंबर महीने के दूसरे सप्ताह में दिल्ली में एलेक्सिल रेचल गोडिन्हो उर्फ राजश्री यादव से शादी की थी।

मतदान से पहले विस्फोटक मिलने से हड़कंप, बाइक पर टंगा था बैग; बम निरोधक दस्ते ने किया नष्ट

पटियाला। मतदान से पहले समाना- पटियाला रोड पर भाखड़ा नहर के पुल के पास विस्फोटक मिलने से दहशत फैल गई। यह विस्फोटक नई अग्रवाल गौशाला गेट के आगे एक बाइक पर बैग में टंगा था। आनन-फानन में पुलिस ने इलाके को सील कर दिया है। एसएचओ समाना सिटी सुरिंदर भल्ला ने बताया कि जालंधर से आए बम निरोधक दस्ते की सुपरविजन में विस्फोटक नष्ट करवा दिया है। इसके बाद रास्ते खोल दिए गए हैं। दूसरी तरफ मामले में किसी के शामिल होने की पुष्टि नहीं हुई। के प्रधान अमित सिंगला और शिवसेना नेता प्रवीण शर्मा ने बताया अग्रवाल गौशाला के मुख्य गेट के आगे बने वेरका बूथ के पास शुक्रवार शाम करीब चार बजे एक अज्ञात बाइक खड़ी थी।

मेरठ में इस बार वोट प्रतिशत घटा लेकिन बढ गए 67 हजार मतदान करने वाले

मेरठ। मेरठ जिले में विधानसभा चुनाव के लिए 10 फरवरी को मतदान हुआ। पूर्व के चुनावों के मुकाबले इस बार मतदान का प्रतिशत जनपद की हर विधानसभा सीट पर कम ही रहा। मतदाताओं की संख्या अधिक

रहने के बाद भी कैंट विधानसभा क्षेत्र में सबसे कम मतदान हुआ। लेकिन मतदान प्रतिशत कम होने के बाद भी इस बार मतदान करने वालों की संख्या बढ़ी है। पूर्व के चुनाव के मुकाबले इस बार 67 हजार से अधिक मतदाताओं ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया है। जिले के सभी सातों विधानसभा क्षेत्र के 2962 मतदेय स्थलों की समीक्षा करें तो कई चौंकाने वाले आंकड़े सामने आते हैं। कई बूथों पर जहां मतदान के फीसद ने रिकार्ड कायम किया, वहीं कुछ मतदान केंद्र ऐसे भी रहे जहां मतदान का फीसद दो से पांच के बीच रहा। यहां मतदान करने के लिए मतदाता अपने घर से बाहर ही नहीं निकले। वर्ष 2017 में हुए चुनाव के दौरान जनपद में कुल 16.30 लाख से अधिक मतदाताओं ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया था और मतदान 66.64 फीसद रहा था। इस बार पूर्व के चुनाव के मुकाबले 67,650 अधिक मतदाताओं ने अपने मताधिकार का प्रयोग हर विधानसभा सीट पर किया। लेकिन इस बार मतदान 64.67 फीसद ही रहा। मेरठ दक्षिण में पूर्व में हुए चुनाव में 2.70 लाख से अधिक मतदाताओं ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया था। इस बार यहां मतदान करने वालों की संख्या बढ़कर 2.97 लाख से अधिक हो गई है। इसके बाद सबसे अधिक मतदान करने वालों की संख्या किठौर में बढ़ी है। यहां भी पूर्व के मुकाबले इस बार करीब दस हजार अधिक मतदाताओं ने मतदान किया। मतदान करने वालों की संख्या से विस क्षेत्र की हर सीट के चुनाव परिणाम पर इसका सीधा असर पडे के आसार हैं। आंकड़ों पर गौर करें तो जिले के अधिकांश विस क्षेत्रों की स्थिति मतदाता की खामोशी के कारण खुलकर सामने नहीं आ रही है। ऐसे में बढ़े मतदाता जीत-हार को प्रभावित कर सकते हैं।

जालौन में अखिलेश का पलटवार, बोले- परिवार वाला ही समझ सकता परिवारों का दर्द

जालौन। यूपी विधानसभा चुनाव में तीसरे चरण के मतदान से पहले प्रत्याशियों के पक्ष में माहौल बनाने के लिए सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने शुक्रवार को प्रचार के अंतिम दिन जालौन के माधौगढ़ से की है। यहां पर आयोजित जनसभा में उन्होंने एक बार फिर नाम लिये बगैर भाजपा सरकार और मुख्यमंत्री योगी पर निशाना साधा है। परिवारवाद का आरोप लगा रहे भाजपा नेताओं

पर अखिलेश ने पलटवार किया और कहा है कि परिवारवाला ही परिवारों का दर्द समझ सकता है। उन्होंने महंगाई, विकास और नोटबंदी पर भाजपा को घेरा और कहा कि पहले और दूसरे चरण के मतदान के रुझान के बाद गर्मी निकालने की बात कहने वाले ठंडे पड़ गए है। जालौन के माधौगढ़ में आयोजित जनसभा में समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा कि पहले चरण और दूसरे चरण के मतदान के बाद जो लोग गर्मी निकालने की बात कह रहे थे, वे ठंडे पड़ गए हैं। कहा, पांच साल में क्या मिला, बुंदेलखंड के लोगों के साथ धोखा हुआ है। बाबा मुख्यमंत्री ने न जाने क्या क्या कहा, पर आप बताओ बुंदेलखंड के साथियों क्या मिला। ये सरकार एमएसपी भी लागू नहीं कर पाई, जब किसान खाद लेने गए तो उसमें 5 किलो की चोरी हो गई। नोदबंदी में गरीबों का पैसा बैंक में जमा कर लिया गया, उसमें भी चोरी हो गई। उद्योगपति पैसा लेकर भाग गए, जो उद्योगपति पैसा लेकर भागे बताओ वे कहा के हैं। उन्होंने कहा, बाबा का पसंदीदा जानवर कितनों की जान ले रहा है। गोशाला के नाम पर करोड़ो रुपये जाने कहां चले गए। चुनाव के पहले बीजेपी के लोग घर घर प्रचार कर रहे थे और थूक लगाकर पर्ची बांट रहे थे। जब भाजपा वाले वोट मांगने गरीबों के घर पहुंचे तो गरीबों ने लाल रंग के खाली सिलिंडर दिखा दिए। कोरोना काल में यह पार्टी गरीबों को न दवा दे पाई और न ऑक्सीजन। याद कीजिए जब लाकडाउन में लोग पैदल चल रहे थे और जबकि इस पार्टी ने किसी परिवार की मदद नहीं की। परिवारवाद का आरोप लगाने वाली पार्टी को बताओ, एक परिवार वाला ही परिवार का दर्द समझ सकता है।

जननायक कर्पूरी ठाकुर की पुण्यतिथि पर सपा ने दी श्रद्धांजलि

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा ।समाजवादी चिंतक स्वर्गीय कर्पूरी ठाकुर की पुण्यतिथि सेक्टर 102 स्थित भंगेल में मनाई गई। नोएडा ग्रामीण के जिला महासचिव व प्रवक्ता राघवेंद्र दुबे एवं व्यापार सभा अध्यक्ष मनोज गोयल ने सपा नेताओं के साथ

कर्पूरी ठाकुर के चित्र पर पुष्प अर्पित कर उन्हें याद किया। इस अवसर पर उनके जीवन पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर बोलते हुए ग्रामीण जिला महासचिव व प्रवक्ता राघवेंद्र दुबे ने कहा कि कर्पूरी ठाकुर का जन्म बिहार के समस्तीपुर जिला के पितोंझिया गांव में हुआ था जिसे अब कर्पूरी ग्राम के नाम से जाना जाता है। इनके पिता गोकुल ठाकुर एक सीमांत किसान थे और पारंपरिक पेशा नाई का काम करते थे। साधारण परिवार में जन्म लेने के बावजूद वह दो बार बिहार के मुख्यमंत्री बने। स्वर्गीय कर्पूरी ठाकुर ने भारत छोड़ो आंदोलन में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया जिसके कारण उन्हें छब्बीस महीने जेल में रहना पड़ा। सरल और सरस हृदय के कर्पूरी ठाकुर राजनीति में शुचिता के हमेशा पक्षधर रहे। इस अवसर पर व्यापार सभा अध्यक्ष मनोज गोयल ने कहा कि लोकनायक जयप्रकाश नारायण एवं राम मनोहर लोहिया इनके राजनैतिक गुरु थे। उन्होंने हमेशा गरीब ,मजदूर, किसान, नौजवान के हितों की रक्षा के लिए संघर्ष किया इसलिए उन्हें जननायक कहा गया। इस मौके पर व्यापार सभा अध्यक्ष मनोज गोयल, सुरेंद्र गौतम, विनोद सिंह, पुष्पेंद्र बंसल, सलीम खान, यूसुफ खान, ठाकुर इंद्रजीत सिंह, रेशमपाल सिंह, सुबोध गोयल सहित कई समाजवादी नेता व कार्यकर्ता मौजूद रहे ।

प्रमुख सचिव ऊर्जा विभाग द्वारा संभाग स्तरीय समीक्षा बैठक सम्पन्न ऊर्जा के कार्यो में हिला-हवाली नही चल पाएगी, देखा जाएगा परफारमेंस- श्री संजय दुब

(आधुनिक समाचार सेवा)
दुर्गेश कुमार गुप्ता

शहडोल। शहडोल 18 फरवरी 2022- प्रदेश के ऊर्जा विभाग के प्रमुख सचिव श्री संजय दुबे ने आज

कलेक्टर कार्यालय के विराट सभागार में संभाग स्तरीय समीक्षा बैठक कर ऊर्जा विभाग के अमलें को निर्देशित किया कि अब ऊर्जा के कार्यों में हिला-हवाली नही चल पाएगी। सभी लोंगो का परफारमेंस देख कर्यो के हिसाब से परख की जाएगी। उन्होंने कहा कि विद्युत के पोल गाड़ने से पहले संबंधित अधिकारी स्थल पर जाकर परीक्षण जरूर करें जिससे अनावश्यक समय व खर्च बचाया जा सकें। उन्हें बार-बार ईधर-ऊधर शिफ्ट नही करना पडें। बैठक में जिले व कन्जूमरों की जानकारी ली तथा एपीएल एवं पीपीएल कन्जूमरों सहित टेंपरेरी अनलिगल कनेक्शनों की स्थल पर जाकर जांच करने मीटरों की रिडिंग की जानकारी इत्यादि भी ली। बैठक में 11केव्ही एवं 330 केव्ही फिडरों की समीक्षा करते हुए सभी फिडरों को सक्रिय करने के निर्देश देते हुए फीडर सेंप्रेशन सर्वे की भी जानकारी ली। बैठक में डीबीटी स्टेट्स, कन्जूमरों की आधार शिडिंग एवं मोबाइल नम्बर दर्ज करने सहित सर्किलवाइज इनपुट एनर्जी एवं बिलिंग एवं डेटा वैलुएशन की भी समीक्षा की गई। उन्होंने निर्देशित कि डीबीटी में अधिकांश मोबाइल नम्बर स्थल पर जाकर सही ढंग से नही अंकित किये गए इसके साथ ही बिजलेंश की रिकवरी का कार्य भी संभाग में नगण्य पाया गया। बैठक में अन्य विभागीय कार्यो की भी समीक्षा की गई तथा अधीक्षण यंत्री एवं कार्यपालन यंत्रियों से जानकारियां ली गई। बैठक में ऊर्जा विभाग के एमडी, संभागीय अधीक्षण यंत्री सहित कार्यपालन यंत्री, अनुविभागीय अधिकारी, जूनियर इंजीनियर के साथ अन्य विभागीय अधिकारी उपस्थित थें।

11,12,13 मार्च को होगा उस्ताद अलाउद्दीन संगीत समारोह का आयोजन

(आधुनिक समाचार सेवा)
दिनेश यादव

मैहर- उस्ताद अलाउद्दीन खां के कार्यक्रम को लेकर सतना कलेक्टर की अध्यक्षता में एक बैठक नगर पालिका परिषद के

सभागार में आयोजित की गई जिसमे कार्यक्रम को लेकर बैठक चर्चा की गई इससे पहले अलाउद्दीन खा संगीत समारोह 8,9 ,10 फरवरी को होना था लेकिन कोरोना प्रोटोकॉल के चलते यह तारीख आगे बढ़ाकर 11, 12 ,13 मार्च 2022 की गई है बैठक में अलाउद्दीन खा संगीत एकेडमी के साथ सतना कलेक्टर अनुराग वर्मा, पुलिस अधीक्षक धर्मवीर सिंह, सतना सांसद गणेश सिंह, सचिव डॉ कैलाश जैन सहित मैहर एसडीएम धर्मेंद्र मिश्रा एसडीओपी हिमाली सोनी तहसीलदार मानवेंद्र सिंह नायब तहसीलदार अखिलेश शर्मा विद्युत विभाग नगर पालिका परिषद पीडब्लूडी के के साथ सभी गणमान्य नागरिक व सदस्य बैठक में उपस्थित रहे।

पुलिस प्रशासन का विधायक चायल संजय गुप्ता पर चला चाबुक

(आधुनिक समाचार)
अनुराग केसरवानी

कौशाम्बि। विधायक संजय गुप्ता को पुलिस ने किया 107/116 में पाबंद , चुनाव में गड़बड़ी कराने की आशंका । संजय गुप्ता को अब 2 लाख के जमानतदारों से कराना होगा मुचलका । यदि चुनाव में हुई गड़बड़ी तो जमानतदारों की जमानत होगी जप्त पुलिस की इस कारवाई से विधायक एवं उनके कार्यकर्ताओं में मचा हड़कंप । भाजपा चायल विधायक संजय गुप्ता को पुलिस ने किया पाबंद । चुनाव में गड़बड़ी की आशंका से विधायक संजय गुप्ता के खिलाफ 107/116 के तहत किया गया पाबंद । विधायक संजय गुप्ता को कराना पड़ेगा मुचलका । चौकी प्रभारी भरवारी ने नोटिस भेज प्रशासन को दी सूचना । विधायक संजय गुप्ता से चुनावी में गड़बड़ी की आशंका । संजय गुप्ता को दो लाख की जमानत राशि से करानी पड़ेगी मुचलका । जमानतदारों से भराना होगा 2 लाख का बांड । यदि कोई चुनाव में हुई गड़बड़ी तो प्रशासन कर लेगा जमानत जप्त ।

16वीं मंजिल से छलांग लगाकर युवक ने दी जान

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा । थाना बिसरख क्षेत्र के सुपरटेक इको विलेज - 1 में रहने वाले एक 29 वर्षीय युवक ने मानसिक तनाव के चलते अपनी सोसाइटी के 16वीं मंजिल से कूदकर आत्महत्या कर ली। मौके पर पहुंची पुलिस मामले की जांच कर रही है। पुलिस के अनुसार मृतक व्यापारी था। वह अपनी माँ के साथ सोसाइटी में रहता था। पुलिस को शक है व्यापार में घाटे के चलते युवक ने आत्महत्या की है।

दुनिया के 200 बेहतरीन एयरपोर्ट में शामिल हुआ बिहार का ये हवाई अड्डा, यात्रियों की शिकायतें सुनने में आगे

पटना। बिहार में फिलहाल तीन एयरपोर्ट सामान्य परिवहन सेवाओं के लिए आपरेशनल है। इनमें पटना एयरपोर्ट पर सुविधाओं का लगातार विस्तार किया जा रहा है, तो गया एयरपोर्ट पर भी सुधार की प्रक्रिया लगातार जारी है। दरभंगा एयरपोर्ट पर हाल में ही यात्री सेवाएं शुरू की गई हैं। वहां यात्री सुविधाओं का विस्तार अभी प्रारंभिक चरण में है। मुजफ्फरपुर और रक्सौल में भी एयरपोर्ट को शुरू करने की मांग जोर पकड़ रही है। इस बीच अच्छी खबर यह है कि पटना स्थित लोकनायक जयप्रकाश नारायण अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट विश्व के 200 चुनिंदा एयरपोर्ट में शामिल हो गया है। इस संबंध में एयरपोर्ट काउंसिल इंटरनेशनल द्वारा सर्वे कराया गया था। सर्वे में यात्रियों से एयरपोर्ट पर दी जा रही सुविधाओं पर उनकी राय ली गई थी। एयरपोर्ट काउंसिल इंटरनेशनल द्वारा विश्व भर के प्रमुख एयरपोर्ट पर गत दिनों एक सर्वे कराया गया था। इसमें यात्रियों से कोरोना काल में दी जा रही सुविधा व समस्याओं के निबटारे के संबंध में फीडबैक मांगा गया था। सर्वे में यह बात सामने आई है कि हाल के दिनों में एयरपोर्ट पर यात्री सुविधाओं में इजाफा होने के साथ ही कोरोना काल में एयरपोर्ट पर यात्रियों को हर प्रकार की मदद मिलती रही। अधिकारियों के मुताबिक पटना एयरपोर्ट को एयरपोर्ट सर्विस क्वालिटी सर्वे में वायस आफ कस्टमर रिकागिन्शन के वर्ग में चयन किया गया है। यात्रियों की समस्याओं के त्वरित निबटारे के लिए की गई कार्रवाई के आधार पर पटना एयरपोर्ट को विश्व के 200 एयरपोर्ट के समकक्ष जगह दी गई। इस सर्वे में देश के सात प्रमुख एयरपोर्ट को शामिल किया गया था। इसमें पटना के साथ ही कोलकाता, चेनर्ई, पुणे, भुवनेश्वर, गोवा और चंडीगढ़ एयरपोर्ट प्रमुख है। एयरपोर्ट आथरिटी आफ इंडिया ने ट्वीट कर इसकी जानकारी साझा की है।

ग्रेनो प्राधिकरण ने शाहबेरी में सात एकड़ जमीन से अतिक्रमण हटाया

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा । ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण ने बृहस्पतिवार को शाहबेरी में अधिसूचित जमीन कब्जा करने वालों के खिलाफ कार्रवाई करते हुए अतिक्रमण ढहा

दिया। प्राधिकरण कॉलोनाइजरों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की भी तैयारी कर रहा है। ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण के डीजीएम केआर वर्मा ने बताया कि शाहबेरी के खसरा नंबर 318, 319 व 320 की सात एकड़ से अधिक की जमीन पर कालोनाइजर अवैध कालोनी काटने की कोशिश कर रहे थे। इसकी सूचना मिलते ही वर्क सर्किल एक के वरिष्ठ प्रबंधक ब्रह्म सिंह, प्रबंधक प्रभात शंकर व सहायक प्रबंधक राकेश कुमार सहित प्राधिकरण व कोतवाली पुलिस के साथ मौके पर पहुंच गये। करीब तीन घंटे की कार्रवाई कर जमीन खाली करा लिया। प्राधिकरण अवैध कब्जा करने वालों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की भी तैयारी कर रहा है। ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण के सीईओ नरेंद्र भूषण ने चेतावनी दी है कि प्राधिकरण की अधिसूचित एरिया में जमीन कब्जाने वालों को बख्शा नहीं जाएगा। उन्होंने हर वर्क सर्किल को अपने एरिया में जमीन पर अतिक्रमण रोकने के लिए कड़ी नजर रखने और अतिक्रमण की सूचना मिलते ही कार्रवाई करने के निर्देश दिए है।

नोएडा की सडको पर बढा सांडो का आतंक

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा । आजकल नोएडा की सडको पर साडो का आतंक बढ जाने से आम जनमानस का चलना दूभर हो गया है । सांडो का आतंक

अभी तक गांवो मे ही नजर आता था।लेकिन अब शहरों तक पसर गया है। जहा उत्तर प्रदेश विधान सभा चुनाव मे साडो को लेकर विपक्षियों ने मुद्दा बना रखा है और सभी रैलियों एवं जन सभाओं मे साड का मुद्दा अहम चल रहा है वही शासन प्रशासन आज भी इस समस्या से अनदेखी कर रहा है । आज भारतीय किसान यूनियन भानु के प्रदेश सचिव रवि राघव ने हमारे ब्यूरो प्रभारी देव मणि शुक्ल से एक मुलाकात में कहा कि आवारा पशु सड़कों पर खुलेआम घूम कर दुर्घटनाओं को आमंत्रण दे रहे हैं और खेतों में घुसकर किसानों की फसलों को नुकसान पहुंचा रहे हैं । जब प्रदेश सरकार ने सरकारी पैसे से गौशाला बना दी हैं तो यह आवारा पशु बाहर क्यों घूम रहे हैं । इस तरफ शासन प्रशासन का तनिक भी ध्यान नही है। जैसे सडकों पर आम जनमानस का रास्ता यह अवारा पशु रोक रहे है वैसे कही इस बार उत्तर प्रदेश की कुर्सी का रास्ता भी न रूक जाऐ। खैर देखते है आगे आगे होता है क्या

शहडोल जिले के अन्तर्गत तहसील ब्यौहारी में संत श्री रविदास जयंती समारोह आयोजित किया गया

(आधुनिक समाचार सेवा)
विकाश पटेल

शहडोल । संत शिरोमणि रविदास जी की जयंती जनपद पंचायत ब्योहारी में हर्ष एवं उल्लास के साथ मनाई गई इस कार्यक्रम में ओम प्रकाश सोनी जी, श्री श्याम पाल तिवारी जी,अनुविभागीय अधिकारी सुश्री ज्योति परस्ते जी, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद ब्योहारी श्री संजीव तिवारी जी,श्री प्ट् पेंड्रो जी,श्री आशीष साकेत

के मुख्य अतिथि माननीय विधायक श्री शरद कोल जी विशिष्ट अतिथि भाजपा अनुसूचित जाति के मोर्चा जिलाध्यक्ष श्री रामलखन खटीक जी श्री जय प्रकाश गुप्ता जी, श्री रमजान कादरी जी, जिला मंत्री पुष्पेंद्र पटेल, मंडल अध्यक्ष ब्योहारी श्री जी,समस्त जनमानस को उपस्थिति में संपन्न हुआ एवं स्वरोजगार योजना के तहत स्व सहायता समूह की मातृ शक्तियों को रोजगार के लिए चेक उपलब्ध कराए गए हैं महिला सशक्तिकरण पर माननीय मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी का हृदय से आभार धन्यवाद ।

व्यौहारी कांग्रेस पार्टी के नेता व कार्यकर्ताओं ने असम के मुख्यमंत्री हेमंतन विश्वा शर्मा के पुतला दहन किए

(आधुनिक समाचार सेवा)
दुर्गेश कुमार गुप्ता

शहडोल। पूर्व कांग्रेश के

राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गांधी जी को अपमानजनक शब्द बोलने के कारण आज युवक कांग्रेस के जिला महासचिव सतेन्द्र त्रिपाठी पिंटू के नेतृत्व में ब्लॉक कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष विनोद ताम्रकार के मार्गदर्शन में युवक कांग्रेस ने हेमंत विश्वा शर्मा का बाणसागर में पुतला दहन किया गया प्रमुख रूप से उपस्थित युवक कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष महेंद्र सिंह अमित जी नगर अध्यक्ष पुष्पेंद्र पटेल जिला महामंत्री युवक कांग्रेस विक्रम सिंह मुकेश तिवारी बबलू सिंह एल एम त्रिपाठी राजेंद्र सोनी मुनन सिंह शिवकुमार तिवारी सिद्धार्थ अग्निहोत्री सुभाष त्रिपाठी नागेंद्र पांडे प्रकाश सोनी संजय गुप्ता बाबू उरमालिया संदीप पटेल कमलेश पनिका समस्त कांग्रेस जन उपस्थित रहे।

(आधुनिक समाचार सेवा)
विकाश पटेल

शहडोल ।जिले के कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट श्रीमती वंदना वैद्य ने आज हर नगर की विभिन्न परीक्षा केंद्रों में आयोजित 10वीं बोर्ड परीक्षा का आकस्मिक निरीक्षण किया इस दौरान कलेक्टर ने परीक्षा व्यवस्था के संबंध में परीक्षा केंद्रों के प्राचार्यों से जानकारी प्राप्त की और सभी केन्द्राध्यक्षों के कह गया कि कोरोना गाइड लाइन कि पालन करने को कहा तथा दिशा-निर्देश प्रदान किया गया

शिवानी दांडेकर जो बनने जा रही हैं जावेद अख्तर की बहू, रिया चक्रवर्ती से है खास रिश्ता

नई दिल्ली। बॉलीवुड एक्टर फरहान अख्तर जल्द ही अपनी लॉन्गटाइम गर्लफ्रेंड शिबानी दांडेकर संग शादी के बंधन में बंधने वाले हैं। फरहान और शिवानी एक दूसरे को पिछले 3 सालों से डेट कर रहे

हैं। वहीं दोनों इसी महीने 21 फरवरी को कोर्ट मैरिज करने वाले हैं। दोनों की शादी की रस्में शुरू हो चुकी हैं। कल यानी 17 फरवरी को उनकी हल्दी की रस्म हुई जिसकी तस्वीरें और वीडियो सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हुईं हैं। हल्दी सेरेमनी में टीवी से लेकर बॉलीवुड तक के कई स्टार्स शामिल हुए थे। इनकी शादी फरहान के खंडाला वाले फार्महाउस में किया गया है। इस शादी में परिवार और करीबी दोस्त ही केवल शामिल रहेंगे। इसी बीच अब फैंस के मन ये बात आ रही होगी कि आखिर शिवानी दांडेकर कौन हैं और उनका वर्क प्रोफाइल क्या है अगर नहीं जानते हैं तो चलिए जानते हैं उनके बारे में फरहान अख्तर की होने वाली दुल्हन शिबानी दांडेकर पेशे से सिंगर, एक्ट्रेस और एंकर हैं। शिबानी ने अपने करियर की शुरुआत बतौर एंकर एक अमेरिकन टीवी से की थी। वहीं इंडिया आने के बाद शिबानी ने कई हिंदी शोज और इवेंट्स को होस्ट किया जिससे उन्हें काफी पॉपुलेटिरी मिली। लेकिन उन्हें सबसे ज्यादा पहचान साल 2019 आईसीसी क्रिकेट वर्ल्ड कप को-होस्ट करने के बाद हासिल हुई। शिबानी दांडेकर एक मराठी फैमिली से संबंध रखती हैं। वह फेमस वीजे और सिंगर अनुषा दांडेकर की सगी बहन हैं। वहीं शिबानी की एक और छोटी बहन है जिसका नाम अपेक्षा है। शिबानी ऑस्ट्रेलिया में पली बढ़ी हैं। साथ ही उनका बचपन अफ्रीका में बीता है। शिबानी के करियर की बात करें तो उन्होंने फिल्म 'रॉय' से डेब्यू किया था। इसके अलावा वह 'शानदार', 'सुल्तान', 'नूर' जैसी मूवीज में दिखीं। वहीं शिबानी कई टीवी शोज, रियलिटी शोज और वेब सीरीज में काम किया है। इसी के साथ ही उन्होंने मराठी मूवी 'टाइमपास' और 'संघर्ष' में कैमियो रोल में दिखी थीं। वहीं वह रिएलिटी शो 'झलक दिखला जा 5', 'खतरों के खिलाड़ी' बतौर कंटेस्टेंट नजर आईं थीं। उन्होंने वेब सीरीज 'फोर मॉर शॉट्स प्लीज 2 और 'होस्टेज 2' में काम किया है। शिबानी दांडेकर, रिया चक्रवर्ती को तब से जानती हैं जब रिया 16 साल की थीं। दोनों एक दूसरे को बेस्टफ्रेंड हैं। बॉलीवुड एक्टर सुशांत सिंह राजपूत के निधन के बाद जब हर कोई रिया के खिलाफ था उन्हें हर तरफ से ट्रोल किया जा रहा था वहीं उनकी दोस्त शिबानी दांडेकर लगातार उनके साथ खड़ी नजर आई थीं।

ऑनलाइन फ्रॉड का शिकार हुई सनी लियोनी, एक्ट्रेस के पैन काड का इस्तेमाल कर उठाया लोन

नई दिल्ली। एक्ट्रेस सनी लियोनी हमोशा अपने हॉट लुक्स को लेकर चर्चा में रहतीं हैं पर इस बार उनके खबरों में छाने की वजह कुछ और ही है। देश के बाकी करोड़ों लोगों की तरह सनी भी ऑनलाइन फ्रॉड का शिकार हुई हैं। एक्ट्रेस का दवा है कि उनके पैन कार्ड का इस्तेमाल करके लोन उठाया गया है। सनी लियोनी ने अपने ट्विटर अकाउंट पर एक पोस्ट किया था। इस पोस्ट में सनी लियोनी ने आरोप लगाया था कि उनके पैन कार्ड का इस्तेमाल कर धनी ऐप से लोन लिया गया है। इस लोन की रकम 2000 रुपए है। सनी लियोनी का आरोप था कि इस वजह से उनका सिबिल स्कोर कम हो गया है। इसके साथ ही सनी लियोनी ने धनी ऐप को मैनेज करने वाले इंडिया बुल्स होम लोन और इंडिया बुल्स सिक्योरिटीज को टैग भी किया। इसके साथ ही सनी लियोनी ने इंडियाबुल्स पर आरोप भी लगाया कि इस मामले में शिकायत करने के बावजूद उनकी मदद नहीं की जा रही है। हालांकि, कुछ देर बाद ही सनी लियोनी ने ये पोस्ट डिलीट भी कर दिया। इसके बाद सनी लियोनी का नया ट्वीट आया। इस बार उन्होंने इंडियाबुल्स को धन्यवाद कहा है। बता दें कि हाल ही में सनी लियोनी ने सोशल मीडिया पर एक वीडियो शेयर कर सनसनी मचा दी थी, जिसमें वह सिर से पैर तक खून से लथपथ दिखाई दीं। सनी का ये रूप देखने के बाद फैंस को उनकी सेहत की चिंता सताने लगी। फैंस जानना चाह रहे

थे कि आखिर माजरा क्या है। हसीन और क्यूट सनी के इस डरावने वीडियो को देख सोशल मीडिया यूजर्स ने सवाल पूछने शुरू कर दिए। एक्ट्रेस सनी लियोनी हमोशा अपने हॉट लुक्स को लेकर चर्चा में रहतीं हैं पर इस बार उनके खबरों में छाने की वजह कुछ और ही है। देश के बाकी करोड़ों लोगों की तरह सनी भी ऑनलाइन फ्रॉड का शिकार हुई हैं। एक्ट्रेस का दवा है कि उनके पैन कार्ड का इस्तेमाल करके लोन उठाया गया है। सनी लियोनी ने अपने ट्विटर अकाउंट पर एक पोस्ट किया था। इस पोस्ट में सनी लियोनी ने आरोप लगाया था कि उनके पैन कार्ड का इस्तेमाल कर धनी ऐप से लोन लिया गया है। इस लोन की रकम 2000 रुपए है। सनी लियोनी का आरोप था कि इस वजह से उनका सिबिल स्कोर कम हो गया है। इसके साथ ही सनी लियोनी ने धनी ऐप को मैनेज करने वाले इंडिया बुल्स होम लोन और इंडिया बुल्स सिक्योरिटीज को टैग भी किया। इसके साथ ही सनी लियोनी ने इंडियाबुल्स पर आरोप भी लगाया कि इस मामले में शिकायत करने के बावजूद उनकी मदद नहीं की जा रही है। हालांकि, कुछ देर बाद ही सनी लियोनी ने ये पोस्ट डिलीट भी कर दिया। इसके बाद सनी लियोनी का नया ट्वीट आया। इस बार उन्होंने इंडियाबुल्स को धन्यवाद कहा है। बता दें कि हाल ही में सनी लियोनी ने सोशल मीडिया पर कर सनसनी मचा दी थी, जिसमें वह सिर से पैर तक खून से लथपथ दिखाई दीं। सनी का ये रूप देखने के बाद फैंस को उनकी सेहत की चिंता सताने लगी। फैंस जानना चाह रहे थे कि आखिर माजरा क्या है।

राजकुमार राव और भूमि पेडनेकर की फिल्म ने छह दिनों में की इतनी कमाई

नई दिल्ली। कोरोना वायरस पैनडेमिक के चलते लगभग डेढ़ महीने के लम्बे ब्रेक के बाद एक बार फिर सिनेमाघरों में हलचल शुरू हो चुकी है और इसके साथ फिल्मों की रिलीज का सिलसिला भी। राजकुमार राव और भूमि पेडनेकर की फिल्म बधाई दो 11 फरवरी को सिनेमाघरों में रिलीज हुई थी।

हालांकि, फिल्म को अपेक्षित रिस्पॉन्स नहीं मिल सका। बधाई दो रिलीज के छह दिनों में लगभग 11 करोड़ का कलेक्शन कर चुकी है। दिसम्बर में कोरोना के मामले बढ़ने के बाद एहतियात के तौर पर विभिन्न राज्यों में नाइट कर्फ्यू और वीकेंड कर्फ्यू जैसी पाबंदियां लगा दी गयीं, जिसके तहत कुछ जगहों पर सिनेमाघर बंद कर दिये गये थे और जहां खुले थे, वहां 50 फीसदी क्षमता के साथ ही संचालित किये जा रहे थे। इस वजह से जनवरी में फिल्मों की रिलीज स्थगित कर दी गयीं। सिनेमाघरों में आखिरी रिलीज फिल्म रणवीर सिंह की 83 है, जो 24 दिसम्बर को आयी थी। पाबंदियां हटने के बाद सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली बधाई दो पहली फिल्म बनी, जो 11 फरवरी को आयी। फिल्म ने 1.65 करोड़ की ओपनिंग ली, वहीं पहले शनिवार को 2.72 करोड़ का कलेक्शन किया, जबकि रविवार को 3.45 करोड़ जुटाने में कामयाब रही। बधाई दो ने ओपनिंग वीकेंड में 7.82 करोड़ का कलेक्शन किया। इसके बाद सोमवार से वर्किंग वीक शुरू होने के बाद फिल्म के कलेक्शंस में गिरावट दर्ज की गयी। हालांकि, फिल्म ने अब तक हर दिन कम से कम एक करोड़ का कलेक्शन किया है। पहले सोमवार को फिल्म ने 1.85 करोड़, मंगलवार को 1.12 करोड़ और बुधवार को एक करोड़ जमा किये। इसके साथ फिल्म का 6 दिनों का नेट कलेक्शन 11.79 करोड़ हो चुका है। हर्षवर्धन कुलकर्णी उन फिल्मों की सीरीज को आगे बढ़ाती है, जिनमें समाज और लोगों से जुड़े किसी वर्जित मुद्दे को उठाया जाता है। इस फिल्म का निर्माण जंगली पिक्चर्स ने किया है, जिनकी बधाई हो बेहद सफल रही थी और फिल्म को काफी तारीफें मिली थीं।

शमा सिकंदर जल्द ही बनेंगी दुल्हन अगले महीने अपने अमेरिकन बॉयफ्रेंड संग करेंगी व्हाइट वेडिंग

नई दिल्ली। बॉलीवुड और टीवी इंडस्ट्री में शादी का सीजन शुरू हो गया है। साल 2022 की शुरुआत ही कई बड़े सितारों की शादी के साथ हुई। इस साल जनवरी में जहां टीवी की नागिन मौनी रॉय और करिश्मा तनन शादी के बंधन में बंधी, तो वही अब जल्द ही फरहान अख्तर और शिबानी दांडेकर शादी के बंधन में बंधने

वाले हैं। इन दोनों के अलावा टीवी और बॉलीवुड में अपने अभिनय से सबका दिल जीतने वाले विक्रांत मैसी भी अपनी गर्लफ्रेंड शीतल ठाकुर के साथ इसी हफ्ते ट्रेडिशनल वेडिंग करेंगे। अब इस लिस्ट में एक और अभिनेत्री का नाम शामिल हो चुका है और वह नाम है शमा सिकंदर। अभिनेत्री शमा सिकंदर जल्द ही अपने बॉयफ्रेंड जेम्स मिलिरोन के साथ शादी के बंधन में बंधेंगी और इस बात का खुलासा खुद शमा सिकंदर ने अपने एक इंटरव्यू के दौरान किया। शमा ने एक मीडिया चैनल से बातचीत करते हुए अपने वेडिंग प्लान्स के बारे में बताया और साथ ही कहा कि वह अगले महीने यानी कि मार्च में अपने अमेरिकन बॉयफ्रेंड जेम्स के साथ गोवा में व्हाइट वेडिंग करेंगी। इंटरव्यू के दौरान शमा ने ये भी बताया कि उनका वेडिंग फंक्शन दो दिनों तक चलने वाला है। शमा और जेम्स की शादी काफी निजी होने वाली है, जिसमें केवल उनके परिवार के लोग और करीबी दोस्त ही शामिल होंगे। रिपोर्ट्स की माने तो शमा अपने बॉयफ्रेंड के साथ तुर्की में शादी करने वाले थीं, लेकिन कोरोना की महामारी की वजह से उन्हें अपनी शादी की डेट आगे बढ़ानी पड़ी। शमा सिकंदर और जेम्स अगले महीने 14 मार्च को शादी के बंधन में बंधेंगी। टाइम्स ऑफ इंडिया को दिए गए इंटरव्यू में शमा ने अपनी शादी के सभी प्लान्स शेयर किए। उन्होंने कहा, 'जेम्स और मैंने इस दिन के लिए दो साल तक इन्तजार किया है। हमारी शादी में अधिकतर इंटरनेशल मेहमान होंगे, क्योंकि हमारा अधिकतर परिवार अब्रॉड में सेटल है।

'डांस इंडिया डांस लिटिल मास्टर 5' का प्रोमो आया सामने, मौनी रॉय के साथ बॉलीवुड की ये अभिनेत्री होंगी जज

नई दिल्ली। टीवी का लोकप्रिय रिएलिटी शो 'डांस इंडिया डांस लिटिल मास्टर' का नया सीजन जल्द ही छोटे पर्दे पर शुरू होने वाला है और इसी के साथ दर्शकों को देश के आसाधरण नन्हें कलाकार देखने को मिलेंगे। शो के

मेकर्स ने नए सीजन का प्रोमो जारी करते हुए शो के जजेस और होस्ट के नाम का खुलासा कर दिया है। इस बार शो को अभिनेत्री मौनी रॉय, सोनाली बेंद्रे और कोरियोग्राफर रेमो डिसूजा जज करेंगे, तो वहीं जय भानुशाली होस्ट करने वाले हैं। 'डांस इंडिया डांस लिटिल मास्टर 5' के प्रोमो ने फैंस का उत्साह बढ़ा दिया है। प्रोमो में मौनी रॉय, सोनाली बेंद्रे और रेमो डिसूजा शो के टाइटल ट्रैक पर डांस करते हुए नजर आ रहे हैं। वहीं जय भानुशाली, जो हाल ही में बिग बॉस 15 में नजर आए थे, वह भी उनके साथ ताल से ताल मिलाते दिख रहे हैं। क्लिप में मौनी ने सिल्वर सिक्विन साड़ी पहन रखी हैं। सोनाली पिंक कलर की ड्रेस में मैचिंग ओवरकोट व रेमो ब्लैक टीशर्ट ट्राउजर और जैकेट में अपने स्टाइल से तड़का लगाते नजर आ रहे हैं। हाल ही में शादी के बंधन में बंधी मौनी रॉय शो को लेकर काफी उत्साहित है, बतौर जज ये उनका पहला रिएलटी शो होने वाला है। मेकर्स के अलावा एक्ट्रेस ने भी अपने ऑफिशियल इंस्टाग्राम पर शो के प्रोमो को शेयर किया है और कैप्शन में लिखा, 'इस पैनल और इस शो का हिस्सा बनकर रोमांचित और सम्मानित महसूस कर रही हूं जो मुझे हमेशा से बहुत पसंद आया है। इस नई यात्रा की शुरुआत में आपके प्यार और आशीर्वाद की जरूरत हैष्ठहरिओम।' शो को जज करने के साथ ही मौनी पांच सालो के बाद छोटे पर्दे पर वापसी कर रही हैं। आखिरी बार वह एकता कपूर के शो नागिन में बतौर लीड नजर आई थीं। मौनी जल्द ही निर्देशक आयान मुखर्जी की फिल्म 'ब्रह्मास्त्र' में भी नजर आयेंगी। फिल्म में उनके साथ अमिताभ बच्चन, आलिया भट्ट और रणबीर कपूर होंगे। इससे पहले मौनी 'गोल्ड' और 'मेड इन चाइना' जैसी फिल्मों में काम कर चुकी है।एक्ट्रेस सोनाली ब्रेंद्रे की बात करें तो कैंसर से रिकवरी के बाद यह उनका पहला प्रोजेक्ट है। सोनाली छह साल बाद टीवी पर वापसी कर रही हैं। शो इंडियाज बेस्ट ड्रामेबाज को भी जज कर चुकी हैं। आखिरी बार वह फिल्म 'वन्स अपॉन ए टाइम इन मुंबई दोबारा' और इसके बाद फिल्म 'विश्राम' में नजर आईं थीं। यह शो 12 मार्च से हर शनिवार और रविवार रात 9 बजे जी टीवी पर प्रसारित होगा।

श्रीदेवी की बेटी जाह्नवी कपूर की बेडरूम की तस्वीरें हुई वायरल

नई दिल्ली। बॉलीवुड एक्ट्रेस जाह्नवी कपूर इनदिनों अपने हॉट फोटोशूट को लेकर काफी चर्चा में बनीं हुई हैं। आए दिन जाह्नवी सोशल मीडियास पर अपनी हॉट एंड बोल्ड तस्वीरें शेयर करती नजर आ रही हैं। एक्टिंग के साथ वह

सोशल प्लेटफॉर्म पर भी काफी एक्टिव हैं। वहीं उनकी फैन फॉलोइंग भी काफी जबदस्त है। इसी बीच जाह्नवी ने अपनी कुछ बेहद सेंसेशन तस्वीरें शेयर कर हर फैंस के होश उड़ा दिए हैं। इन तस्वीरों ने इंटरनेट पर आग लगा दी है। यहां देखें तस्वीर जाह्नवी कपूर ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर अपनी लेटेस्ट तस्वीरें शेयर की हैं जो उनकी बेडरूम फोटोज हैं। इन तस्वीरों में बेड पर बेहद ही बोल्ड पोज देती दिख रही हैं। तस्वीरों से फैंस का एक्ट्रेस पर से अपनी नजरें हटापाना मुश्किल हो रहा है। फोटोज में आप देख सकते हैं कि जाह्नवी कपूर बेडरूम में लेटी हुई हैं। इस दौरान उन्होंने सफेद रंग की ब्रालेट पहनी हुई है। इस ड्रेस को पहन जाह्नवी किलर पोज देती नजर आ रही हैं। तस्वीर में आप देख सकते हैं कि जाह्नवी की ड्रेस के साथ बेड की चादर और पीछे का ब्रैकग्राउंड सब कुछ सफेद रंग का है। जाह्नवी की हर अदा फैंस पर कहर ढा रही है। इन तस्वीरों को शेयर करते हुए जाह्नवी कपूर ने कैप्शन में लिखा- 'आपको कल फोन करती हूं।' हमेशा की तरह ही फैंस एक्ट्रेस की इन फोटोज को भी काफी पसंद कर रहे हैं। वहीं इस पर कमेंट कर उनकी जमकर तारीफ भी कर रहे हैं। जाह्नवी कपूर के वर्कफ्रेंट की बात करें तो उन्होंने फिल्म 'धड़क' से बॉलीवुड में डेब्यू किया था। इस फिल्म में उनके अपोजिट एक्टर शाहिद कपूर के भाई ईशान खट्टर लीड रोल में नजर आए थे। वहीं जाह्नवी की आखिरी रिलीज फिल्म 'रूही' है, जो 2021 में सिनेमाघरों में रिलीज हुई थी। इस हॉरर-कॉमेडी फिल्म में जाह्नवी ने राजकुमार राव के अपोजिट फीमेल लीड रोल निभाया था। जाह्नवी अब 'गुड लक जेरी' में नजर आएंगी, जिसकी शूटिंग वो पूरी कर चुकी हैं। 'घोस्ट स्टोरीज' में भी काम किया। साल 2020 में उनकी दूसरी फिल्म गुंजन सक्सेना- द कारगिल गर्ल नेटफ्लिक्स पर आयी थी।

अक्षय कुमार फिर से बने बैड बॉय, 'बच्चन पांडे' के ट्रेलर में दिखा दमदार एक्शन

नई दिल्ली। बॉलीवुड की हिट मशीन माने जाने वाले अभिनेता अक्षय कुमार अपने दर्शकों का मनोरंजन करने में कोई कसर नहीं छोड़ते। रोहित शेट्टी की फिल्म सूर्यवंशी में पुलिस अधिकारी का किरदार निभाने के बाद अब अक्षय कुमार जल्द ही गैंगस्टर बने नजर

आएंगे। उनकी आगामी फिल्म 'बच्चन पांडे' का एक के बाद एक पोस्टर आने के बाद अब फिल्म का ट्रेलर दर्शकों के सामने आ चुका है। एक लम्बे समय के बाद अक्षय कुमार सिर्फ गैंगस्टर के अवतार में ही नहीं, बल्कि एक अलग ही लुक में दर्शकों का दिल जीतने आ रहे हैं। बच्चन पांडे का 3 मिनट 41 सेकंड का ये ट्रेलर दर्शकों को खुद से जोड़े रखता है। अक्षय कुमार की इस फिल्म का ट्रेलर जबरदस्त एक्शन से भरपूर है। ट्रेलर की शुरुआत होती है कृति सेनन और अरशद वारसी से। कृति सेनन फिल्म में एक निर्देशक की भूमिका में नजर आ रही हैं और सबसे बड़े गैंगस्टर बच्चन पांडे पर फिल्म बनाने की इच्छा जाहिर करती हैं। फिल्मों में हीरो बनने के कोशिश में लगे अरशद वारसी कृति सेनन को बच्चन पांडे उर्फ अक्षय से मिलवाते हैं और इस बीच अक्षय कुमार अपनी जिंदगी की स्टोरी उन्हें बताते हैं। इस पूरे ट्रेलर में अक्षय मारधाड़ के साथ-साथ लोगों को अपने एक्शन से हैरान करते हुए नजर आ रहे हैं। वह फिल्म में एक ऐसे गैंगस्टर का किरदार निभा रहे हैं, जो किसी पर भी दया नहीं करता। कृति सेनन के अलावा जैकलीन फर्नांडिस भी फिल्म में अहम भूमिका में हैं। वह अक्षय कुमार की गर्लफ्रेंड सोफिया का किरदार निभा रही हैं। इस ट्रेलर में दिखाया गया कि बच्चन पांडे बने अक्षय कुमार अपने मजे के लिए लोगों को मारते हैं। बीच-बीच में अक्षय कुमार अपने डायलॉग्स और दमदार एक्शन के साथ-साथ कॉमेडी का तड़का लगाते हुए नजर आ रहे हैं। इस ट्रेलर को शेयर करते हुए अक्षय कुमार ने कैप्शन में लिखा, 'धूम धड़ाका रंग पटाखा आओ बना लो टोली, इस बार बच्चन पांडे ला रहे हैं, होली पे गोली'। बच्चन पांडे एक एक्शन कॉमेडी है और ट्रेलर के बाद हर कोई निश्चित रूप से इस फिल्म को देखने के लिए काफी उत्सुक है। ट्रेलर से पहले इस फिल्म से अक्षय कुमार, कृति सेनन और जैकलीन फर्नांडिस तीनों का लुक सामने आ चुका है। ट्रेलर से कुछ समय पहले ही जैकलीन के लुक से भी पर्दा उठाया गया। जैकलीन का पोस्टर अक्षय कुमार ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर शेयर किया। इस पोस्टर में जैकलीन फर्नांडिस और अक्षय कुमार एक नारियल पानी पीते और स्ट्रॉ शेयर करते हुए नजर आ रहे हैं। जैकलीन फर्नांडिस के इस लुक को शेयर करते हुए अक्षय कुमार ने कैप्शन में लिखा, 'दो अलग लोग, एक जमीन तो दूसरा आसमान, जब ये एक हो जाए तो क्या होगा'। अक्षय कुमार की मोस्ट अवेटेड फिल्म 'बच्चन पांडे' 18 मार्च को सिनेमाघरों में रिलीज हो रही है। अक्षय कुमार, कृति सेनन और जैकलीन फर्नांडिस के अलावा अरशद वारसी, पंकज त्रिपाठी, संजय मिश्रा, अभिमन्यु सिंह महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए नजर आएंगे।

वेब सीरीज 'ब्लडी ब्रदर्स' में दिखेगी जयदीप जीशान की जोड़ी

नई दिल्ली। जी5 के साथ मल्टी शो पार्टनरशिप के तहत अप्लॉज एंटरटेनमेंट ने अब एक नये शो का एलान किया है। ब्लडी ब्रदर्स शीर्षक से बन रहे इस शो में जयदीप अहलावत और मोहम्मद जीशान अय्यूब एक साथ आ रहे

है। कौन बनेगी शिखरवती और मिथ्या जैसे शोज के बाद जी5 पर अप्लॉज एंटरटेनमेंट का यह तीसरा शो है। शो का निर्देशन शाद अली कर रहे हैं। आइए आपको बताते हैं, ब्लडी ब्रदर्स में क्या है खास ब्लडी ब्रदर्स की कहानी को भाइयों जग्गी और दलजीत के इर्द-गिर्द घूमती है। जग्गी अमीर है और अपनी जिंदगी का भरपूर मजा ले रहा है, वहीं छोटा भाई दलजीत पुरानी किताबों की दुकान चलाता है और संघर्ष कर रहा है। उसकी पहले से ही घिसटती जिंदगी ` जाती है, जब एक हादसा होता है। ब्लडी ब्रदर्स में टीना देसाई, श्रुति सेठ, माया अलग, मुग्धा गोडसे, सतीश कौशिक और जितेंद्र जोशी जैसे शानदार कलाकार विभिन्न भूमिकाओं में नजर आएंगे। जयदीप अहलावत इससे पहले बार्ड ऑफ ब्लड और पाताल लोक में नजर आ चुके हैं। पाताल लोक वेब सीरीज में उन्होंने हाथीराम चौधरी नाम के पुलिस अफसर का किरदार निभाया था, जो एक हाई प्रोफाइल केस की जांच करता है। वहीं, जीशान अय्यूब के नाम तांडव और रंगबाज जैसी वेब सीरीज है। तांडव में मुख्य किरदार सैफ अली खान ने निभाया था, जबकि जीशान एक छात्र नेता के किरदार में थे। ब्लडी ब्रदर्स, ब्रिटिश मिस्ट्री थ्रिलर 'गिल्ट' का भारतीय रूपांतरण है। गिल्ट के पहले सीजन का प्रसारण 2019 में बीबीसी 2 पर हुआ था, जबकि दूसरा सीजन 2021 में रिलीज किया गया था। इस शो में भाइयों के किरदार मार्क बोनर और जैमी साइवेस ने निभायी थी। यह शो काफी सफल रहा था और दुनिया के कई देशों में इसे देखा गया था।

दीपिका पादुकोण और अनन्या पांडे बनीं जलपरी, बिकिनी पहन पानी के अंदर कराया बोल्ड फोटोशूट

नई दिल्ली। दीपिका पादुकोण और अनन्या पांडे की फिल्म 'गहराइयां' को फैंस के मिक्सड रिएक्शन मिले हैं। ओटीटी पर रिलीज हुई इस फिल्म से उम्मीदें तो काफी थीं, पर कुछ लोगों की इसकी स्टोरी और बोल्ड सींस कुछ खास पसंद नहीं आए। पर इन सबसे बेखबर ये दोनों एक्ट्रेस अपनी ही दुनिया में मस्त हैं। हाल ही में दीपिका और अनन्या ने गहराइयों में जाकर बिकिनी फोटोशूट कराया। फिल्म की थीम को मैच करती ये

बिकिनी बेब्स पानी में अपनी हॉटनेस से आग लगा रहीं हैं। दीपिका ने जहां ऑरेंज कलर की मोनोकिनी पहनी है तो वहीं अनन्या ने व्हाइट बिकिनी में बीच बेब्स बनीं हुई हैं। दीपिका पादुकोण ने अपने ऑफिशियल इंस्टाग्राम अकाउंट पर कुछ तस्वीरें शेयर की हैं। इन तस्वीरों में दीपिका पानी के अंदर से कैमरे के लिए पोज दे रही हैं। पहली तस्वीर में दीपिका खुद को समेटते हुए नजर आ रहीं हैं। तो वहीं दूसरी तस्वीर में दीपिका पानी में ही बैठे हुए पोज दे रही हैं। इन तस्वीरें में जो सबसे खास बात है वो ये कि दीपिका के फेस पर कोई एक्सप्रेशन नहीं है। वो बेहद ही शांत भाव से पोज दे रहीं हैं। गहराइयां का प्रमोशन अभी थमा नहीं है। फिल्म में अपने हुसन का जलवा बिखेरने के बाद अनन्या पांडे अब जलपरी बन गई हैं। अनन्या ने अपने लेटेस्ट फोटोशूट में खुद को जलपरी ही बताया है। व्हाइट बिकिनी और मैचिंग श्रग के साथ वो पानी के अंदर बोल्ड पोज देती नजर आ रही हैं। फिल्म में काफी इंटिमेट सीन देने वाली अनन्या के काम की भी काफी चर्चा हो रही है। सोशल मीडिया पर इन्हें लेकर काफी मीम्स बन रहे हैं। इन तस्वीरों पर फैंस के अलावा बॉलीवुड सितारे भी जमकर रिएक्शन दे रहे हैं। मलाइका अरोड़ा ने हार्ट वाला इमोजी शेयर करते हुए कमेंट किया- 'ब्यूटी।' वहीं शाहरुख खान की बेटी सुहाना खान ने लिखा- 'हम लोग कल।' सितारों के अलावा फैंस ने भी अपने फेवरेट स्टार्स की तस्वीरों पर जमकर प्यार लुटाया।

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक
डा0 दीपक अरोरा द्वारा
रामा प्रिन्टर्स 53/25/1 ए
बेली रोड न्यू कटरा प्रयागराज
(उ.प्र.) 211002 से मुद्रित
एवं सी-41 यूपी एसआईडीसी
औद्योगिक क्षेत्र नैनी प्रयागराज।
(उ.प्र.) 211010 से प्रकाशित।
सम्पादक/प्रकाशक
डा0 पुनीत अरोरा
मो0न0 09415608710
RNI No. UPHIN/2015/63398
website:www.adhuniksamachar.com

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होंगे।